3 राजधानी
प्रदूषण मिटाने को पड़ोसी राज्यों से मिलकर काम करना जरूरी

6 अभिमत
पर्यटन और पर्यावरण में संतुलन

11 विदेश
इजराइल ने गाजा में छह बंधकों के शव बरामद किए

12 स्पोर्ट्स
सुकांत को हराकर सुहास एलवाई फाइनल में

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 291
नई दिल्ली, सोमवार, 2 सितंबर, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

अदालतों में लंबित मामले हम सभी के लिए बड़ी चुनौती

राष्ट्रीय-9

न्याय के लिए हस्तियों ने किया मार्च

कोलकाता रेप व हत्या मामला

कोलकाता में रविवार को आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में रेजीडेंट डॉक्टर के बलात्कार व हत्या मामले में पीड़िता के लिए न्याय की मांग करते हुए काली पोशाक पहने रामकृष्ण मिशन के पूर्व छात्र शंख बजाते हुए।

सौगर सेनगुप्ता। कोलकाता

आरजी कर मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर के लिए न्याय की मांग कर रही सिने हस्तियों एवं अन्य मशहूर हस्तियों के विशाल जुलूस में भाग ले रहीं एक प्रसिद्ध बंगाली टेलीविजन की अभिनेत्री ने कहा कि 'आम आदमी की ताकत को कम मत आंको'। उन्होंने यह डॉयलाग एक दशक पुरानी बॉलीवुड फिल्म का दोहराते हुए कहा कि यह सामूहिक आवाज पीड़िता को न्याय दिलाने के लिए है। ज्ञात रहे कि तीन सप्ताह से अधिक समय पहले ड्यूटी पर तैनात रेजीडेंट डॉक्टर की बलात्कार के बाद हत्या कर दी गई थी।

यह सच है कि कोलकाता ने 1970 के दशक से खुशियों का शहर कहा जाने वाला कोलकाता आज एक बार फिर रैलियों के शहर में बदल गया। यह रैली और विरोध-प्रदर्शन लंबा खींचने के साथ अपना दायरा भी व्यापक हो गया है, क्योंकि पीड़िता डॉक्टर के लिए 'न्याय की मांग' जंगल की आग की तरह पूरे देश फैल गई और मशहूर हस्तियों से लेकर छात्रों, दिग्गजों से लेकर दुकानदारों तक सभी क्षेत्रों के लोगों इसके लिए खुलकर आगे आ रहे हैं। यह तब है जब राज्य के विभिन्न हिस्सों से अस्पतालों सहित बलात्कार और छेड़छाड़ की खबरें आ रही हैं। अभया (पीड़िता को इसी नाम से संबोधित किया जा रहा) समेत इस तरह के उत्पीड़न और व्यवस्था की शिकार लोगों के पक्ष में रविवार को कोलकाता में आयोजित विशाल रैली में पांच हजार से अधिक फिल्मी हस्तियों ने, जिनमें सभी क्षेत्रों की महिलाएं और पुरुष शामिल थे, कॉलेज स्क्वायर से एस्प्लेनेड तक तीन किलोमीटर से अधिक की दूरी तक पैदल चलकर न्याय की मांग की। एक प्रसिद्ध पुरस्कार विजेता बंगाली अभिनेत्री ने कहा, जो लोग दोषियों को बचाने और उस व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं जो सभी मेडिकल कॉलेजों और शैक्षणिक संस्थानों को सड़ा रही है, उन्होंने सोचा था कि समय के साथ लोगों की रुचि खत्म हो जाने के बाद चीजें अपने आप शांत हो जाएंगी, लेकिन अब उन्हें यह एहसास होने लगा है कि इस बार जनता नरम पड़ने वाली नहीं है, क्योंकि यह कोई राजनीतिक आंदोलन नहीं है, यह सड़कों पर उतरे लोगों का आंदोलन है, अब बहुत हो गया, हम न केवल पीड़िता के लिए बल्कि पूरे समाज और पूरी महिला समुदाय के लिए न्याय चाहते हैं। सिंगूर और नंदीग्राम आंदोलनों के दौरान नियमित रूप से सड़कों पर उतरने वालीं निर्देशक और अभिनेत्री अपर्णा सेन ने भी रैली में शामिल होकर पूछा, महिलाओं को कब तक भोग की वस्तु के रूप में देखा जाता रहेगा, क्यों सत्ताधारी हमेशा महिलाओं के खिलाफ अपराध को दबाने की कोशिश करते हैं, यह नहीं चल सकता, हमें न केवल न्याय चाहिए, बल्कि जवाब भी चाहिए।

दक्षिण कोलकाता में प्रतिष्ठित रामकृष्ण मिशन स्कूल समूह के तीन हजार पूर्व छात्रों की एक रैली ने रामकृष्ण परमहंस माता शारदा देवी और स्वामी (शेष पृष्ठ 9)

जद (यू) नेता केसी त्यागी ने पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता पद से दिया इस्तीफा

राजेश कुमार। नई दिल्ली

बिहार में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। लेकिन इससे जनता दल (यूनाइटेड) के वरिष्ठ नेता केसी त्यागी ने रविवार को पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता पद से इस्तीफा दे दिया है। उनकी जगह राजीव रंजन प्रसाद को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। जद (यू) ने आधिकारिक बयान में कहा त्यागी ने निजी कारणों से राष्ट्रीय प्रवक्ता के पद से इस्तीफा दे दिया है। हालांकि, पार्टी सूत्रों का कहना है कि केंद्र सरकार की नीतियों पर अक्सर की जाने वाली त्यागी की टिप्पणियां जद(यू) और उसकी सहयोगी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के संबंधों में असहजता का कारण बन रही थीं। त्यागी दिल्ली में रहते हैं और अपने अनुभव तथा अभिव्यक्ति के कारण राष्ट्रीय मीडिया में विशेष पहचान रखते हैं। सूत्रों ने बताया कि चाहे समान नागरिक संहिता हो, वक्फ (संशोधन) विधेयक हो या फिलिस्तीन के मुद्दे पर सरकार का रुख या फिर अन्य मुद्दे हों, समाजवादी नेता त्यागी का मुखर रुख पार्टी के भीतर के कई नेताओं को रास नहीं आया और इन वजहों से भाजपा को भी असहज स्थिति का सामना करना पड़ा। जद(यू) सूत्रों का कहना है कि पार्टी चाहती है कि केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह ऊर्फ ललन सिंह और पार्टी संसदीय दल के नेता व (शेष पृष्ठ 9)

मॉलीवुड में मी टू पर ममूटी ने तोड़ी चुप्पी

पायनियर समाचार सेवा। कोच्चि

मलयालम फिल्म उद्योग में इस समय हड़कंप मचा है। यहां के फिल्म उद्योग में यौन उत्पीड़न के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। ऐसे में मशहूर अभिनेता ममूटी ने चुप्पी तोड़ी है। उन्होंने रविवार को कहा सिनेमा में कोई पावर सेंटर नहीं है। इस क्षेत्र में काम करने वाले सभी लोगों से सतर्क रहने का अनुरोध किया ताकि कोई अप्रिय घटना नहीं हो।

दिग्गज अभिनेता ने फेसबुक पर अपनी राय व्यक्त करते रिपोर्ट का स्वागत किया और इंडस्ट्री को काम करने की एक बेहतर जगह बनाने के लिए हो रहे बदलावों का समर्थन किया। साथ ही कहा कि वह समिति की रिपोर्ट में दी गई सिफारिशों और समाधानों का तहे दिल से स्वागत और समर्थन करते हैं और फिल्म उद्योग के सभी संगठनों से उन्हें लागू करने में हाथ मिलाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि पुलिस कई महिलाओं द्वारा उठाई गई यौन उत्पीड़न और दुर्व्यवहार की शिकायतों की सख्ती से जांच कर रही है, इसलिए एजेंसी को अपनी जांच ईमानदारी से जारी रखनी चाहिए। अभिनेता ने यह भी कहा कि चूंकि समिति की पूरी रिपोर्ट अदालत के समक्ष है, इसलिए वह सजा तय कर सकती है। ममूटी ने सोशल मीडिया पर कहा कि उनकी प्रतिक्रिया में देरी हुई क्योंकि वह अभिनेताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठन और उसके नेतृत्व की समिति की रिपोर्ट पर पहले प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहे थे। सिनेमा समाज का प्रतिबिंब है और आम जनता के बीच मौजूद अच्छाई और बुराई फिल्मों में भी है। उन्होंने यह भी कहा कि चूंकि समाज फिल्म उद्योग पर पूरा ध्यान देता है, इसलिए वहां होने वाली कोई भी घटना चर्चा का प्रमुख मुद्दा बन जाता है। इसलिए, फिल्म उद्योग में काम करने वालों को सावधान और सतर्क रहने की जरूरत है ताकि इस क्षेत्र में कुछ भी अप्रिय न हो। सिनेमा को जीवित रहना चाहिए। उनकी प्रतिक्रिया फिल्म उद्योग में उनके सहयोगी अभिनेता मोहनलाल द्वारा समिति की रिपोर्ट में चौंकाने वाले खुलासे पर अपनी चुप्पी तोड़ने के एक दिन बाद आई है। मोहनलाल ने भी उद्योग में एक शक्तिशाली समूह के अस्तित्व से इनकार किया था और कहा था कि सिनेमा समाज का एक हिस्सा है और जो कुछ भी हर जगह होता है, वह फिल्म जगत में भी हो रहा है। उन्होंने भी पैनल की रिपोर्ट का स्वागत किया था और कहा था (शेष पृष्ठ 9)

हसीना के हटने के बाद बांग्लादेश में 49 अल्पसंख्यक शिक्षकों को इस्तीफा देने के लिए किया मजबूर

एजेंसी। ढाका

बांग्लादेश में अगस्त का महीना काफी ज्यादा सियासी उथल पुथल वाला रहा। ढाका समेत दूसरे शहरों में विरोध प्रदर्शन और हिंसा के बाद शेख हसीना को पद छोड़ना पड़ा था। 5 अगस्त को शेख हसीना प्रधानमंत्री पद और देश छोड़कर भारत आ गईं थीं। इसके बाद देश में हिंदुओं के खिलाफ हिंसा देखने को मिली। वहीं पांच अगस्त को शेख हसीना की सरकार के गिरने के बाद से अब तक हिंसा प्रभावित देश में अल्पसंख्यक समुदायों के कम से कम 49 शिक्षकों को इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया गया। अल्पसंख्यकों के एक संगठन ने यह जानकारी दी।

समाचार पत्र द डेली स्टार की खबर के अनुसार, बांग्लादेश हिंदू बौद्ध ईसाई ओइक्या परिषद की छात्र शाखा बांग्लादेश छात्र ओइक्या परिषद ने शनिवार को मीडिया से बातचीत में यह बात कही। संगठन के समन्वयक साजिब सरकार ने कहा कि 76 वर्षीय प्रधानमंत्री हसीना के पद से हटने और उनके देश से जाने के बाद कई दिन तक जारी रही हिंसा में देश भर में अल्पसंख्यक शिक्षकों के साथ मारपीट की घटनाएं हुईं और उनमें से कम से कम 49 को इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

रिपोर्ट में साजिब के हवाले से कहा गया कि बाद में उनमें से 19 को बहाल कर दिया गया। सरकार ने कहा कि इस अवधि के दौरान धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यकों को हमलों, लूटपाट, महिलाओं पर हमले, मंदिरों में तोड़फोड़, घरों और व्यवसायों पर आगजनी और हत्याओं जैसी घटनाओं का भी सामना करना पड़ा। बांग्लादेश हिंदू बौद्ध ईसाई एकता परिषद और बांग्लादेश पूजा उद्जापन परिषद की ओर से संकलित आंकड़ों के अनुसार, हसीना के नेतृत्व वाली सरकार के पतन के बाद से 52 जिलों में अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों पर हमले की कम से कम 205 घटनाएं हुईं।

बांग्लादेश में अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस ने शपथ लेने के बाद हिंदुओं के खिलाफ हिंसा को रोकने की अपील की थी। उन्होंने कहा था कि वे देश में संविधान को बनाए रखेंगे। मगर इसका असर होता नहीं दिख रहा है।

भाजपा ने आप पार्षद के अपहरण के आरोप को नकारा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी ने रविवार को भारतीय जनता पार्टी पर उसके पार्षद रामचंद्र को अगवा करने का आरोप लगाया। इस बीच अगवा सदस्य अपने घर लौट आए हैं। वहीं, भाजपा ने आरोप से इनकार किया है।

घर लौटने पर रामचंद्र ने दावा किया कि भाजपा ने उन्हें ईडी-सीबीआई के मामलों में फंसाने की धमकी दी। इस बीच प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने दिल्ली पुलिस से आम आदमी पार्टी द्वारा जारी वीडियों की जांच करने और दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है। साथ ही कहा कि आप नेताओं द्वारा पार्षद को लेकर लगाया गया आरोप झूठा और निराधार है। आप के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि भाजपा के लोगों ने आप पार्षद रामचंद्र को अगवा किया और दबाव पड़ने पर छोड़ दिया। वार्ड संख्या-28 के पार्षद रामचंद्र उन पांच पार्षदों में से एक थे जो गत रविवार को भाजपा में शामिल हो गए थे। हालांकि, कुछ ही दिन बाद वह आप में लौट आए। उन्होंने दावा किया था कि उनके सपने में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल आए थे जिसके बाद उनका मन (शेष पृष्ठ 9)

आंध्र में बारिश का कहर 17 हजार लोगों को निकाला

विजयवाड़ा में बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का दौरा करते आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू अन्य लोगों के साथ।

एजेंसी। अमरावती (आंध्र प्रदेश)

आंध्र प्रदेश में पिछले दो दिन में हुई अभूतपूर्व बारिश के कारण कई स्थानों, विशेषकर विजयवाड़ा और आसपास के इलाकों में जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है और पूरे राज्य में बारिश से प्रभावित 17,000 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। विजयवाड़ा के बाहरी इलाके में स्थित बुडामेरु नामक छोटी नदी के तटबंध में रविवार को दरार आ गई और कई स्थानों पर यह ऊपर से बहने लगी, जिससे शहर के कई इलाकों, जैसे अजीत सिंह नगर, स्वाति थिएटर क्षेत्र, पुलिस नगर क्षेत्र और पश्चिम व मध्य निर्वाचन क्षेत्र जलमग्न हो गए। बाढ़ के कारण इन क्षेत्रों और विजयवाड़ा में कई कारें और वाहन डूबते हुए देखे गए हैं। शहर के राजराजेश्वरी पेटा में लोगों को जलमग्न सड़क पर छाती तक गहरे पानी से गुजरते देखा गया। ताडेपल्ली में आंध्र प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एपीएसडीएमए) में मीडिया से बातचीत में मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि राज्य में भारी बारिश हुई है। नायडू ने कहा, भारी बारिश के कारण, विजयवाड़ा और गुंटूर शहर पूरी तरह से जलमग्न हो गए हैं। काजा में विजयवाड़ा-गुंटूर राष्ट्रीय राजमार्ग और जग्गैयापेटा में विजयवाड़ा-हैदराबाद राष्ट्रीय राजमार्ग पूरी तरह से जलमग्न हैं। मुख्यमंत्री के मुताबिक, जग्गैयापेटा में 24 घंटे में 26 सेंटीमीटर बारिश हुई, (शेष पृष्ठ 9)

नई दिल्ली में रविवार को सड़क किनारे एक स्टॉल पर 'गणेश चतुर्थी' उत्सव से पहले भगवान गणेश की मूर्ति को अंतिम रूप देते कलाकार

भ्रामक विज्ञापन देने पर आईएएस कोचिंग सेंटर पर 5 लाख का जुर्माना

राजेश कुमार। नई दिल्ली

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2022 से संबंधित भ्रामक विज्ञापन जारी करने के लिए शंकर आईएएस अकादमी पर 5 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। सीसीपीए की जांच में पाया गया कि शंकर आईएएस अकादमी ने विभिन्न पाठ्यक्रमों का विज्ञापन किया, लेकिन यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा परिणामों में विज्ञापित सफल उम्मीदवारों द्वारा चुने गए पाठ्यक्रम के संबंध में जानकारी जानबूझकर विज्ञापन में छिपाई गई थी। इसका प्रभाव उपभोक्ताओं ने गलत तरीके से यह मान लिया कि संस्थान द्वारा दावा किए गए सभी सफल उम्मीदवारों ने संस्थान द्वारा अपनी वेबसाइट पर विज्ञापित सशुल्क पाठ्यक्रमों का विकल्प चुना था। दूसरे शब्दों में, यह तरीका परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं को कोचिंग संस्थानों द्वारा विज्ञापित सशुल्क पाठ्यक्रमों को खरीदने के लिए आकर्षित करता है। जांच के दौरान यह भी पाया गया कि 18 मामलों में जहां उम्मीदवारों ने शंकर आईएएस अकादमी से प्रारंभिक पाठ्यक्रम खरीदा, रसीद पर (शेष पृष्ठ 9)

उत्तर प्रदेश में ग्रामीणों में भेड़ियों को आतंक बरकार

पायनियर समाचार सेवा। बहराइच

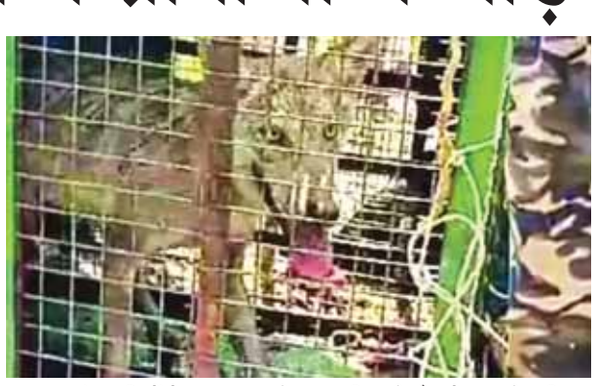

बहराइच जिले के महसी तहसील क्षेत्र में शनिवार देर रात से रविवार भोर तक दो अलग-अलग स्थानों पर कथित रूप से भेड़िए के हमले में नौ वर्षीय एक बालक व एक अधेड़ उम्र का शख्स घायल हो गए। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। इससे पूर्व बीते करीब डेढ़ माह के अंतराल में कथित तौर पर भेड़ियों के हमलों से छह बच्चों सहित सात लोगों की मौत हो गई थी और करीब तीस लोग घायल हुए थे। बीते छह-सात दिनों से शांत माहौल के बाद इलाके में एक बार फिर दहशत बढ़ गई है।

देवीपाटन मंडल के आयुक्त शशिभूषण लाल सुशील ने रविवार को पीटीआई-भाषा को बताया, गांव वासियों के अनुसार हरदी थानांतर्गत पूरेदिलदारसिंग गांव के मजरा नकही में शनिवारा रविवार रात करीब डेढ़ बजे घर के आंगन में मां के साथ सो रहे पारस (नौ) को एक भेड़िए ने हमला कर घायल कर दिया। पारस बहराइच के रेहुआ मंसूर गांव का निवासी है जो अपनी ननिहाल नकही गांव आया हुआ था। सुशील ने बताया कि दूसरी घटना मैकू पुरवा ग्राम सभा के दरिया कुट्टी मजरे की है जहां रविवार सुबह करीब चार बजे पुन्नीलाल (55) घर के आंगन में सो रहे थे, तभी भेड़िए ने हमला कर उन्हें घायल कर दिया। मंडलायुक्त ने बताया, "बहराइच के जिलाधिकारी व ग्रामीणों के अनुसार दोनों हमले भेड़िए ने किए हैं, लेकिन इसकी पुष्टि वन विभाग व घायलों की मेडिकल जांच के बाद ही होगी। उन्होंने बताया कि दोनों घायलों को नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है जहां उनका इलाज किया जा रहा है। डॉक्टरों के अनुसार दोनों की हालत खतरे से बाहर है। सुशील ने बताया कि छह भेड़ियों के झुंड में चार को पकड़ा जा चुका है जिसके बाद लोगों को कुछ राहत मिली थी, लेकिन शनिवार-रविवार की दरमियानी रात इन दो हमलों के बाद क्षेत्र में सतर्कता बढ़ा दी गई है।

उन्होंने बताया, "महसी तहसील के कुलैला गांव के पास स्थित भेड़ियों की मांद के निकट जाल व पिंजरे लगाए गए हैं और ड्रोन की मदद से उनकी गतिविधियों की निगरानी की जा रही है। मंडलायुक्त ने बताया कि शनिवार को कैमरे की फुटेज में दो भेड़िए दिखाई दिए थे, लेकिन रात अधिक होने के कारण ऑपरेशन भेड़िया का संचाल कर रहे दल उन्हें पकड़ नहीं सके। भेड़ियों के हमले में जान गंवाने वाले पांच लोगों के परिजनों को पांच-पांच लाख रुपए का मुआवजा दिया गया है जबकि दो संदिग्ध मौतों की जांच रिपोर्ट आने का इंतजार है। बहराइच के महसी तहसील क्षेत्र में मार्च माह से इंसानों पर भेड़ियों के हमले हो रहे हैं। बरसात के मौसम में 17 जुलाई से हमले बढ़े और हमलों में छह बच्चों सहित सात लोगों की मौत हो गई।

इमरजेंसी में देरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

विभिन्न मीडिया हाउसों द्वारा दी गई रिपोर्टों के अनुसार, भाजपा सांसद कंगना रनौत की फिल्म इमरजेंसी की रिलीज की तिथि बढ़ गई। यह खबर रविवार देर रात आई। पायनियर इसके कारणों की पुष्टि नहीं कर सकता।

गौर सिटी टाउनशिप में खत्म होगा पानी का संकट

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ट्यूबवेलों की संख्या बढ़ाने के साथ आठ नलकूपों को दोबारा शुरू करेगा

● शहर की आबादी लगभग 9 लाख, बसावट बढ़ने से मौजूदा संसाधन कम पड़ने लगे हैं

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा वेस्ट की गौर सिटी टाउनशिप की 20 से अधिक सोसाइटियों के लिए अच्छी खबर है। शहर के सेक्टरों और आसपास के गांवों में पानी की किल्लत दूर करने के लिए प्राधिकरण ट्यूबवेलों की संख्या बढ़ाने के साथ 8 नलकूपों का दोबारा विकास करेगा।

इसका ऐक्शन प्लान तैयार कर लिया गया है। पहले चरण में नौ नए नलकूप स्थापित किए जाएंगे। इसका सबसे ज्यादा फायदा फिलहाल ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित गौर सिटी टाउनशिप के अंतर्गत आने वाली 20 से अधिक सोसाइटियों को मिलेगा। इस पर लगभग चार करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। भूजल के साथ आगामी नवंबर माह तक पूरी क्षमता के साथ गंगाजल की आपूर्ति का भी दावा किया जा रहा है। ग्रेटर नोएडा के आवासीय और औद्योगिक सेक्टरों के अलावा क्षेत्र के 122 गांवों में जलापूर्ति की जिम्मेदारी प्राधिकरण के ऊपर है। हालांकि अभी 50 फीसदी गांवों में ही जलापूर्ति की जा रही है। बाकी में पहुंचाने का काम प्रगति पर है। वर्तमान में 206 नलकूपों की मदद से लगभग 173 एमएलडी भूजल की आपूर्ति की जा रही है। इस समय शहर की आबादी लगभग 9 लाख है। बसावट बढ़ने से मौजूदा संसाधन कम पड़ने लगे हैं। वहीं भूजल स्तर में गिरावट होने से वर्षों पहले स्थापित किए गए नलकूपों ने अब जवाब देना शुरू कर दिया है। ऐसे में भविष्य में जल संकट का सामना करना पड़ सकता है।

इसको देखते हुए प्राधिकरण जलापूर्ति के नेटवर्क को मजबूत करने में जुट गया है। आईआईटी रुड़की ने भी इस संबंध में सुझाव दिए थे। प्राधिकरण के डिप्टी कलेक्टर जितेंद्र गौतम ने बताया कि प्रथम चरण में उन सेक्टरों व सोसाइटियों में नए नलकूप स्थापित किए जाएंगे, जहां सबसे ज्यादा जरूरत महसूस की जा रही है।

ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टर 16सी में गौर सिटी टाउनशिप-1 व 2 में 8 नलकूप स्थापित किए जाएंगे। अभी यहां 6 नलकूप हैं। दनकौर क्षेत्र के अस्तौली गांव में नलकूप स्थापित किया जाएगा। यहां कूड़ा निस्तारण केंद्र भी स्थापित किया जा रहा है। ग्रेटर नोएडा के अल्फा, बीटा, गामा, डेल्टा आदि सेक्टरों में मांग के अनुसार जलापूर्ति सुनिश्चित करने के लिए 8 नलकूपों का दोबारा विकास किया जाएगा। ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित गौर सिटी टाउनशिप में 20 से अधिक सोसाइटियों हैं। जिसमें 1.5 लाख से अधिक आबादी रहती है। यहां 6 नलकूपों की मदद से जलापूर्ति की जा रही है। सोसाइटियों में आबादी बढने से जलापूर्ति में दिक्कत आने लगी है। भविष्य की जरूरतों को देखते हुए यहां 8 नए नलकूप स्थापित किए जाएंगे।

प्राधिकरण ने इसकी तैयारी शुरू कर दी है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के एसीईओ आशुतोष कुमार द्विवेदी ने कहा, जलापूर्ति में सुधार के लिए प्रयास किया जा रहा है। भविष्य में भी पानी की किल्लत पैदा न हो इसके नलकूपों की संख्या बढ़ाई जाएगी। नए नलकूप स्थापित करने के साथ पहले से स्थापित कुछ नलकूपों का पुन: विकास किया जाएगा। इसके अलावा गंगाजल की आपूर्ति का काम अंतिम चरण में है।

गाजियाबाद में कूड़ा उठाने वाली गाड़ी ने बच्ची को रौंदा, घायल

● नगर निगम ने चालक को किया सेवा मुक्त

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद में नगर निगम की कूड़ा कलेक्शन गाड़ी ने रविवार को एक बच्ची को रौंद दिया। इस हादसे में बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गई। उसको हॉस्पिटल में भर्ती कराया है। ये हादसा नगर निगम के वार्ड नंबर 93 कैला भट्टा में हुआ।

इस घटना की एक सीसीटीवी फुटेज भी सामने आई है। इसमें दो बच्चियां आपस में सड़क किनारे बातचीत कर रही थीं। तभी नगर निगम की कूड़ा कलेक्शन गाड़ी ने एक बच्ची को टक्कर मार दी। बच्ची सड़क पर गिर गई। जिसके बाद गाड़ी का पहिया बच्ची के शरीर के ऊपर से गुजर गया। हादसे के बाद आसपास के लोग घटनास्थल की तरफ दौड़े और बच्ची को उठाकर नजदीकी अस्पताल ले गए। यहां बच्ची का उपचार शुरू हुआ। नगर निगम ने इस पूरे हादसे पर अपना बयान जारी किया है।

नगर निगम के अनुसार संज्ञान में आया है कि दुर्घटनावश गाजियाबाद नगर निगम के कूड़ा कलेक्शन वाहन संख्या से वार्ड संख्या 93, इस्लामनगर में 2 वर्ष की बच्ची गंभीर रूप से घायल हुई है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा घायल बच्ची का उपचार संतोष अस्पताल में कराया जा रहा है। साथ ही ड्राइवर सोनू को तत्काल प्रभाव से सेवा मुक्त किया गया है। मेडिको लीगल केस के क्रम में संबंधित के विरुद्ध एफआईआर भी कराई जा रही है।

पिस्तौल के बल पर अपहरण की कोशिश करने के मामले में तीन पुलिसकर्मी पर गिरी गाज

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

बंदूक की नोंक पर 2 युवकों को जबरन गाड़ी में बैठाने का प्रयास करने के मामले में आखिरकार गाजियाबाद पुलिस के 3 सिपाहियों पर गाज गिर गई। डीसीपी ने तीनों हेड कॉन्स्टेबल को लाइन हाजिर कर दिया।

दरअसल, वो वाहन चोर का पीछा करते हुए दूसरे जनपद बागपत तक गए, लेकिन अपने अफसरों को सूचित नहीं किया। जब उनका वीडियो वायरल हुआ तब विभाग ने कार्रवाई की। 27 अगस्त को गाजियाबाद में लोनी थाने की पुलिस बागपत में गई। यहां से पुलिस ने दो युवकों को कार में बैठाने का प्रयास किया। पुलिसकर्मियों के हाथ में पिस्टल थी। वो दोनों युवकों को पीटते नजर आ रहे थे।

किसी ने इस पूरी घटना की वीडियो बनाकर वायरल कर दिया। इसके बाद पुलिस की किरकिरी हुई। ये तक आरोप लगा कि पुलिस उन्हें किडनैप करके ले जा रही थी।

इस वीडियो पर फिर गाजियाबाद पुलिस को सफाई देनी पड़ी। सहायक पुलिस आयुक्त सूर्यबली मौर्य ने कहा-वाहन चोरी का संदिग्ध अभियुक्त नूर मोहम्मद लोनी का रहने वाला है। दिल्ली में उस पर वाहन चोरी के 23 मुकदमे है और गाजियाबाद में 9 मुकदमे दर्ज हैं। सूचना ये मिली थी कि वो लोनी में एक गाड़ी से आने वाला है। पुलिस ने जब पीछा किया तो संदिग्ध वाहन बागपत की ओर में भागने लगा। संदिग्धता के आधार पर पुलिस ने एक व्यक्ति को पूछताछ के लिए साथ चलने को कहा।

इस पर उस व्यक्ति ने विरोध किया। उस व्यक्ति ने ये भी बताया कि वो नूर मोहम्मद नहीं है। इसके बाद उसको पुलिस ने तुरंत ही छोड़ दिया था। अब इस मामले में लोनी थाने के 3 हेड कॉन्स्टेबल प्रशांत, राजीव और अमित को लाइन हाजिर कर दिया गया है।

महागुन मॉल की फॉल सीलिंग गिरी

गाजियाबाद। कौशांबी क्षेत्र स्थित महागुन मॉल में शनिवार देर शाम फॉल सीलिंग गिर गई। मलबा हटाया जा रहा है, वहीं छत में अटकी फॉल सीलिंग को काटकर अलग किया जा गया है। ये हादसा मॉल के फर्स्ट फ्लोर पर हुआ है।

ये फॉल सीलिंग पूरे मॉल के एसी चैंबर के लिए लगी हुई थी। इस हादसे के बाद मॉल की एसी को बंद कर दिया गया है और मॉल में लोगों की एंट्री रोक दी गई है। मॉल में जो लोग अंदर मौजूद थे, वे भी धीरे-धीरे करके बाहर निकल गए। गनीमत ये रही कि फर्स्ट फ्लोर की गैलरी में एक थोड़े हिस्से की ही फॉल सीलिंग गिरी। उस वक्त गैलरी में ज्यादा लोग मौजूद नहीं थे।

ट्रक में चंडीगढ़ से बिहार जा रही थी विदेशी शराब जब्त

● इंपीरियल ब्लू की 570 पेटी बरामद, एक तस्कर गिरफ्तार

इंपीरियल ब्लू की 570 पेटी के साथ पुलिस गिरफ्त में तस्कर।

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

थाना एक्सप्रेस वे पुलिस को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस ने मुखबिर की सूचना के बाद एक ट्रक से भारी मात्रा में अवैध शराब बरामद की है। इस दौरान पुलिस ने इंपीरियल ब्लू की 570 पेटी बरामद की हैं।

इस शराब की कीमत करीब 1 करोड़ रुपए बताई जा रही है। दरअसल थाना एक्सप्रेस वे पुलिस ने लोकल इंटेलिजेंस और गोपनीय सूचना के आधार पर नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस वे सिंगल सर्विस रोड पर छपरौली कट के पास से एक ट्रक को चेकिंग के लिए रोका। इस ट्रक में लकड़ी की प्लाई भरी हुईं थीं। लेकिन उनके बीच में खुफिया तरीके से शराब की पेटियां छिपाकर रखी गईं थीं। पुलिस ने ट्रक से अवैध अंग्रेजी शराब की 570 पेटी बरामद की।

इस दौरान एक आरोपी को भी गिरफ्तार किया गया। आरोपी की पहचान सुनील निवासी जिला लुधियाना पंजाब के रूप में हुई है। नोएडा के एडिशनल डीसीपी मनीष मिश्रा ने बताया कि पकड़े गए आरोपी सुनील कुमार ने बताया कि इन दिनों बिहार में शराब बंदी लागू है। पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ में शराब बहुत सस्ती है। इसी का लाभ उठाने और आगामी दीपावली और इसी तरह के अन्य अवकाशों के मौके का सटीक फायदा उठाने के लिए चंडीगढ़ से सस्ती अंग्रेजी शराब भरकर बिहार ले जाते थे और मोटा मुनाफा कमाते थे। इस बार वह 29 अगस्त की रात में प्लाई बोर्ड के बीच में छिपाकर 570 पेटी अंग्रेजी शराब चंडीगढ़ से ट्रक में लदवाई। इस बार दिल्ली में प्रवेश करके और नोएडा में सेक्टर के मुख्य मार्गों से और एक्सप्रेसवे के सर्विस रोड से जा रहा था। तभी पुलिस ने उसे पकड़ लिया।

संक्षिप्त समाचार

थाना सेक्टर-39 पुलिस ने सुरक्षा व्यवस्था का लेकर वाहनों की जांच की।

मुफ्त देख सकेंगे अफगानिस्तान-न्यूजीलैंड टेस्ट मैच

नोएडा। शहीद विजय सिंह पथिक स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में 9 से 13 सितंबर तक अफगानिस्तान व न्यूजीलैंड के बीच खेले जाने वाले टेस्ट मैच का फ्री में लुफ्त उठा सकेंगे। हालांकि, इसके लिए पंजीकरण करना अनिवार्य होगा। बिना पंजीकरण के प्रवेश नहीं मिलेगा। इसकी अधिकारिक घोषणा कर दी गई है। उम्मीद है कि सोमवार से पंजीकरण की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। मौके पर भी पंजीकरण की सुविधा होगी। वहीं स्टेडियम में कैंप के लिए पहुंची अफगानिस्तान की टीम रविवार से लगातार तीन दिन तक रणजी खिलाड़ियों के साथ अभ्यास मैच खेलेगी। नोएडा व ग्रेटर नोएडा में कई जगह पर टिकट काउंटर खोले जाएंगे। स्टेडियम के बाहर भी कई काउंटर खोले जाएंगे। अधिकारी के मुताबिक अगले 1-2 दो दिन में वेबसाइट और काउंटर की जानकारी दे दी जाएगी। अगले सप्ताह से दर्शक मैच देखने के लिए पंजीकरण करा पाएंगे।

सदस्यता अभियान पर भाजपा ओबीसी मोर्चा ने की बैठक

नोएडा। नोएडा शहर में भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय पर एक अहम बैठक हुई। जिसमें 2 सितंबर को भाजपा का सदस्यता अभियान शुरू करने को लेकर खास बातचीत की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष ओबीसी मोर्चा उमेश पहलवान द्वारा की गई। भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय की इस अहम बैठक में जिला अध्यक्ष ओबीसी मोर्चा उमेश पहलवान ने कहा कि, 1 सितंबर से शुरू भारतीय जनता पार्टी के सदस्यता अभियान में सभी पदाधिकारी एवं सदस्य जोर-शोर से मेहनत करके अधिक से अधिक संख्या में पार्टी के सदस्य बनाने का कार्य करें। उमेश पहलवान ने आगे कहा, सर्वप्रतित है कि भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। इस बैठक में जिला उपाध्यक्ष रामकिशन यादव, जयप्रकाश प्रजापति, सुधीर अवाना, महामंत्री सतेंद्र सिरोही, भगत भाटी , संदीप अवाना, उमेश गुप्ता, धनकड़, कालीचरण प्रजापति, हेमंत प्रजापति, विनीत प्रजापति, पिंटू यादव आदि मौजूद रहे।

किसानों के मामले में कमेटी ने शासन को रिपोर्ट सौंपी

नोएडा। किसानों की मांगों को लेकर उच्चस्तरीय कमेटी ने रिपोर्ट शासन को सौंप दी है। अब शासन रिपोर्ट के आधार पर इस संबंध में निर्णय लेगा। शासन ने 21 फरवरी 2024 को उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया था। कमेटी को तीन महीने के अंदर रिपोर्ट सौंपनी थी लेकिन अब शनिवार को कमेटी ने शासन को रिपोर्ट सौंप दी है। इससे पहले कमेटी ने नोएडा, ग्रेनो और यमुना प्राधिकरण के अधिकारियों के अलावा किसान संगठन के पदाधिकारियों से भी बात की थी। भारतीय किसान परिषद के अध्यक्ष सुखबीर पहलवान का कहना है कि जिलाधिकारी ने भरोसा दिलाया है कि किसानों के हित में ही कमेटी को जिला स्तर से रिपोर्ट दी गई थी। अब कमेटी ने शासन को क्या रिपोर्ट सौंपी है, यह वहां से स्वीकृति के बाद ही पता चल पाएगा। किसानों के हक के लिए अंतिम समय तक लड़ाई लड़ेंगे।

गाजियाबाद से लापता युवक 9 साल बाद मिला

गाजियाबाद। गाजियाबाद पुलिस ने 9 साल पहले लापता हुए एक शख्स को ढूंढ़ निकाला। वो शाहजहांपुर जिले की बिस्किट फैक्ट्री में काम कर रहा था। आर्थिक तंगी और पत्नी से झगड़ा होने पर घर से चला गया था। अब उसने फेसबुक पर डांस करते हुए एक वीडियो डाली, जिससे वो पहचाना गया। लोनी क्षेत्र के ग्राम सकलपुरा निवासी राकेश कुमार 9 साल पहले लापता हो गया था। 13 सितंबर 2015 को परिजनों ने थाना लोनी पर उसकी मिसिंग कंप्लेंट दर्ज कराई थी। पुलिस और परिजनों ने राकेश को ढूंढ़ने के प्रयास किए, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। इसके बाद राकेश की खोजबीन बंद कर दी गई।

सात अवैध खनन सहित ओवरलोड वाहनों पर कार्रवाई

● प्रशासन ने लगाया करोड़ों को जुर्माना

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

गौतमबुद्धनगर में शासन द्वारा ओवर लोड संचालित वाहनों और खनन सामग्री के अवैध परिवहन के खिलाफ एक बड़े प्रवर्तन अभियान की शुरुआत की गई।

इस अभियान के तहत राजस्थान, हरियाणा से रोडी, गिट्टी, रेता लादकर गौतमबुद्धनगर आने वाले 12 और अन्य सामान ढोने वाली 5 ओवर लोड कुल 17 ओवर लोड वाहनों के विरुद्ध कार्रवाई की गई। बताया जा रहा है कि प्रवर्तन कार्यवाही के दौरान खनन विभाग द्वारा बिना परमिट और ओवरलोड वाहनों पर 3 लाख 8 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया, जबकि परिवहन विभाग ने 8 लाख 39 हजार रुपए का जुर्माना और कर लगाया।

इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग 11 लाख 47 हजार रुपए का जुर्माना आरोपित किया गया। साथ ही सभी चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस और परमिट निलंबित करने की सिफारिश की गई है। इस अभियान को जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा के नेतृत्व में गठित 8 सदस्यीय जनपद स्तरीय कार्यबल ने सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

इनमें नायब तहसीलदार दादरी प्रज्ञा सिंह, एआरटीओ प्रवर्तन डॉ. उदित नारायण, जिला खनन अधिकारी उत्कर्ष त्रिपाठी सहित यात्री कर अधिकारी राजेश मोहन के साथ-साथ पुलिस और प्रवर्तन कर्मी भी मौजूद थे। जिलाधिकारी ने निर्देश देते हुए कहा है कि इस प्रकार की प्रवर्तन कार्यवाही आगे भी जारी किया जाएगा और जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में औचक निरीक्षण के साथ नियमित रूप से कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा यह सुनिश्चित किया जाएगा कि ओवर लोड और अवैध खनन सामग्री के परिवहन को रोकने के लिए सभी जरूरी कदम उठाए गए हैं या नही।

बायोमीट्रिक केवाईसी में जन्मतिथि मैच नहीं करने पर अभ्यर्थी पर एफआईआर

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नगर के जीटी रोड स्थित मिहिर भोज पीजी कॉलेज में पुलिस परीक्षा के दौरान बायोमेट्रिक केवाईसी जन्मतिथि मैच न करने को लेकर अभ्यर्थी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई है।

पुलिस ने बताया कि 23 अगस्त से नगर के जीटी रोड स्थित मिहिर भोज पीजी कॉलेज में उत्तर प्रदेश परीक्षा चल रही थी । परीक्षा में 31 अगस्त को प्रथम पारी में पत्र चेकिंग के दौरान बायोमेट्रिक कार्य सुरक्षा के अधिकृत व्यक्ति गाजियाबाद के चिपियाना कवि नगर निवासी अमन झा द्वारा बताया गया कि जनपद हाथरस के नगला गुलावी गांव निवासी अभ्यर्थी पुष्पेंद्र कुमार के पैन कार्ड, आधार कार्ड, हाई स्कूल मार्कशीट की केवाईसी करने पर जन्मतिथि मैच नहीं खा रही है।

गहराई से जांच करने पर पता चला कि पुष्पेंद्र ने दोबारा दो बार हाई स्कूल किया गया है । जिसमें अलग-अलग जन्मतिथि एक अलग-अलग नाम अंकित होना पाया गया है। जिससे पुष्पेंद्र के खिलाफ सुसंगत धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की गई है।

'8 साल बाद ट्रांसपोर्टर प्लॉट खरीद-बेच सकेंगे'

● नोएडा के ट्रांसपोर्ट नगर में नई आवंटन दर लागू, किराए पर भी दे सकेंगे प्लॉट

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ट्रांसपोर्टनगर के लिए नई आवंटन दरें लागू हो गई हैं। करीब आठ साल के बाद प्लॉट को खरीदना-बेचना संभव हो सकेगा। साथ ही, किराए पर भी दिए जा सकेंगे। अभी तक एग्रीमेंट के आधार पर भूखंड की बिक्री हो रही थी। मगर प्राधिकरण की ओर से मान्य नहीं होने के कारण पूरी तरह से सबलीज नहीं हो पा रही थी।

दरअसल, सेक्टर-69, औद्योगिक विभाग एरिया के तहत फेस तीन में आता है , जबकि सेक्टर-88 फेस टू में आता है। अब प्राधिकरण को ट्रांसफर चार्ज भी मिल सकेगा। प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि ट्रांसपोर्टनगर के प्लॉट का ट्रांसफर चार्ज आवंटन रेट और लोकेशन चार्ज के रूप में 4 प्रतिशत प्रति वर्ग मीटर के अनुसार की जाएगी। इसके अलावा जीएसटी अलग से देना होगा। प्राधिकरण अधिकारियों ने बताया कि ट्रांसफर चार्ज के साथ-साथ किराया अनुमति शुल्क भी लागू कर दिया गया है। फेज टू के अंतर्गत सेक्टर-88 स्थित ट्रांसपोर्ट नगर के लिए 10 साल तक के लिए 100 रुपए प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से शुल्क लिया जाएगा। इसके अलावा फेज तीन एरिया में स्थित सेक्टर-68 स्थित ट्रांसपोर्ट नगर के लिए 10 साल तक के लिए 200 रुपए प्रति वर्ग मीटर का किराया तय किया गया है। अधिकारियों ने बताया कि पांच साल के लिए किराया अनुमति मांगने के लिए उपरोक्त दरों का आधा शुल्क लिया जाएगा। जीएसटी अलग से देना होगा।

आवंटी द्वारा प्रस्तुत आवेदनों पर ट्रांसपोर्ट नगर के लिए प्रकाशित योजना के नियम व शर्तों के तहत ही भूखंड के ट्रांसफर की प्रक्रिया होगी। गौरतलब है कि ट्रांसपोर्ट नगर में ट्रांसपोर्टरों को भूखंड आवंटित हुए सात-आठ साल का समय हो चुका है लेकिन अभी तक शुल्क तय नहीं होने के कारण आधिकारिक रूप से भूखंडों की बिक्री नहीं हो पा रही थी। चोरी-छिपे एग्रीमेंट के आधार पर भूखंड को दिया जा रहा था लेकिन इसकी सब लीज नहीं हो पा रही थी।

पुलिस मुठभेड़ में दो बदमाशों के लगी गोली

● ग्रेटर नोएडा में चेन लूट की वारदात की थी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा में पुलिस और चेन लूट की वारदात को अंजाम देने वाले बदमाशों के बीच में मुठभेड़ हो गई। इस पुलिस मुठभेड़ में दो बदमाश पैर में गोली लगने से घायल हो गए।

पुलिस ने बदमाशों के कब्जे से दो लूटी हुई चौन, एक मोटरसाइकिल और अवैध हथियार बरामद किए। इन बदमाशों पर नोएडा सहित आसपास के जनपदों में दर्जनों मुकदमे दर्ज हैं। बिसरख पुलिस द्वारा अजनारा ली गार्डन चौराहे पर वाहन चेकिंग की जा रही थी, तभी एक अपाचे मोटरसाइकिल पर सवार 2 संदिग्ध व्यक्ति आते दिखाई दिए। जिन्हें चेकिंग के लिए रूकने का इशारा किया। किन्तु वह नहीं रुके और तेज रफ्तार से 6 प्रतिशत वैभव हैरीटेज की तरफ भागने लगे। पुलिस टीम पीछा करने पर मोटरसाइकिल सवार संदिग्ध व्यक्ति पर 6 प्रतिशत रोड किनारे बने पार्क के पास से फायरिंग करने लगी। इस दौरान दोनों बदमाशों के द्वारा पुलिस टीम पर जान से मारने की नियत से फायर किया गया। पुलिस द्वारा भी जवाबी फायरिंग की गई। इस दौरान पुलिस की गोली लगने से दोनों बदमाश घायल हो गए। बदमाशों की पहचान सचिन कुमार निवासी हौजदार गढी, थाना बाबूगढ हापुड़ और गौरव गौतम वर्तमान निवासी हर्ष विहार दिल्ली के रूप में हुई। घायल अवस्था में दोनों बदमाशों को उपचार के लिए अस्पताल भेज दिया गया।

एडिशनल डीसीपी ह्रदेश कठेरिया ने बताया कि यह बदमाश बड़े ही शातिर किस्म के हैं। यह दोनों चेन स्नैचिंग की घटनाएं दिल्ली, गौतमबुद्धनगर, हापुड़, बुलन्दशहर, गाजियाबाद आदि जनपदों में करते थे। इनके विरूद्ध कई जनपदों में आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। इनमें अन्य आपराधिक इतिहास की जानकरी जुटाई जा रही है।

जमीन विवाद में खूनी संघर्ष, महिला समेत 4 गिरफ्तार

● पुश्तैनी जमीन बांटवरे में हुए थे तीन भाई घायल

पुश्तैनी जमीन पर बंटवारे को लेकर एक दूसरे के खून के प्यासे बने तीन भाई पुलिस गिरफ्त में।

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

जेवर थाना क्षेत्र के रन्हेरा गांव में शनिवार को एयरपोर्ट के लिए अधिग्रहित की जा रही पुश्तैनी जमीन के बंटवारे को लेकर तीन भाई आपस में भिड़ गए। इस खूनी संघर्ष में तीनों भाई गंभीर रूप से घायल हो गए, जिनमें से एक की हालत नाजुक बनी हुई है। पुलिस ने शनिवार देर रात चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

बता दें कि रन्हेरा निवासी अनिल कुमार ने कई साल पहले अपनी पुश्तैनी जमीन गांव के एक व्यक्ति को बेच दी थी और खुर्जा में रहने लगे थे। एयरपोर्ट के दूसरे चरण में रन्हेरा गांव को विस्थापित किया जाना है, जिसके तहत विस्थापित परिवारों को टाउनशिप में मकान दिए जाएंगे और प्रभावित व्यक्तियों को नौकरी के बदले पांच लाख रुपए मुआवजा दिया जाएगा। इसी सिलसिले में अनिल तीन दिन पहले गांव आया था और अपने चचेरे भाई अवधेश और कुशल से पुश्तैनी मकान में अपने 90 गज के हिस्से की मांग करने लगा।

इस विवाद ने शनिवार को तूल पकड़ लिया, जब अनिल पुरानी संपत्ति विवाद की तारीख पर कचहरी गया और बाद में गांव लौटकर आरोप लगाया कि उसके चचेरे भाई अवधेश के सिर पर घर में रखे फावड़े से हमला कर दिया गया। इस हमले में अवधेश गंभीर रूप से घायल हो गया। बीच-बचाव करने के प्रयास में कुशल और कुछ महिलाओं को भी चोटें आईं। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। ग्रेटर नोएडा के एडीसीपी अशोक कुमार ने बताया कि मारपीट में तीन लोग घायल हुए हैं, जिनमें से एक की हालत गंभीर है। गंभीर रूप से घायल युवक को नोएडा के कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है और चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

दहेज हत्या के आरोप में पति धरा पत्नी के गर्दन में मारी थी गोली

● पुलिस ने छह लोगों के खिलाफ दर्ज किया था केस

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

कोतवाली क्षेत्र के जगनपुर गांव में दहेज के लिए पत्नी की हत्या के आरोप में फरार चल रहे पति दीपक भड़ाना को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। इससे पहले पुलिस तीन अन्य आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है।

पुलिस का कहना है कि आरोपी पति को रविवार को कोर्ट में पेश कर जेल भेजा जाएगा। दिल्ली के सराय काले खां निवासी हरवीर ने 24 अगस्त को पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी कि उनकी बेटी निधि की ससुराल वालों ने दहेज में 1 करोड़ रुपए की मांग पूरी न होने पर उसकी गर्दन में गोली मारकर हत्या कर दी। इस मामले में पुलिस ने जगनपुर गांव निवासी पति दीपक भड़ाना समेत छह ससुरालियों के खिलाफ दहेज हत्या का केस दर्ज किया था। घटना के अगले दिन पुलिस ने आरोपी देवर, सास, और ससुर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। वहीं, रविवार को पुलिस ने मुख्य आरोपी पति दीपक भड़ाना को गिरफ्तार कर लिया। घटना के बाद आरोपी पति ने एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर खुद और परिवार के अन्य सदस्यों को निर्दोष बताते हुए इसे हादसा करार दिया था।

आपका विधायक-आपके द्वार अभियान शुरू

विधानसभा चुनाव पिछले पांच साल में आप सरकार के कार्यों का लेखा-जोखा करेगी पेशः कुलदीप

● दिलीप पांडेय ने कहा, पार्टी का 65 विधानसभाओं में कार्यकर्ता सम्मेलन हो चुका है संपन्न, अगले हफ्ते 13 हजार बूथों पर होंगी बैठकें

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अभियान के पहले दिन विधायक फंड से हो रहे कार्य के बारे में लोगों को बताते आप नेता कुलदीप।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में विधानसभा चुनाव से पहले सभी पार्टियों ने कमर कसने के साथ तैयारियां तेज कर दी हैं। इसी कड़ी में आम आदमी पार्टी ने रविवार को 'आपका विधायक आपके द्वार' अभियान की शुरुआत की है। इस अभियान का उद्देश्य दिल्ली की जनता से सीधा संवाद कर अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में 'आम आदमी पार्टी' की सरकार के पांच साल में किए गए कामों को उन तक पहुंचाना है।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और विधायक दिलीप पांडे और कुलदीप कुमार ने रविवार को पार्टी मुख्यालय पर संयुक्त प्रेस वार्ता में बताया, 'आपका विधायक आपके द्वार' अभियान के पहले दिन शालीमार बाग, बवाना, पालम, महरौली, सुल्तानपुरी, ब्रिजवास, कोंडली, विकासपुरी, मादीपुर, तिमारपुर, तिमारपुर मंडल में हुआ बैठकें हुई। उन्होंने बताया कि जहां पर पार्टी के विधायक हैं, वहां पर उनके नेतृत्व में बैठकें हो रही हैं, जबकि जहां हमारी पार्टी के विधायक नहीं हैं, वहां संगठन के कार्यकर्ता 'आपकी सरकार-आपके द्वार' बैनर तले बैठकें कर करेंगे। आप नेता दिलीप कुमार ने कहा, हमारा लक्ष्य अगले एक महीने में सभी 2800 मंडलों में बैठकों को पूरा करने का है। इस दौरान पार्टी के दिल्ली प्रदेश उपाध्यक्ष कुलदीप कुमार ने कहा कि अभियान के दौरान आम आदमी पार्टी सरकार के पिछले 5 साल में किए कार्यों का लेखा-जोखा जनता के सामने पेश करेंगे।

दिलीप पांडे ने 'आपका विधायक आपके द्वार' अभियान के बारे में कहा कि आगामी दिल्ली विधानसभा चुनावों के मद्देनजर आम आदमी पार्टी ने अपने संगठन को तैयार करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इसके तहत पार्टी के शीर्ष से लेकर निचले स्तर तक के पूरे संगठन का पदाधिकारियों द्वारा पुनर्मूल्यांकन किया जा रहा है। इस क्रम में, अब तक दिल्ली की 70 में से 65 विधानसभाओं में कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया जा चुका है। प्रत्येक बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष, संगठन मंत्री, जिलाध्यक्ष और जिला सचिव समेत तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहे। लगभग हर कार्यकर्ता सम्मेलन में करीब 200 से 400 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

इसके अलावा आगामी दिनों में विधानसभाओं के प्रत्येक वॉर्ड के मंडल के प्रभारी और अध्यक्ष बूथवार बैठक भी की जाएंगी। दिलीप पांडे ने कहा कि दिल्ली के लगभग 13 हजार से अधिक बूथों पर बैठकें करके, आम आदमी पार्टी चुनाव से काफी पहले ही विधानसभा, वार्ड, और मंडल के बाद बूथ स्तर तक का ढांचा तैयार कर लेगी। सब कुछ पुनर्नियोजित कर लिया जाएगा। दिलीप पांडेय ने कहा, 'मंडल' उन मतदान केंद्रों या उन स्कूलों को कहा जाता है, जहां वोट डाले जाते हैं। इसके तहत 8 से 10 बूथ आते हैं। हमारे चुनावी अभियान का यह बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। सभी मंडलों में इन बैठकों की प्रक्रिया आज से शुरू हो गई है और अगले 25 से 30 दिनों के अंदर हर मंडल में यह बैठक पूरी कर ली जाएगी। उन्होंने आगे कहा कि आम आदमी पार्टी ने यह अभियान इसलिए शुरू किया है क्योंकि जब पिछले लोकसभा चुनावों के दौरान दिल्ली की जनता से सीधा संवाद किया गया, तो यह उन क्षेत्रों में अधिक प्रभावी रहा जहां आम आदमी पार्टी ने चुनाव लड़ा था था। इसलिए, संवादहीनता को समाप्त करने के लिए इस अभियान को युद्ध स्तर पर शुरू किया गया है।

आम आदमी पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष कुलदीप कुमार ने कहा कि 'आपका विधायक आपके द्वार' अभियान के माध्यम से हम जनता के बीच जाकर उनसे सीधा संपर्क करेंगे और उनकी समस्याएं सुनेंगे।

हम विभिन्न विधानसभाओं में अपने पिछले 5 वर्षों के कार्यों का लेखा-जोखा जनता के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। हम दिल्ली की जनता को बताएंगे कि हमने पिछले 5 वर्षों में उनके लिए क्या-क्या किया है। दिल्ली के लोग जानते हैं कि जब से अरविंद केजरीवाल की सरकार आई है, तब से दिल्ली लगातार विकास की दिशा में आगे बढ़ रही है। चाहे वह 24 घंटे मुफ्त बिजली, पानी की सुविधा, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा, बुजुर्गों की तीर्थ यात्रा, सड़कों का विकास हो या सीवर की व्यवस्था हो, हमारी सरकार निरंतर जनता के बीच जाकर काम कर रही है।

आप की राजनीतिक जमीन खिसकी, वीडियो दिल्ली वालों को भ्रम में डालने की साजिशः वीरेंद्र सचदेवा

● दिल्ली पुलिस से वीडियो की जांच करने और दोषियों पर कानूनी कार्रवाई करने की मांग

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने पार्षद रामचन्द्र को लेकर लगाए गए आरोप को निराधार और झूठ बताया और कहा कि आम आदमी पार्टी के नेता सिर्फ लोगों के अंदर भ्रम पैदा करने की नाकाम कोशिश कर रहे हैं। वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि उनके पार्षद घर में बैठकर वीडियो बना रहे हैं कि उन्हें कोई ले गया है। ना ही उसमें किसी का नाम है, ना ही कहां ले गया है, इसकी जिक्र है और किन लोगों ने उनको घर पर छोड़ा है, उनका नाम है, सिर्फ मनगढंत कहानियां बनाने का काम कर रहे हैं।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि आम आदमी पार्टी की दिल्ली में राजनीतिक जमीन खिसक चुकी है और दिल्ली की जनता इन झूठे बयानों में नहीं आने वाली है क्योंकि आम आदमी पार्टी के खुद के नेता आतिशी मार्लेना इन्हीं झूठों के कारण कोर्ट का चक्कर काट रही है आगे ऐसा ही झूठे आरोप लगाने वालों के साथ भी होने वाला है। सचदेवा ने दिल्ली पुलिस से मांग की है कि आम आदमी पार्टी द्वारा जो वीडियो जारी किया गया है उसकी पूरी तरह से जांच की जाए और जो भी दोषी हो, उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि चोरी भ्रष्टाचार और लूट करने वाली आम आदमी पार्टी के विधायक और निगम पार्षद के बातों पर कोई भरोसा नहीं कर रहा है तो सिर्फ सनसनी पैदा करने का काम आम आदमी पार्टी के नेता कर रहे हैं।

प्रवीण शंकर कपूर ने मनीष सिसोदिया और आप के एमसीडी प्रभारी पर झूठ बोलने और सनसनी पैदा करने का आरोप लगाया। कपूर ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, पार्षद रामचंद्र आपकी पार्टी में हैं या नहीं, हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह तो तय है कि जब आप अफवाह फैला रहे हैं।

राजधानी में कानून व्यवस्था का मखौल उड़ा रही भाजपाः पाठक

आप के विधायक और दिल्ली नगर निगम के प्रभारी दुर्गेश पाठक ने भाजपा पर दिल्ली में कानून एवं व्यवस्था का मखौल उड़ाने का आरोप लगाया। पाठक ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आम आदमी पार्टी के पार्षद रामचंद्र जी को भाजपा के पार्षद ने ....अपने गुंडों के साथ अगवा कर लिया और रामचंद्र जी को कहां लेकर गए हैं, यह किसी को पता नहीं है। उन्होंने कहा, हम पूरी भारतीय जनता पार्टी को यह चेतावनी देते हैं कि अगर अगले एक. डेढ़ घंटे में रामचंद्र को उनके घर नहीं पहुंचाया गया तो हम ऐसा हंगामा करेंगे कि पूरी भाजपा हिल जाएगी। आपके वरिष्ठ नेता दिलीप पांडे ने कहा कि यह सब भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की जानकारी में है। जब आम आदमी पार्टी के नेताओं ने सोशल मीडिया और फोन कर दिल्ली पुलिस के अधिकारियों पर दबाव बनाया तब जाकर दो घंटे बाद हमारे पार्षद को छोड़ा गया। दिलीप पांडे ने कहा कि आज भाजपा ने अपने अहंकार में कानून के मुंह पर जो जोरदार तमाचा मारा है,

'स्वास्थ्य पर आंखों में धूल झोक रही आप'

● चाचा नेहरू अस्पताल में बच्चों की मौत पर विजेंद्र गुप्ता ने जताया दुख

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने दिल्ली सरकार के चाचा नेहरू बाल चिकित्सालय में पिछले पांच सालों में हुई चार हजार बच्चों की मौत पर दुःख जताते हुए स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर आप आदमी पार्टी की सरकार की आलोचना की है।

भाजपा नेता ने कहा, निर्दोष बच्चों की मौत से वो बहुत आहत हैं। इन आंकड़ों ने ने दिल्ली सरकार की स्वास्थ्य सेवाओं की पोल खोलकर रख दी है। उन्होंने कहा कि आरटीआई के माध्यम से सामने आए बच्चों की मौत के ये आंकड़े न केवल चौंकाने वाले हैं बल्कि सरकार को शर्मसार भी करने वाले हैं। गुप्ता ने कहा कि ये आंकड़े सिर्फ एक अस्पताल के हैं, बाकी अस्पतालों के आंकड़े सामने आने पर तस्वीर साफ हो जाएगी।

नेता प्रतिपक्ष ने दिल्ली सरकार को कटघरे में खड़ा करते हुए पूछा है कि अपने मोहल्ला क्लीनिकों को वर्ल्ड क्लास बताने वाले दिल्ली के मुख्यमंत्री के पास इन निर्दोष बच्चों की मौत का कोई जवाब नहीं है। उन्होंने हैरानी जताते हुए कहा कि इतनी घोर लापरवाही बरतने वाले डॉक्टरों के खिलाफ कोई एक्शन तक नहीं लिया गया और इन आंकड़ों को कम करने के लिए कोई कदम नहीं उठाए गए। आरटीआई में बताया गया है कि इन बच्चों की मौत की मुख्य वजह सेप्सिस, निमोनिया और सेप्टिक शॉक समेत दूसरी बीमारियां है। गुप्ता ने कहा कि ये स्थिति तो तब है जबकि चाचा नेहरू बाल चिकित्सालय दिल्ली सरकार द्वारा संचालित एक अत्याधुनिक सुपर-स्पेशलिटी अस्पताल है, जहां सभी सुविधाओं का दावा किया जाता है।

नेता प्रतिपक्ष ने याद दिलाया कि लगभग दो साल पहले भी दिल्ली सरकार के एक अन्य अस्पताल कलावती शरण अस्पताल में मोहल्ला क्लीनिक के डॉक्टरों द्वारा छोटे बच्चों को गलत सिरप लिखकर देने से कुछ बच्चों की मौत हो गई थी।

विजेंद्र गुप्ता ने हैरानी जताई कि इन नौनिहालों की मौत पर आप सरकार कितनी संवेदनहीन हो चुकी है कि इतनी मौतों के बावजूद इसके सिर पर जूं भी नहीं रेंग रही। उन्होंने कहा है कि वे इस मामले को विधानसभा के अगले सत्र में उठायेंगे और इन मौतों के लिए जिम्मेदार चिकित्सकों और कर्मचारियों पर कड़े एक्शन लेने के लिए उपराज्यपाल से मांग करेंगे। ज्ञात हो कि पिछले दिनों एक आरटीआई से जानकारी मिली थी कि अस्पताल में 4000 मौते हुई थी।

प्रदूषण पर आप का बयान नाकामी दर्शाता है : देवेंद्र

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने पर्यावरण मंत्री गोपाल राय के विंटर एक्शन प्लान और राजधानी में प्रदूषण का मसला सबके सहयोग और मिलकर निपटेगा के बयान पर घेरते हुए कहा कि यह उनकी नाकामी को दर्शाता है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, दिल्ली सरकार पिछले 10 वर्षों से विंटर एक्शन प्लान दोहरा रही है। भाजपा नेता केंद्र सरकार के पर्यावरण मंत्री को खतरनाक प्रदूषण को काबू पाने के लिए कार्य योजना को लागू करने के लिए क्यों नही कहते। देवेन्द्र यादव ने कहा कि यदि गोपाल राय की यह मंशा हैं कि प्रदूषण का मसला सबके सहयोग और मिलकर निपटेगा, तो प्रदूषण सहित जल भराव, दिल्ली की सड़कों की हालत, जल संकट, बिजली बिलों में बढ़ोतरी जैसे जनता से जुड़े मामलों पर तत्काल सर्वदलीय बैठक बुलाए, कांग्रेस पार्टी 15 वर्ष के दिल्ली में किए चहुंमुखी विकास के अनुभव अनुसार हर विषय का हल निकालने के लिए तैयार है।

प्रदूषणः पड़ोसी राज्यों संग काम करना जरूरीः गोपाल

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने रविवार को कहा कि दिल्ली में प्रदूषण की समस्या का समाधान केवल सभी के साथ मिलकर प्रयास करने से किया जा सकता है। उन्होंने केंद्र सरकार से सर्दियों के दौरान कृत्रिम बारिश की अनुमति देने का आग्रह किया, क्योंकि इस दौरान शहर में वायु गुणवत्ता का स्तर गिर जाता है। राय ने यहां संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि यद्यपि दिल्ली सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए कई कदम उठाए हैं, फिर भी राष्ट्रीय राजधानी और इसके आसपास नवंबर में प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है।

उन्होंने कहा, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में आपात स्थिति पैदा हो जाती है। केजरीवाल सरकार प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए काम कर रही है। जब से हमारी सरकार सत्ता में आई है, प्रदूषण के स्तर में कमी आई है। उन्होंने कहा कि लेकिन नवंबर में प्रदूषण के स्तर में वृद्धि देखी जाती है। पिछले साल आईआईटी-कानपुर ने एक प्रस्ताव पेश किया था कि दिल्ली में कृत्रिम वर्षा या क्लाउड सीडिंग का प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इसके लिए वित्तीय प्रबंधन और सुरक्षा अनुमति की आवश्यकता है। पिछले साल समय बहुत कम था, इसलिए अनुमति नहीं मिल सकी थी। उन्होंने कहा, हमने विशेषज्ञों के साथ बैठक की और मैंने केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव को पत्र लिखकर केंद्र से मदद मांगी। राय ने पिछले सप्ताह केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव को पत्र लिखकर केंद्र से आग्रह किया था कि वह सर्दियों में वायु प्रदूषण से निपटने के लिए दिल्ली में कृत्रिम बारिश कराने के लिए क्लाउड सीडिंग की व्यवहार्यता का मूल्यांकन करने के लिए सभी हितधारकों के साथ बैठक बुलाए। उन्होंने कहा, दिल्ली में इस प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के लिए रक्षा मंत्रालय, गृह मंत्रालय, एसपीजी, दिल्ली सरकार, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, आईएमडी, सीपीसीबी, एएसआई, बीसीएएस और उत्तर प्रदेश सरकार से अनुमति की आवश्यकता है।

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय

● विशेषज्ञों के साथ बैठक और पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव को पत्र लिखकर केंद्र से मदद मांगीः राय

कार शोरूम में करंट लगने से कारीगर की मौत

नई दिल्ली। ज्योति नगर इलाके में हुंडई कार के शोरूम में काम करते वक्त एसी टेक्नीशियन की करंट लगने से मौत हो गई। मृतक की पहचान गुलफाम (28) वर्ष के रूप में हुई है, वह मूल रूप से रामपुर डिस्ट्रिक के खेमपुर गांव का रहने वाला था, गुलफाम एसी रिपेरिंग ओर बिजली का काम करता था, अपने दो साथी वारिस ओर नदीम के साथ शाहीन बाग में रहता था।

फाइल फोटो

गुलफाम के बड़े भाई आरिफ ने बताया गुलफाम को इरशाद नाम के ठेकेदार फोन करके ज्योति नगर के दुर्गा पूरी चौक के समीप हुंडई कार के शोरूम में एसी ठीक करने के लिए बुलाया था, गुलफाम, वारिस ओर नदीम एसी ठीक करने पहुंचे थे।

नदीम ओर वारिस नीचे एसी की कूलिंग चेक कर रहे थे ओर गुलफाम आउटडोर यूनिट में गैस डाल रहा था। अचानक करंट लगने से गुलफाम की हालत बिगड़ गयी उसे जीटीबी अस्पताल लेकर गए जहां गुलफाम ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

लूटपाट का विरोध करने पर युवक की चाकू घोंपकर हत्या

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

द्वारका के उत्तम नगर इलाके में लूटपाट के प्रयास के दौरान 18 वर्षीय एक युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। मृतक की पहचान उत्तर प्रदेश के मेरठ निवासी मोनू के रूप में हुई है।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि शनिवार रात सवा 11 बजे उत्तम नगर थाने में झगड़े और एक व्यक्ति को चाकू मारने की सूचना मिली। पुलिस ने बताया कि कथित घटना के समय मोनू और उसका दोस्त मोनू कुमार खाना खाने के लिए जा रहे थे तभी मेट्रो के खंभे के पास चार-पांच लोगों ने उन्हें रोक लिया। आरोपियों ने उन्हें लूटने की कोशिश की। जब उन्होंने इसका विरोध किया तो उनमें से एक मोनू की पीठ पर चाकू घोंपकर भाग गया। मोनू को दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल ले जाया गया जहां से उसे सफदरजंग अस्पताल भेज दिया गया। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया है और पुलिस आरोपियों की पहचान के लिए इलाके में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है।

भूमि पूजन के साथ रामलीला की तैयारी शुरू

● आयोजकों ने रामलीला के कलाकारों से परिचय करवाया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली-एनसीआर की रामलीला समितियों ने हर साल की तरह इस साल भी रामलीला का भव्य आयोजन की तैयारियां शुरू कर दी है। इस बार राष्ट्रीय राजधानी में कई जगहों पर रामलीला का मंचन देखने को मिलेगा। जिसमें आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा।

आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस 2 का भूमि पूजन वैदिक रीति रिवाज के बीच मंत्रोच्चारण के साथ रविवार को संपन्न हुआ। इसके बाद आयोजकों ने रामलीला के कलाकारों से परिचय करवाया। इस अवसर पर कलाकारों ने सीता स्वयंवर व हनुमान-रावण संवाद और

लक्ष्मण-परशुराम के रोचक संवाद के बीच क्रोध, संयम और वीरता का बखान होता दिखा। कलाकारों ने इसका मंचन सभी को रोमांचित कर दिया। आयोजकों ने बताया कि रामलीला की तैयारियां जोरों पर चल रही है। हर साल हजारों लोग रामलीला का मंचन देखने आते हैं। इस बार भी बड़ी संख्या में लोगों के आने की उम्मीद है। रामलीला मंचन के मद्देनजर खास लाइटिंग और मेलों का आयोजन भी किया जाता है। जिससे लोगों को आनंद मिल सके। संस्था का उद्देश्य नई पीढ़ी के लोगों को भगवान राम के आदर्शों से अवगत करना है। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस 2 का भूमि पूजन मुख्य संरक्षक सुरेंद्र पाल गुप्ता ने किया । मुख्य अतिथि के रूप में अनिल गुप्ता प्रांत कार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, वीरेंद्र सचदेवा प्रदेश भाजपा सतीश गर्ग प्रदेश भाजपा के कोषाध्यक्ष समेत अन्य पदाधिकारी समारोह में उपस्थित हुए। इस अवसर पर अनिल गुप्ता ने कहा कि राम का चरित्र, कर्तव्यनिष्ठ ,कर्म प्रधान, आदर्शों एवं मर्यादाओं से युक्त अति विनम्र व प्रेम प्रधान है।

वहीं सचदेवा ने कहा कि राम के आदर्शों को हमें अपने जीवन में अपनाना चाहिए। सतीश गर्ग ने कहा कि श्री राम के चरित्र का वर्णन शब्दों में तो हो ही नहीं सकता प्रभु श्रीराम अत्यंत शक्तिशाली थे किंतु उन्होंने कभी अपनी शक्तियों का दुरुपयोग नहीं किया तथा युद्ध में भी उन्होंने सदा मर्यादाओं का ही पालन किया।

संक्षिप्त समाचार

बदरपुर विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों का शुभारंभ करते रामबीर।

भाजपा सांसद ने विकास कार्यों का किया उद्घाटन

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली से भाजपा सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने बदरपुर विधानसभा क्षेत्र में 9 करोड़ रुपए की लागत से होने वाले विकास कार्यों का शुभारंभ किया। इन कार्यों में सड़कें, गलियां, नालियां और बारात घर शामिल हैं। इस मौके पर बिधूड़ी ने लोगों से दिल्ली में भी भाजपा की सरकार बनाने का अपील की । उन्होंने मोलड़बंद विस्तार के पहला 60 फुटा रोड के निर्माण कार्य का उद्घाटन किया। इसके अलावा हरिनगर के शुक्र बाजार-नाला रोड, आली ड्रेन से टंकी रोड तक के निर्माण कार्य का भी उद्घाटन किया। मीठापुर में डॉ. बाबा भीमराव अम्बेडकर के नाम से बारात घर के निर्माण कार्य की शुरुआत की। क्षेत्र की जनता ने इस सुविधा से बड़ी राहत महसूस की। इसी तरह मीठापुर में ही महाराणा प्रताप बारात घर के निर्माण कार्य का भी उद्घाटन किया।

भाजपा का बिजली के बढ़े बिल के खिलाफ प्रदर्शन

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने पूर्वी दिल्ली के चित्रा विहार की झुग्गी बस्तियों में बिजली के ज्यादा बिल और गंदे पानी की आपूर्ति को लेकर रविवार को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ प्रदर्शन किया। विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व करने वाले प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने झुग्गी बस्तियों में बुनियादी सुविधाओं के अभाव और बिजली, पानी के ज्यादा बिल तथा गंदे पानी की आपूर्ति का आरोप लगाया।सचदेवा ने कहा, इन झुग्गीवासियों की क्या गलती है कि उन्हें गंदा पानी मिल रहा है। वे दिल्ली में रहते हैं, जहां केजरीवाल झूठे वादे करते हैं और कोई वादा पूरा नहीं करते। झुग्गीवासी श्याम बाई ने कहा, समस्या यह है कि हमें साफ पानी नहीं मिल रहा है। वह यहां 40 साल से रह रहे हैं। कोई भी हमें रहने के लिए जगह नहीं दे रहा है। हम इतनी बड़ी मात्रा में बिजली बिल का भुगतान करके तंग आ चुके हैं। उन्होंने कहा, हमारे पास शौचालय के लिए जगह नहीं है। परिवार में 12 लोग हैं और हमें खाने के लिए केवल 15 किलोग्राम अनाज मिलता है। झुग्गी बस्ती में रहने वालीं ज्योति ने कहा कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि यहां कोई चिकित्सा सुविधा नहीं है। हम चाहते हैं कि यहां कम से कम एक स्वास्थ्य केंद्र हो ताकि हमें छोटी-मोटी स्वास्थ्य समस्याओं के लिए दूर न जाना पड़े।

'डेंगू से बचाव में चिरायता जड़ी-बूटी का सेवन होगा मददगार'

● डॉ. आर.पी पराशर के अनुसार एंटीवायरल गुणों से भरपूर है यह आयुर्वेदिक औषधि

डॉ आरपी पाराशर

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राजधानी में लगातार बारिश और मच्छरों के बढ़ने से डेंगू के मामले सामने आ रहे हैं, इस बीमारी से बचाव में चिरायता जड़ी-बूटी का सेवन कारगर व मददगार साबित हो सकता है। यह दावा दिल्ली नगर निगम के मुख्य चिकित्सा अधिकारी (आयुर्वेद) डॉ आरपी पाराशर ने किया है। डॉ. पाराशर ने बताया, आयुर्वेद के अनुसार भादो मास में चिरायता का सेवन करना चाहिए। यह एंटीवायरल गुणों से युक्त होता है। उन्होंने कहा कि यदि चिरायता का सेवन महीने भर कर लिया जाए तो डेंगू व अन्य वायरस रक्त में पहुंचने के बावजूद शरीर में संक्रमण उत्पन्न नहीं कर पाते हैं। इसके अलावा वर्षा ऋतु में पित्त दोष का संचय होता है और दो माह बाद शरद ऋतु इसका प्रकोप शुरू हो जाता है। ऐसे में चिरायता विरेचन पेट के पेट के विकारों को ठीक करने का कार्य अच्छी तरह से करता है और पित्त दोष से शरीर की शुद्धि विरेचन द्वारा ही की जाती है।

डॉ. आरपी पाराशर ने कहा, चिरायता सेवन करने से शुगर लेवल कंट्रोल में रहता है, कब्ज से राहत मिलती है, लिवर को डिटॉक्सिफाई करने में मदद मिलती है। चिरायता में मौजूद गुण पीलिया, खांसी, जुकाम, बुखार, जैसी समस्याओं को भी दूर रखते हैं। चिरायता से प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है।

डॉ. पाराशर ने कहा लगातार बारिश होने से डेंगू संक्रमण के मामले के अलावा दोहरे संक्रमण के रोगी भी खूब आ रहे हैं जिनमें जांच के बाद डेंगू के साथ कोई अन्य वायरल (जैसे हैपेटाइटिस) या बैक्टीरिया (जैसे टायफाइड) संक्रमण भी मिल रहा है। ऐसे मरीजों के इलाज में आयुर्वेदिक दवाएं कारगर हैं जिनका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है।

हरसिंगार का काढ़ा ऐसे बनाएं

काढ़ा बनाने के लिए हरसिंगार के 20 से 25 पत्ते आधा लीटर पानी में उबालें और पानी आधा रह जाने पर छानकर रख लें। यह काढ़ा बीस मिलीलीटर (चार चम्मच) की मात्रा में हर 2 घंटे के बाद रोगी को पिलाएं। काढे में हरसिंगार के पत्तों के साथ काली मिर्च, तुलसी और गिलोय को भी मिला सकते हैं।

इन औषधियों से मिलेगी राहत

डॉ. पाराशर के अनुसार बुखार के सभी रोगी पहले दिन से ही संजीवनी वटी, आरोग्यवर्धिनी वटी, महासुदर्शन चूर्ण, कालमेघ, भुंईआंवला, पपीते के पत्तों का रस, गिलोय का काढ़ा और हरसिंगार के पत्तों के काढ़े का प्रयोग करें ताकि डेंगू व अन्य कोई भी संक्रमण गंभीर स्थिति में न पहुंचे। बुखार आने पर पहले दिन से ही इन दवाओं का प्रयोग करने से डेंगू के मरीजों में न तो प्लेटलेट्स की संख्या ज्यादा घटेगी और न ही शरीर में ब्लीडिंग होगी । ये दवाऐं हर तरह के बुखार में लाभकारी हैं। इसके अतिरिक्त जय मंगल रस, हिंगुलेश्वर रस, शुण्ठी चूर्ण, आरोग्यवर्धिनी वटी, अमृताराष्ट, सुदर्शन चूर्ण, कुटकी, नवायस लौह, गुडूची सत्व आदि दवाएं भी डेंगू के इलाज में प्रभावी हैं। डेंगू की रिपोर्ट पॉजिटिव आने पर इन दवाओं का प्रयोग करें तो भी एक से दो दिन में प्लेटलेट्स की संख्या बढ़नी शुरू हो जाती है और शरीर में आंतरिक रक्तस्राव की संभावना भी समाप्त हो जाती है।

रेजिडेंट की सहायता के लिए एम्स ने हॉस्टल मेंटर पहल की घोषणा की

नई दिल्ली। छात्रावास में रहने वालों के जीवन की गुणवत्ता और सहायता को बढ़ाने के लिए कदम उठाते हुए एम्स-दिल्ली ने छात्रावास प्रणाली में संकाय सदस्यों की सहभागिता की पहल की घोषणा की है। यह कदम निवासियों की इस प्रतिक्रिया के बाद उठाया गया है कि संकाय को छात्रावास के नियमित कार्यों में अधिक शामिल होना चाहिए।

एम्स-दिल्ली के निदेशक डॉ. एम. श्रीनिवास ने कहा, हमारे छात्र और रेजिडेंट हमारे काम का मूल हैं और उनका स्वास्थ्य हमारा सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। हम आशा करते हैं कि प्रत्येक रेजिडेंट को मदद मिलेगी और उसकी बात सुनी जाएगी। उन्होंने कहा, यह पहल परवाह करने वाला और सहायक वातावरण बनाने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

वोट बनवाने का आज अंतिम दिन

पांच सितंबर 2024 को जारी होगी हरियाणा विधानसभा चुनाव की अधिसूचना

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

कॉलम खाली छोड़ने पर नामांकन हो सकता है रद्द

जिला निर्वाचन अधिकारी निशांत कुमार यादव ने कहा है कि भारत निर्वाचन आयोग व विधि मंत्रालय द्वारा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों के लिए दो शपथ पत्र, फॉर्म-26 में लगाने अनिवार्य थे, परंतु अब उनमें संशोधन करके इन दोनों शपथ पत्रों का प्रपत्र 26 में एक ही शपथ पत्र संकलित करके तैयार किया गया है। अब चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार अपने नामांकन पत्र के साथ नए नमूने में तैयार फार्म-26 में एक ही शपथ पत्र प्रस्तुत करेंगे जो नोटरी अथवा एग्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी के समक्ष शपथ लेनी है।

18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले ऐसे व्यक्ति फोटोयुक्त मतदाता सूची में अपने नाम दर्ज करवाने के लिए सोमवार 2 सितंबर तक आवेदन कर सकते हैं, जिनका मतदाता सूची में नाम दर्ज नहीं है। भारत निर्वाचन आयोग की हिदायतों अनुसार मतदाता सूचियों के संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत दावे एवं आपत्तियों के निपटारे के उपरांत 27 अगस्त को इन सूचियों का अंतिम प्रकाशन कर दिया गया है।

जिला निर्वाचन अधिकारी निशांत कुमार यादव ने कहा कि निर्वाचन आयोग की हिदायतों के अनुसार नए पात्र व्यक्तियों के नाम मतदाता सूचियों में दर्ज करने के लिए आज 2 सितंबर अर्थात हरियाणा विधानसभा आम चुनाव 2024 के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि से 10 दिन पूर्व तक आवेदन स्वीकार किये जायेंगे। निर्वाचन आयोग सभी पात्र व्यक्तियों की चुनाव में हिस्सेदारी का पक्षधर है ताकि लोकतंत्र को और सुदृढ़ किया जा सके। उन्होंने कहा है कि जिला प्रशासन द्वारा सभी पात्र व्यक्तियों विशेषकर युवाओं के नाम मतदाता सूचियों में दर्ज करने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयास किये जा रहे है। डीसी निशांत कुमार यादव ने कहा है कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा हरियाणा विधानसभा के लिए की गई आम चुनाव की घोषणा के तहत प्रदेश में 5 सितंबर को चुनाव की अधिसूचना जारी की जायेगी। अधिसूचना जारी होते ही नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया शुरू हो जायेगी, जो 12 सितंबर को संपन्न होगी। इच्छुक उम्मीदवार निर्धारित तिथि को सुबह 11 से दोपहर 3 बजे तक संबंधित रिटर्निंग अधिकारी के कार्यालय में नामांकन पत्र दाखिल कर सकेंगे।

जिला निर्वाचन अधिकारी निशांत कुमार यादव ने कहा है कि हरियाणा विधानसभा के आम चुनाव के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 5 सितंबर से 12 सितंबर तक इच्छुक उम्मीदवार नामांकन दाखिल कर सकेंगे।

नामांकन पत्रों की जांच का कार्य 13 सितंबर को किया जायेगा तथा 16 सितंबर तक उम्मीदवार नामांकन पत्र वापिस ले सकेंगे। हरियाणा विधानसभा आम चुनाव के लिए 5 अक्तूबर को मतदान होगा तथा 8 अक्तूबर को मतगणना के उपरांत परिणाम घोषित किये जायेंगे। हरियाणा विधानसभा आम चुनाव की प्रक्रिया 10 अक्तूबर को संपन्न होगी।

दो दिवसीय स्वतंत्रता सेनानी सम्मेलन 14 से हरिद्वार में

गुरुग्राम। स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी समिति की मासिक बैठक का आयोजन रविवार को सिविल लाइंस स्थित स्वतंत्रता सेनानी स्मारक भवन में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में वरिष्ठ अधिवक्ता संतोख सिंह व समिति के पदाधिकारी तथा सदस्य शामिल हुए। समिति के अध्यक्ष कपूर सिंह दलाल ने बताया कि स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई। उन्होंने बताया कि इसी माह हरिद्वार में 14 सितम्बर से 2 दिवसीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा, जिसमें गुरुग्राम से भी बड़ी संख्या में स्वतंत्रता सेनानी परिवारों के सदस्य भी शामिल होंगे। इस सम्मेलन को उत्तराखंड सरकार भी सहयोग कर रही है। कई प्रदेशों के मुख्यमंत्री व केंद्रीय मंत्री भी इस सम्मेलन में शामिल होंगे। उनका कहना है कि सम्मेलन में स्वतंत्रता सेनानी परिवारों से जुडे मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

शुभम ने जर्मनी में बढ़ाया देश का मान

- बल्लभगढ़ के निशानेबाज ने 10 मीटर एयर पिस्टल में कांस्य व रजत पदक जीते
- जर्मनी में चल रही है दूसरी विश्व मूक बधिर शूटिंग चैम्पियनशिप

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

जर्मनी में चल रहे दूसरे विश्व बधिर शूटिंग चैंपियनशिप में शनिवार को बल्लभगढ़ से शुभम वशिष्ठ ने 10 मीटर एयर पिस्टल एकल स्पर्धा में कांस्य पदक व 10 मीटर एयर पिस्टल टीम स्पर्धा में रजत पदक जीतकर देश का नाम ऊंचा किया। अगली प्रतियोगिता 4 सितंबर व 6 सितंबर को होगी।

बल्लभगढ़ की भीकम कॉलोनी में रहने वाले 25 वर्षीय शुभम वशिष्ठ की इस सफलता से परिजन ही नहीं, अपितु इलाके के लोगों में खुशी का आलम बना हुआ है। इस कामयाबी के लिए खिलाड़ी के घर बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। इस समय पिता एवं व्यवसायी दिनेश शर्मा व माता सुषमा शर्मा शुभम के साथ जर्मनी में ही है।

शुभम जन्म से ही मूक बधिर है। वह इशारे व लिप्सिंग से ही बात करता व समझता है। रावल कॉन्वेंट स्कूल से 12वीं पास करने के बाद उन्होंने अग्रवाल कॉलेज बल्लभगढ़ से बी कॉम ऑनर्स और एम कॉम की पढ़ाई की। लेकिन पढ़ाई के साथ-साथ वे अपने शूटिंग प्रैक्टिस पर भी पूरा ध्यान देते रहे।

शुभम की शूटिंग यात्रा 2017 में शुरू हुई, जब वो महज 17 साल के थे। उन्होंने बल्लभगढ़ की 10× शूटिंग अकादमी में कोच राकेश सिंह के मार्गदर्शन में 10 मीटर एयर पिस्टल की ट्रेनिंग लेना शुरू किया। अपने पहले ही स्टेट लेवल टूर्नामेंट (हरियाणा स्टेट शूटिंग चैंपियनशिप 2017) में शुभम ने 10 मीटर एयर पिस्टल मेन्स कैटेगरी में दूसरा स्थान हासिल किया था। 2018 से शुभम ने नेशनल गेम्स में हिस्सा लेना शुरू किया। इसी साल उन्होंने ब्राजील में हुए 24वें डेफलिंपिक्स (डेफ ओलिंपिक्स) 2022 में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीकृष्ण की मनाई छठी

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

श्रीकृष्ण जी की छठी कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालु।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव यानि कि कृष्ण जन्माष्टमी के बाद भगवान श्रीकृष्ण की छठी का आयोजन शहर के सैक्टर 9ए स्थित श्री गौरी शंकर मंदिर, सैक्टर 4 स्थित श्रीकृष्ण मंदिर, सूर्य विहार के माता वैष्णों मंदिर सहित आदि मंदिरों में किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और बड़े भक्ति भाव से लड्डू गोपाल की पूजा-अर्चना भी की तथा भजन कीर्तन का आयोजन भी किया। सैक्टर 9ए स्थित श्रीगौरी शंकर मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण की छठी का आयोजन किया गया। जिसमें क्षेत्र की महिला श्रद्धालुओं ने बढ़-चढकर भाग लिया। जैसे परिवार में जन्मे बच्चे की छठी मनाई जाती है, उसी प्रकार से भगवान श्रीकृष्ण की भी छठी मनाई गई। प्रसाद भी श्रद्धालुओं को वितरित किया गया। मंदिर के आचार्य हरीश उपाध्याय ने भगवान श्रीकृष्ण की छठी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भगवान कृष्ण का जन्म कंस के कारागार में हुआ था।

वासुदेव ने रातोंरात भगवान कृष्ण को नंद के घर गोकुल गांव में पहुंचा दिया था। कंस जब कारागार में आया तो उसको बताया गया था कि देवकी ने लडक़ी को जन्म दिया है और कंस ने उस लडक़ी को भी मार दिया था। पंडित जी का कहना है कि दुष्ट कंस ने राक्षसी पूतना को आदेश दिया कि जितने भी 6 दिन के बच्चे हैं, उनको मार दिया जाए। जब पूतना गोकुल गांव पहुंची तो यशोदा ने बाल कृष्ण को छिपा दिया था। जब वे 6 दिन के हो गए थे तो उनकी छठी नहीं हो पाई थी और न ही नामकरण हुआ था। बताया जाता है कि यशोदा ने माता पार्वती का ध्यान किया और उनसे बाल कृष्ण की सुरक्षा की प्रार्थना भी की।

स्वास्थ्य शिविर में सैकड़ों लोगों ने कराई जांच

फरीदाबाद। गांव महमूदपुर में पूर्व सरपंच रामसिंह नेताजी, वरिष्ठ समाजसेवी सतबीर कसाना तथा अपोलो अस्पताल के सहयोग से कसाना फार्म हाऊस पर स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 200 से ज्यादा लोगों ने अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई। लोगों के स्वास्थ्य की जांच अपोलो अस्पताल के अनुभवी डॉक्टरों की टीम द्वारा की गई। स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन सुबह 7 बजे से दोपहर 3 बजे तक किया गया। शिविर में हर आयु वर्ग के लोगों ने लाभ उठाया। कैंप में 200 से ज्यादा लोगों ने अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई। पूर्व सरपंच रामसिंह नेताजी, वरिष्ठ समाजसेवी सतबीर कसाना ने बताया कि मानव सेवा एवं समाज सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। जब भी मौका मिलता है, इस तरह के शिविर के माध्यम से लोगों की सेवा करते हैं। जिससे अबतक हजारों लोग लाभान्वित हो चुके हैं। शिविर में अपोलो अस्पताल के डा. पी.एन. रंजन न्यूरोलॉजी, डा. दिनेश चौधरी न्यूरोलॉजी, डा. अविनाश गोस्वामी, डा. श्रेस्ता सिंह, योगेश व उनकी टीम ने लोगों के स्वास्थ्य की जांच की। शिविर में 200 मरीजों के ब्लड प्रेशर, शुगर, ईसीजी एवं अन्य बीमारियों की जांच पड़ताल कर मुफ्त चिकित्सा सेवा का लाभ उठाया।

बसपा-इनेलो गठबंधन से घबराए सभी दल: वशिष्ठ

- पृथला विधानसभा में भारी मतों से विजयी होगा गठबंधन का प्रत्याशी

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

बैठक में मौजूद बसपा नेता सुरेंद्र वशिष्ठ व प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज चौधरी।

पृथला विधानसभा क्षेत्र के आल्हापुर स्थित पंचवटी ढाबा में बसपा कार्यकर्ताओं की एक बैठक आयोजित की गई। जिसमें भारी संख्या में कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस सम्मेलन में पहुंचे बसपा पृथला विधानसभा के मुख्य प्रभारी एवं वरिष्ठ नेता सुरेंद्र वशिष्ठ का कार्यकर्ताओं ने फूल मालाओं से स्वागत किया। इस दौरान प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज चौधरी भी बतौर मुख्यअतिथि मौजूद रहे।

बसपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए सुरेंद्र वशिष्ठ ने कहा कि इस बार बसपा इनेलो गठबंधन से सभी पार्टियों के नेता घबराए हुए हैं और उनमें भगदड़ मची हुई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में यह गठबंधन पहले से भी ज्यादा मजबूत है। पहले भी वर्ष 1998 में बसपा इनेलो गठबंधन हुआ था, जिसमें इनेलो व बसपा के बलबूते ही सरकार बनी थी। इस बार भी प्रदेश में बसपा व इनेलो गठबंधन की ही सरकार बनने जा रही है। वशिष्ठ ने कहा कि बसपा इनेलो गठबंधन का मैनिफेस्टो बसपा सुप्रीमो मायावती और इनेलो के राष्ट्रीय महासचिव अभय सिंह चौटाला ने बैठकर तैयार किया है।

इस मौके पर बसपा के प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज चौधरी ने कार्यकर्ताओं से कहा कि अब समय आ गया है, बसपा इनेलो गठबंधन की सरकार बनाने का। पर वह तभी मुमकिन हो पाएगा, जब सभी कार्यकर्ता एकजुट होकर मेहनत करें। बीएसपी हरियाणा में तीसरे नंबर की पार्टी है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि पृथला के सभी कार्यकर्ता घर घर जाएं और पृथला प्रत्याशी के लिए वोट मांगे, ताकि गठबंधन का प्रत्याशी भारी मतों से जीते। इस मौके पर सुशील काले, एनपी सिंह बघेल, सुशील कटारिया, कमल दत्त गौतम, कर्ण सिंह, शिव लाल गौतम आदि मौजूद थे।

राजेश नागर को भुआपुरवासियों ने दिया समर्थन

- विधायक बोले, आपकी सेवा में कोई कमी नहीं छोड़ी, फिर भी रह गई हो तो इस बार पूरी कर दूंगा

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

तिगांव के भाजपा विधायक राजेश नागर का गांव भुआपुर में जोरदार स्वागत हुआ। रैबारी चौपाल पर आयोजित कायक्रम में गांव की सरदारी जुटी। वर्तमान एवं पूर्व के सरपंच भी जुटे और विधायक को पूर्ण समर्थन की बात कही। गांव के बुजुर्गों ने सर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दे दिया।

जब राजेश नागर चौपाल के नजदीक पहुंचे तो गांव के उत्साही युवकों ने उन्हें कंधों पर बैठा लिया और जोरदार नारेबाजी करते हुए कार्यक्रम स्थल तक पहुंचे। जहां सभी ने विधायक को फूलमालाओं और पगड़ी के साथ अभिनंदन किया। इस अवसर पर नागर ने कहा कि वह गांव के सभी लोगों से परिचित हैं और 2019 में भारी मतों के साथ मुझे विधानसभा पहुंचाने के लिए आभार व्यक्त करता हूं। आपसे तीसरी बार सरकार बनाने के लिए समर्थन मांगने के लिए आया हूं। जिस पर सभी ने हाथ उठाकर पूरा समर्थन देने की बात कही।

विधायक राजेश नागर ने कहा कि आपके गांव के रोड दशकों से नहीं बनाए जा रहे थे लेकिन आपने मुझे ताकत दी। उसके साथ मैंने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के आशीर्वाद से लगभग सभी सड़कों को बना दिया है वहीं फिरनियों को भी पक्का किया गया है। आगे भी आप लोग कोई आदेश करेंगे, उस काम को प्राथमिकता के साथ करेंगे। आप लोग हरियाणा में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनाने के लिए मुझे अपना आशीर्वाद दें।

6 से 15 सितंबर तक मनेगा गणेश उत्सव, 7 को किए जाएंगे स्थापित

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

महाराष्ट्र मित्र मंडल द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सार्वजनिक श्री गणेश उत्सव 06 सितम्बर से 15 सितम्बर तक गांधी कॉलोनी स्थित समुदाय भवन में मनाया जा रहा है। जिसमें श्री गणेश प्रतिमा शाडू मिट्टी से बनाई जा रही है।

मूर्तिकार लक्ष्मण पांचाल ने बताया की यह मिट्टी खास तोर पर वह महाराष्ट्र से मंगवाते है और इस मिट्टी से बनी प्रतिमा विसर्जन के बाद केवल 4-5 घंटे में पानी में घुल जाती है द्य महाराष्ट्र मित्र मंडल के संरक्षक सुधाकर पांचाल, अध्यक्ष राजेन्द्र पांचाल एवं मंडल के सचिव चिंतामणि ने बताया की मंडल द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है द्य

शुक्रवार 06 सितम्बर को श्री गणेश प्रतिमा की आगमन शोभायात्रा सायं 4 बजे 5 बी-81 से प्रारम्भ होकर एन.आई.टी. 5 मार्किट से होते हुए उत्सव स्थल तक पहुंचेगी, शनिवार 07 सितम्बर को श्री गणेश प्रतिमा की पुरे विधि विधान एवं मंत्रोच्चार के साथ स्थापना सुबह 10 बजे से की जाएगी एवं रात्रि 8 बजे से मंडल द्वारा भजन संध्या का आयोजन किया जायेगा, रविवार 08 सितम्बर दोपहर 12 बजे से मंडल द्वारा निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन सर्वोदय होस्पितल के सौजन्य से किया जायेगा एवं रात्रि 8 बजे से मंडल द्वारा हास्य संध्या का आयोजन किया गया है, सोमवार 09 सितम्बर को मंडल द्वारा रात्रि 8 बजे से भजन संध्या का आयोजन किया गया है, मंगलवार 10 सितम्बर रात्रि 8 बजे से सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया है, बुधवार 11 सितम्बर को प्रात: 11 बजे से चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा जिसमें 5 से 12 आयु वर्ग के बच्चे भाग ले सकते एवं रात्रि 8 बजे से बच्चो के रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, गुरुवार 12 सितम्बर को मंडल द्वारा रात्रि 8 बजे से भजन संध्या का आयोजन किया गया है।

लोगों को जागरूक करेगा डेरा सच्चा सौदा

सिरसा/बरनावा। पूज्य गुरु संत डा. गुरमीत राम रहीम सिंह जी इन्सां का पवित्र गुरु गद्दीनशीनी दिवस का शुभ भंडारा रविवार को सिरसा सहित देश-दुनिया में डेरा सच्चा सौदा की साध-संगत ने एमएसजी महापरोपकार दिवस के रूप में बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया। शाह सतनाम-शाह मस्तान जी धाम व मानवता भलाई केंद्र डेरा सच्चा सौदा सिरसा सहित देश के अलग-अलग राज्यों व विदेशों में 50 से अधिक देशों की डेरा सच्चा सौदा से जुड़ी साध-संगत ने ऑनलाइन गुरुकुल के माध्यम से भंडारे कार्यक्रम से जुड़ी और पूज्य गुरु जी के अनमोल वचनों को श्रवण किया। उत्तर प्रदेश के जिला बागपत स्थित एमएसजी डेरा सच्चा सौदा व मानवता भलाई केंद्र शाह सतनाम जी आश्रम बरनावा से पूज्य गुरु संत डा. गुरमीत राम रहीम सिंह जी इन्सां ऑनलाइन गुरुकुल के माध्यम से साध-संगत को संबोधित किया।

डेरा सच्चा सौदा में गुरु गद्दी दिवस कार्यक्रम में पहुंची संगत।

संक्षिप्त समाचार

बैठक को सम्बोधित करते सभा के प्रधान ओमप्रकाश गुप्ता।

महाराजा अग्रसेन जयंती 3 से 27 अक्टूबर तक मनेगी

पलवल। प्रमुख सामाजिक संस्था श्री वैश्य अग्रवाल सभा पलवल आगामी 3 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक बड़े ही धूमधाम से महाराजा अग्रसेन जयंती मनाएगी। इसके साथ ही वैश्य अग्रवाल परिवार मिलन, ओमैक्स सिटी में सभा द्वारा नव निर्मित बहुउद्देशीय सामुदायिक केंद्र महाराजा अग्रसेन सेवा सदन के प्रांगण में स्थापित की गई महाराजा अग्रसेन की भव्य प्रतिमा का अनावरण एवं महाराजा अग्रसेन सेवा सदन के दुसरे चरण के निर्माण का शिलान्यास भी किया जाएगा। यह निर्णय रविवार को महाराजा अग्रसेन सेवा सदन में आयोजित श्री वैश्य अग्रवाल सभा की बैठक में सर्व सम्मत्ति से लिया गया। बैठक की अध्यक्षता सभा के प्रधान ओमप्रकाश गुप्ता ने की जबकि बैठक संचालन सभा के मंत्री शैलेंदर सिंगला ने किया। इस अवसर पर सभा के सदस्य चंद्रप्रकाश गोयल एडवोकेट (कोषाध्यक्ष), सत्य प्रकाश मित्तल, महावीर गोयल, ओमकार मंगला, दिनेश कुमार अग्रवाल, पंकज गोयल, राजकुमार बंसल, मास्टर घनश्याम दास, शिवकुमार सिहोल वाले, कमल कुमार मंगला, अनिल कुमार गुप्ता, वेद प्रकाश मित्तल, चंदीराम गुप्ता पूर्व पार्षद, यशपाल मंगला, कंवरलाल गुप्ता, अनुभव मंगला, महेंद्र गर्ग शास्त्री, महेंद्र प्रसाद सिंगला, रवि गुप्ता (युवा संयोजक), पूर्व पार्षद बलराम गुप्ता, श्रीमती पूनम बंसल, सुभाष गुप्ता एवं राजेश बंसल ने अपने अपने विचार रखे तथा सुझाव दिए। बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार विभिन्न कार्यक्रम के आयोजनों के लिए कार्यक्रम तय करके अलग अलग संयोजक भी नियुक्त किये जायेंगे। वहीं सभा के सदस्य घर घर जाकर वैश्य समाज के लोगों को आमंत्रण करेंगे।

गुरु अमरदास को पुण्यतिथि पर किया गया याद

गुरुग्राम। गुरु अमरदास सिखों के तीसरे गुरु थे। उन्हें 73 वर्ष की आयु में गुरु नियुक्त हुए। गुरु अमरदास पंजाब को 22 सिख प्रांतों में बांटने की अपनी योजना तथा धर्म प्रचारकों को बाहर भेजने के लिए प्रसिद्ध हुए। वह अपनी बुद्धिमत्ता तथा धर्मपरायणता के लिए बहुत सम्मानित थे। उनकी पुण्यतिथि पर उन्हें याद करते हुए सिख समुदाय के लोगों ने कहा कि उनका जन्म 5 अप्रैल 1479 अमृतसर के बसरका गांव में हुआ था। गुरु अमरदास ने सती प्रथा का प्रबल विरोध किया। जहां उन्होंने विधवा विवाह को बढावा दिया, वहीं उन्होंने महिलाओं को पर्दा प्रथा त्यागने के लिए प्रोत्साहित भी किया। वक्ताओं ने कहा कि मुगल शंहशाह अकबर भी उनसे सलाह लेते थे और उनके जाति निरपेक्ष लंगर में अकबर ने भी भोजन ग्रहण किया था। वक्ताओं ने कहा कि गुरु अमरदास ने गुरु नानक महाराज के जीवन दर्शन को उनके द्वारा स्थापित धार्मिक विचारधारा को आगे बढ़ाया। उन्होंने समाज में फैले अंधविश्वास और कर्मकाण्डों में फंसे समाज को सही दिशा दिखाने का प्रयास भी किया। उन्होंने लोगों को समझाया कि सभी इंसान एक दूसरे के भाइ हैं। सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं, फिर ईश्वर अपनी संतानों में भेद कैसे कर सकता है। गुरु अमरदास के कुछ पद गुरु ग्रंथ साहब में संग्रहित हैं। इनकी एक प्रसिद्ध रचना आनंद है, जो उत्सवों में गाई जाती है। उनका निधन 1 सितम्बर 1574 को अमृतसर में हो गया था। वक्ताओं ने समुदाय के लोगों से आग्रह किया कि वे गुरु अमरनाथ के दिखाए रास्ते पर चलें, ताकि देश व समाज का भला हो सके।

अहं ब्रह्मास्मि के प्रथम वार्षिकोत्सव पर हुए कई सांस्कृतिक कार्यक्रम

गुरुग्राम। अहं ब्रह्मास्मि-नव उद्घोष संस्था तथा भारतीय ज्ञान एवं भाषा विभाग गुरुग्राम विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में अहं ब्रह्मास्मि-नव उद्घोष का प्रथम वार्षिकोत्सव गुरुग्राम विश्वविद्यालय सेक्टर-51 के कलाम कक्ष में बेहद शानदार ढंग से सम्पन्न हुआ।

जहां कार्यक्रम की अध्यक्षता स्टॉरेक्स विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. अशोक दिवाकर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व सेशन जज बलजीत सिंह उपस्थित रहे। अति विशिष्ट अतिथि के रूप में सीसीए विद्यालय की डायरेक्टर प्रिंसिपल निर्मल यादव, गुरुग्राम विश्वविद्यालय के डीन राजेश कुमार योगी, वरिष्ठ साहित्यकार व शिक्षाविद् मदन साहनी, आदर्श ग्रुप्स ऑफ स्कूल के डायरेक्टर प्रिंसिपल ओमवीर सिंह तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार वीणा अग्रवाल, सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं समाजसेवी शंभू पवार, अधिवक्ता एवं सुप्रसिद्ध समाजसेवी अलका दलाल, सुप्रसिद्ध कवयित्री मास्को से पधारीं श्वेता सिंह उमा ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम के प्रारंभ में संस्थापिका अध्यक्षा सुप्रसिद्ध साहित्यकार व शिक्षाविद् दीपशिखा श्रीवास्तव दीप द्वारा सभागार में उपस्थित सभी आदरणीय अतिथियों, साहित्यकारों पत्रकारों, तथा आत्मीयजनों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत करते आयोजक।

वंचित समाज ने किया कोर्ट के फैसले का स्वागत

- एसडीएम को ज्ञापन सौंपा, मार्शल भीम आर्मी बनाने के प्रस्ताव पर मुंहर

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

समस्त वंचित अनुसूचित जाति समाज की सभा एवं संवैधानिक अधिकार न्याय यात्रा का आयोजन दौलत राम धर्मशाला एनआईटी फरीदाबाद में किया गया जिसमें पलवल, मेवात व फरीदाबाद के हजारों वंचित समाज के लोगों ने भाग लेकर सर्वोच्च न्यायलय के ऐतिहासिक निर्णय का स्वागत किया और जल्दी से जल्दी समस्त वंचित अनुसूचित जाति आरक्षण वर्गीकरण को लागू करवाने के लिए केन्द्र सरकार से पुरजोर मांग की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवानिवृत न्यायधीश पवन कुमार ने की। कार्यक्रम में सेवानिवृत तहसीलदार प्रताप सिंह, पूर्व डीसीपी पूरन चन्द पंवार, एडीए हरकेश, रमेश लुहेरा, रमेश शारिया, जय सिंह राणा, पूर्व सरपंच संजीव, शान बाबूजी, राजेन्द्र प्रधान वाल्मीकि मंदिर कमेटी, जसविन्द्र पहलवान बली सेना, विनय प्रकाश, जितेन्द्र आर्य, संजय मेहरोलिया, किरणपाल हरियाणा वाल्मीकि महासभा प्रदेश उपाध्यक्ष, सचिन सरपंच भनकपुर, कर्मवीर, प्रवीन मोरिया व सुभाष गहलोत ने एक सुर में कहा कि हम संविधान के दायरे में रहकर अपना हक लेंगे। पूर्व न्यायधीश पवन कुमार ने कहा कि आरक्षण वर्गीकरण के बारे में फैसला सर्वोच्च न्यायालय द्वारा लिया गया है, जिससे समस्त डीएससी समाज में खुशी है। पूर्व तहसीलदार प्रताप सिंह, पूर्व डीसीपी पूरन चन्द पंवार, एडीए हरकेश ने कहा कि इस फैसले से सदियों से सिर पर मैला ढोने व हाथों में झाड़ू लेकर देश को स्वच्छ रखने वाले डीएससी समाज के घरों में भी आरक्षण की रोशनी पहुंचेगी।

गुरुग्राम जेल अधीक्षक सांगवान का इस्तीफा

दादरी से चुनाव लड़ने की चर्चा, एसीएस को वीआरएस के लिए लिखा पत्र, हरियाणा सरकार आज ले सकती है फैसला

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

भोंडसी (गुरुग्राम) जेल सुपरिटेंडेंट सुनील सांगवान ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने सरकारी सेवाओं से वीआरएस लेने के लिए रविवार को गृह व जेल विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी को पत्र भेजा है। सुनील सांगवान के इस्तीफे पर सोमवार को हरियाणा सरकार कोई फैसला ले सकती है।

जेल विभाग में साढ़े 22 वर्षों की सेवाओं के बाद अब सुनील सांगवान अपने पिता व पूर्व सहकारिता मंत्री सतपाल सांगवान की तरह राजनीति में एंट्री करेंगे। सतपाल सांगवान टेलीकॉम डिपार्टमेंट में एसडीओ के पद पर कार्यरत थे। भूतपूर्व मुख्यमंत्री चौ. बंसीलाल के सबसे नजदीकियों में सतपाल सांगवान की गिनती होती है। 1996 में बंसीलाल के कहने पर ही सतपाल सांगवान ने एसडीओ की नौकरी से इस्तीफा दिया था। इस्तीफा देने के एक दिन बाद ही उन्होंने हरियाणा विकास पार्टी (हविपा) की टिकट पर चरखी दादरी से नामांकन दाखिल किया। वे अपना पहला ही चुनाव जीतने में कामयाब रहे। 2009 में भी सतपाल सांगवान दादरी से विधायक बने और उस समय हुड्डा सरकार में पांच वर्षों तक सहकारिता एवं आवास मंत्री रहे। लोकसभा चुनावों से पहले जब पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने सतपाल सांगवान को भाजपा ज्वाइन करवाई थी तो उनकी इसके लिए सार्वजनिक तौर पर प्रशंसा भी की थी।

चरखी दादरी के विकास के लिए हमेशा आवाज उठाते रहे सतपाल सांगवान की राजनीति को अब उनके बेटे सुनील सांगवान आगे बढ़ाएंगे। सूत्रों का कहना है कि भाजपा सुनील सांगवान को चरखी दादरी से विधानसभा चुनाव लड़वा सकती है। माना जा रहा है कि इस्तीफा मंजूर होते ही सुनील सांगवान भाजपा भी ज्वाइन कर लेंगे। 2 जनवरी 2002 को सुनील सांगवान ने जेल विभाग में बतौर डिप्टी सुपरिटेंडेंट सरकारी सेवाओं की शुरुआत की थी। उनकी पहली पोस्टिंग गुरुग्राम की भोंडसी जेल में ही हुई थी। संयोग से आज उन्होंने उसी जेल के सुपरिटेंडेंट रहते हुए इस्तीफा दिया है। गुरुग्राम, फरीदाबाद, रोहतक, सोनीपत व झज्जर जैसी उन जेलों में सुनील सांगवान ने बतौर सुपरिटेंडेंट सेवाएं दी हैं।

एचएसएससी के खिलाफ पोस्ट डालने पर शिक्षा विभाग सख्त

● पानीपत के डीईपी दिनेश चौधरी को कारण बताओ नोटिस जारी

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

आचार संहिता के चलते हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग की भर्तियों पर पेंच फंसा हुआ है। हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग की भर्तियां अटकने से बेरोजगार सोशल मीडिया पर खूब हमला बोल रहे हैं। आयोग की ओर से भर्तियों की लिखित परीक्षा दी जा रही है। वहीं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय उंझा पानीपत में कार्यरत शारीरिक शिक्षा पीजीटी दिनेश कुमार को शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव विनीत गर्ग ने कारण बताओ नोटिस जारी किया है।

शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव की ओर से जारी किए गए कारण बताओ नोटिस पर शिक्षक को 15 दिन के भीतर जवाब देना होगा। दरअसल, शिक्षा विभाग के पास शिकायत पहुंची कि शिक्षक दिनेश कुमार सोशल मीडिया पर हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के खिलाफ पोस्ट डाल रहा है। खासकर फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर और यू-ट्यूब के जरिये आयोग के खिलाफ नकारात्मक संदेश फैला रहा है और भर्तियों पर युवाओं को गुमराह कर रहा है। चुनाव की घोषणा होने और आचार संहिता लागू होने के बावजूद भी भर्तियों की प्रक्रिया निरंतर जारी है, इसके बावजूद भी शिक्षक आयोग के खिलाफ नकारात्मक संदेश फैला रहा है। शिक्षक के सोशल मीडिया पर पोस्ट किए जा रहे संदेशों से युवा भ्रमित हो रहे हैं। यही नहीं सोशल मीडिया पर चैट के माध्यम से भी युवाओं को गुमराह किया जा रहा है। शिक्षा विभाग ने सरकारी कर्तव्यों के निर्वहन की उल्लंघना मानते हुए शिक्षक को नोटिस जारी कर आगामी 15 दिन के भीतर नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा है।

शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव की ओर से स्पष्ट हिदायत दी गई है कि 15 दिन की अवधि के भीतर स्पष्टीकरण न देने पर शिक्षक के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

बच्चों को करियर विकल्प के बारे में बताया

● सराय ख्वाजा स्कूल में विशेष कार्यक्रम हुआ आयोजित

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

गवर्नमेंट मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल सराय ख्वाजा, फरीदाबाद में जूनियर रेडक्रॉस, सैंट जॉन एंबुलेंस ब्रिगेड ने प्राचार्य रविंद्र कुमार मनचंदा की अध्यक्षता में करियर विकल्प बारे विशेष कार्यक्रम आयोजित किया।

प्राचार्य रविंद्र कुमार मनचंदा ने बताया कि लोकमान सिंह के सौजन्य से विद्यार्थियों के लिए करियर काउंसलिंग सेमिनार का आयोजन किया। इस आयोजन में विद्यालय के 2700 से भी अधिक नवीं से बारहवीं कक्षा के कला, विज्ञान और वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों ने करियर विकल्पों के विषय में ज्ञान अर्जित किया। विद्यालय की जूनियर रेडक्रॉस, सैंट जॉन एंबुलेंस ब्रिगेड अधिकारी और प्राचार्य मनचंदा ने बताया कि बहुत अधिक छात्रों को यह ज्ञान नहीं होता कि बारहवीं उपरांत उन्हें मेडिकल, नान मेडिकल, इंजीनियरिंग, एन डी ए अथवा एकेडमिक ग्रेजुएट सहित किस विषय का चयन करना चाहिए। प्राचार्य मनचंदा और काउंसलर लोकमान सिंह ने कहा कि आप अपना लक्ष्य निर्धारित कीजिए और अपनी रुचि के अनुसार अपने विषय और कैरियर विकल्पों का चयन करें।

आप विज्ञान, वाणिज्य, सी ए, कला के माध्यम से अनेकों विषयों का चयन करके उच्च शिक्षा प्राप्त करके अपना करियर बना सकते हैं। आप देश सेवा के लिए भारतीय सेना में एन डी ए अथवा सी डी एस के माध्यम से भी भारतीय सेना, इंडियन नेवी और इंडियन एयर फोर्स में भी अपनी सेवाएं दे सकते हैं। काउंसलर्स ने भी इंजीनियरिंग शिक्षा और चिकित्सा एवं इन से संबंधित इंजीनियरिंग, चिकित्सा, नर्सिंग, हॉस्पिटैलिटी सहित अन्य क्षेत्रों में भी उपलब्ध कैरियर विकल्पों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी विद्यार्थियों को दी। प्राचार्य मनचंदा ने आए सभी काउंसलर्स और अपने सभी अध्यापकों का विद्यार्थियों को करियर विकल्प बारे जागरूक करने के लिए आभार और धन्यवाद व्यक्त किया।

इनेलो ने 7 विधानसभा उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी की

चंडीगढ़। इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री चौ. ओम प्रकाश चौटाला से विचार विमर्श के बाद इनेलो प्रदेशाध्यक्ष रामपाल माजरा ने रविवार को सात विधानसभा उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी की। कलायत विधानसभा हलका से रामपाल माजरा, लाडवा विधानसभा हलका से शेर सिंह बड़शामी, नारनोंद विधानसभा हलका से उमेद लोहान, बहादुरगढ़ विधानसभा हलका से पूर्व विधायक स्वर्गीय नफ़े सिंह राठी की धर्मपत्नी श्रीमती शीला राठी, रानिया विधानसभा हलका से अर्जुन सिंह चौटाला, हथीन विधानसभा हलका से तैयब हुसैन भीमसीका और कालांवाली विधानसभा हलका से मास्टर गुरतेज सिंह सुखचैन को उम्मीदवार घोषित किया गया है।

इस दूसरी सूची के 7 उम्मीदवारों समेत इनेलो के 10 और बसपा के 4 उम्मीदवारों को मिलाकर अब तक कुल 14 उम्मीदवारों की घोषणा की जा चुकी है।

वीसी ने किया शिक्षकों को एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित

● मानव मंगल ग्रुप ऑफ स्कूल्स और डॉ. जीसी मिश्रा मेमोरियल एजुकेशनल एंड चैरीटेबल ट्रस्ट ने आयोजित किया समारोह, 11 शिक्षकों को मिला सम्मान

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

ग्रुप ऑफ स्कूल्स की ओर से डॉ. जीसी मिश्रा मेमोरियल एजुकेशन एवं चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से शिक्षक दिवस के मौके पर आयोजित किए गए पांचवें टीचर्स एक्सीलेंस अवार्ड समारोह में 11 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। समारोह में ट्राईसिटी के अलावा पंजाब और हरियाणा के शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया।

मानव मंगल स्मार्ट स्कूल के सभागार में हुए इस अवार्ड समारोह में सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ पंजाब, बठिंडा के वाइस चांसलर और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला के डॉयरेक्टर आचार्य (प्रो.) राघवेंद्र पी तिवारी मुख्य अतिथि थे जबकि एमिटी यूनिवर्सिटी, मोहाली के वाइस चांसलर और सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ पंजाब, बठिंडा के पूर्व वाइस चांसलर प्रो.आरके कोहली सम्मानित अतिथि के तौर पर मौजूद थे। इस मौके पर एमिटी यूनिवर्सिटी, मोहाली के रजिस्ट्रार डॉ.दलीप कुमार और मोहाली की जिला शिक्षा अधिकारी डॉ.गिन्नी दुग्गल भी मौजूद थीं। साथ ही मानव मंगल ग्रुप ऑफ स्कूल्स के डॉयरेक्टर संजय सरदाना, मानव मंगल हाई स्कूल, चंडीगढ़ की एडमिनिस्ट्रेटर अंजलि सरदाना और डॉ. जीसी मिश्रा मेमोरियल एजुकेशन एवं चैरिटेबल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी मयंक मिश्रा भी इस मौके पर मौजूद थे। टीचर्स एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित होने वाले 11 शिक्षकों में गवर्नमेंट एलिमेंट्री स्मार्ट स्कूल, दाना मंडी, पटियाला की मुख्याध्यापिका डॉ. इंद्रजीत कौर, गवर्नमेंट मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, फेज फेज 3 बी 1, मोहाली की पंजाबी की लेक्चरर मंदीप शुक्ला, चंडीगढ़ चाइल्ड एंड वूमेन डेवलपमेंट कारपोरेशन के अधीन मलोया स्थित स्नेहालय फॉर ब्वॉयज में स्पेशल एजुकेटर संदीप कुमार, पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ के डॉ. एसएस भटनागर यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलाजी की प्रोफेसर और पूर्व चेयरपर्सन प्रो. मीनाक्षी गोयल, डीएवी कॉलेज, सेक्टर-10, चंडीगढ़ के एसोसिएट प्रोफेसर व फिजिकल एजुकेशन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमनेंद्र मान, शहीद गुरदास राम मेमोरियल सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल (गर्ल्स), जीरा, फिरोजपुर के प्रिंसिपल राकेश शर्मा, मनीमाजरा के गवर्नमेंट मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल की एलिमेंटरी टीचर नवनीत कौर, गुरुग्राम के वजीराबाद स्थित गवर्नमेंट गर्ल्स मॉडल संस्कृति प्राइमरी स्कूल में जेबीटी मनोज कुमार, मानव मंगल स्मार्ट स्कूल, मोहाली की साइंस टीचर सुजाता जसवाल, मानव मंगल स्मार्ट स्कूल, मोहाली की मदर टीचर मीनाक्षी वशिष्ठ शामिल हैं। शिशु निकेतन मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर-22 की निदेशक प्रिंसिपल अमिता खुराना को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

चुनाव की तारीख बदले जाने का बिश्नोई समुदाय ने किया स्वागत

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

बिश्नोई समुदाय के लोगों ने उनके सदियों पुराने त्योहार के मद्देनजर हरियाणा विधानसभा चुनाव की तारीख एक अक्टूबर से स्थगित कर पांच अक्टूबर करने के निर्वाचन आयोग के फैसले का स्वागत किया है।

आयोग के इस फैसले का सत्तारूढ़ भाजपा ने भी स्वागत किया है। निर्वाचन आयोग ने हरियाणा विधानसभा चुनाव के तहत मतदान एक अक्टूबर के बजाय पांच अक्टूबर को कराने की घोषणा करते हुए शनिवार को कहा था कि बिश्नोई समुदाय के सदियों पुराने त्योहार को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है। आयोग ने कहा था कि जम्मू-कश्मीर और हरियाणा विधानसभा चुनावों की मतगणना चार अक्टूबर के बजाय अब आठ अक्टूबर को होगी। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के उपाध्यक्ष सोम प्रकाश बिश्नोई ने कहा कि पूरा समुदाय चुनाव की तारीख स्थगित करने के फैसले के लिए निर्वाचन आयोग का आभार जताता है। उन्होंने कहा कि इस उत्सव में बिश्नोई समुदाय के लाखों सदस्य हिस्सा लेते हैं और इसे आयोजित करने में 15-20 दिन लगते हैं। सोम प्रकाश ने कहा, पहले हम इस बात को लेकर चिंतित थे कि (बिश्नोई समुदाय के) लोग यात्रा पर होने के कारण मतदान नहीं कर पाएंगे या वे इस कार्यक्रम में भाग नहीं ले पाएंगे। अब नई मतदान तिथि से हमारी समस्या हल हो गई है और हम इसके लिए निर्वाचन आयोग को धन्यवाद देते हैं।

तारीख में बदलाव से पहले, एक अक्टूबर को जम्मू-कश्मीर में तीसरे और अंतिम चरण के विधानसभा चुनावों के साथ ही हरियाणा में चुनाव कराए जाने थे। निर्वाचन आयोग ने कहा था कि हरियाणा विधानसभा चुनाव की तिथि आगे बढ़ाने का निर्णय उस बिश्नोई समुदाय के मतदान के अधिकार और परंपराओं का सम्मान करने के लिए लिया गया है, जिसने अपने गुरु जम्भेश्वर की याद में 300-400 साल पुरानी परंपरा को बरकरार रखा है।

नवीन गोयल को ब्राह्मण समाज ने दिया आशीर्वाद

● भगवान परशुराम के जीवन पर कलाकारों ने दिखाई लीला

● नाटक के मंचन पर लोग भावुक भी हुए और लीलाओं से शिक्षा भी ली

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

ओल्ड दिल्ली रोड स्थित एक बैंक्वेट हॉल में भगवान परशुराम की लीला कार्यक्रम को संबोधित करते नवीन गोयल।

रविवार को गुरुग्राम भगवान परशुराममय हो गया। शहर में भगवान परशुराम जी के जयकारे सुनाई दिए। गुड़गांव विधानसभा से चुनाव में उतरे भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता व्यापार प्रकोष्ठ भाजपा, हरियाणा के प्रदेश संयोजक नवीन गोयल की ओर से रविवार को भगवान परशुराम जी की लीला का मंचन करवाया गया। पुराना दिल्ली रोड स्थित वायु सेवा स्टेशन के सामने विवांता बैंक्वेट में हजारों लोगों की मौजूदगी में लीला का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में युवाओं, महिलाओं की भागीदारी खास रही। नाचते-गाते, भगवान परशुराम जी के जयकारे लगाते हुए लोग पहुंचे। इस अवसर पर नवीन गोयल ने ब्राह्मण समाज के अग्रणी व्यक्तियों समेत समाज के आम लोगों ने इस आयोजन की सराहना की। समारोह में साधू संतों की भी उपस्थिति रही। भगवान परशुराम जी की लीला ने सबको रोमांचित किया। नवीन गोयल ने मंच से कहा कि जिस गुरु द्रोणाचार्य के नाम से गुरुग्राम है, उनके भी गुरु भगवान परशुराम जी थे। जिस तरह से अन्याय, अधर्म, अत्याचार के खिलाफ भगवान परशुराम ने काम किए, ऐसे ही हम भी गुरुग्राम को हर तरह से बेहतर बनाकर विकास का एक मॉडल बनाने की सोच पर काम कर रहे हैं। भगवान परशुराम जी की तरह से हमें संकल्प लेकर काम करना है। कामयाबी की राह को कोई रोक नहीं सकता। हमने भी प्रतिज्ञाएं ली हैं कि हम गुड़गांव में किसी का बुरा ना होने दें। ऐसा भाव लाना चाहते हैं कि सभी में परस्पर प्रेम हो।

समारोह में जुटे ब्राह्मण समाज से आशीर्वाद मांगते हुए नवीन गोयल ने कहा कि हमने तो बचपन से ही ब्राह्मणों का आशीर्वाद लेकर काम की शुरुआत की है। राजनीति में आना एक विकल्प हो सकता है, लेकिन उनकी सोच समाज सेवा की है। ब्राह्मण समाज का आशीर्वाद लेकर वे 36 बिरादरी को साथ लेकर चले हैं। नवीन गोयल ने कहा कि आप सबके आशीर्वाद से जो काम पिछले 20-30 साल में गुरुग्राम में हुए, मात्र 5 साल में उससे ज्यादा काम करने की सोच है। इस सोच को पूरा करने में गुरुग्राम की जनता का सहयोग चाहिए। जिस तरीके से सत्य व धर्म की रक्षा भगवान परशुराम ने की थी, उनके दिखाए रास्ते पर चलकर किसी के साथ अन्याय नहीं होने दूंगा।

सीआरएसआई पदक के लिए प्रोफेसर तौकीर अहमद चयनित

● ग्रीन हाइड्रोजन ऊर्जा में उन्नत नैनो मैटेरियल के विकास के लिए किया जाएगा सम्मानित

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान के पूर्ण प्रोफेसर तौकीर अहमद को वर्ष 2025 के प्रतिष्ठित सीआरएसआई कांस्य पदक के लिए चुना गया है। उन्हें रसायन विज्ञान में उनके उत्कृष्ट अनुसंधान योगदान, विशेष रूप से ग्रीन हाइड्रोजन ऊर्जा के लिए उन्नत नैनो मटेरियल के विकास के लिए पदक से सम्मानित किया जाएगा।

प्रोफेसर तौकीर अहमद को 3-5 जुलाई, 2025 के दौरान आईआईटी गांधीनगर में आयोजित रसायन विज्ञान में 35 वें सीआरएसआई राष्ट्रीय संगोष्ठी में पदक से सम्मानित किया जाएगा, जहां वह इस विषय पर एक स्पीच भी देंगे। केमिकल रिसर्च सोसाइटी ऑफ इंडिया (सीआरएसआई) की स्थापना 1999 में देश की आजादी की 50वीं वर्षगांठ समारोह के हिस्से के रूप में की गई थी। सीआरएसआई का मुख्य उद्देश्य रसायन विज्ञान और रासायनिक विज्ञान में प्रतिभा को पहचानना, बढ़ावा देना और रसायन शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ रसायन विज्ञान की सभी शाखाओं में अनुसंधान में सुधार करना है।

उत्तराखंड राज्य के रूड़की शहर के लाठर देवा शेख गांव के निवासी रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री (एफआरएससी) के फेलो प्रोफेसर तौकीर अहमद ने आईआईटी रूड़की से स्नातक और आईआईटी दिगी से पीएचडी की है।

हरियाणा पर्यटन निगम ने गोल्डन जुबली कार्यक्रम मनाया

● गुरुग्राम के गांव दमदमा में सारस पर्यटन निगम में बर्ड वॉचर और प्रकृति प्रेमियों के लिए अरावली नेचर ट्रेल ट्रेक का किया आयोजन

● ग्रामीणों को मतदान के प्रति किया जागरूक, इच्छा से मतदान करने की दिलाई सामूहिक शपथ

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

हरियाणा पर्यटन दिवस पर दमदमा स्थित सारस पर्यटन केंद्र पर अरावली नेचर ट्रेल ट्रेक कार्यक्रम में भाग लेते लोग।

हरियाणा पर्यटन निगम ने रविवार को अपना 50 वर्ष पूर्ण होने पर गोल्डन जुबली कार्यक्रम बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया। गुरुग्राम के आदर्श ग्राम दमदमा में सारस पर्यटन निगम में बर्ड वॉचर और प्रकृति परिकर्मियो के लिए अरावली नेचर ट्रेल ट्रेक का सफल आयोजन किया गया। बारबेट पर्यटन रिसोर्ट सोहना और रोसी पेलिकन पर्यटन रिसोर्ट सुल्तानपुर में भी विभिन्न प्रकार के कार्यकर्मों का आयोजन किया गया।

हरियाणा पर्यटन (जोनल हेड) गुरुग्राम, हरविंदर सिंह यादव ने इस बारे में बताया कि अरावली नेचर ट्रेल ट्रेक को सारस पर्यटन रिसोर्ट से शुरू किया और जिसका 4 किलोमीटर चल कर बाबा बालादास मंदिर में समापन हुआ।

इसमें ग्रामीण आँचल के स्कूली बच्चों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और पेड़ पोधो, पक्षियों (वन्य जीव जंतु एवं किट पतंगों) के बारे में जानकारी हासिल की। उन्होंने बताया कि सारस पर्यटन रिसोर्ट में भी गांव दमदमा के बुजुर्गो, महिलाओं एवं लड़कियों के लिए खेलो का विशेष आयोजन किया गया। जिसमे डॉ नरेंदर दमदमा समाज सेवी, गुरुजल संस्था, मांगर इको क्लब, हरियाणा वन विभाग, नवज्योति फाउंडेशन एवं समग्र ग्राम पंचायत एवं दमदमा गांव के सम्मानित बुजुर्गो ने कार्यक्रम के सफल आयोजन में विशेष भूमिका निभाई।

कार्यक्रम के तहत जोनल हेड (हरियाणा पर्यटन निगम सहायक महा प्रबंधक गुरुग्राम जोन) ने सभी ग्रामीणों को अपने मतदान के प्रति जागरूक किया एवं सभी को स्वयं इच्छा से मतदान करने की सामूहिक शपथ दिलाई।

ऐसे ही, पर्यटन विभाग के प्रबंधक सुनील शर्मा एवं विवेक मलिक ने बढ़ चढ़ कर नागरिकों को मतदान के लिए प्रोत्साहित किया एवं विशेष सहयोग किया। इसी प्रकार, बारबेट पर्यटन रिसोर्ट सोहना और रोसी पेलिकन पर्यटन रिसोर्ट सुल्तानपुर में भी विभिन्न प्रकार के कार्यकर्मों का आयोजन किया गया, जिनके अंतर्गत बाइक राइडर रैली, बर्ड वाचिंग, पेंटिंग, रंगोली, ग्रुप डांस आदि की प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

शस्त्र लाइसेंस धारक अपने हथियार समय पर जमा कराएं: पुलिस अधीक्षक

कुरुक्षेत्र। लोकसभा चुनावो के मद्देनजर कुरुक्षेत्र पुलिस ने एडवाइजरी जारी की है। एडवाइजरी जारी करते हुए अधीक्षक कुरुक्षेत्र वरुण सिंगला ने कहा कि शस्त्र लाइसेंस धारक अपने लाइसेंसी हथियार समय से नजदीकी पुलिस थाना या प्राधिकृत शस्त्र डीलरों के पास जमा करवाए। पुलिस प्रवक्ता मंजीत पांचाल ने बताया कि अधीक्षक कुरुक्षेत्र वरुण सिंगला ने निर्देश जारी करते हुए कहा कि निर्वाचन आयोग द्वारा विधानसभा चुनाव की घोषणा कर दी गई है। चुनाव की घोषणा के साथ जिला कुरुक्षेत्र में आचार संहिता भी लागू हो गई है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि चुनाव को शांतिपूर्वक, निष्पक्ष और भय मुक्त वातावरण में संपन्न करवाने के उद्देश्य से लाइसेंस धारक अपना हथियार बिना किसी देरी के अपने नजदीकी थाना में या प्राधिकृत शस्त्र डीलरों के पास जमा कराएं। पुलिस अधीक्षक ने सभी थाना व चौकी प्रभारियों को निर्देश देते हुए कहा है कि आपके क्षेत्र में जिन लोगों के पास लाईसेंसी हथियार है उन सभी के हथियारों को चुनाव से पहले संबंधित थाने या गनहाउस में जमा करवाएं।

PUBLIC NOTICE

My client Sh. Parveen Kumar Arora S/o Sh. Ram Chander Arora R/o C-90, East of Kailash, South Delhi, Delhi-110065 entered for purchase the basement of property No.10/18, Kalkaji Extn., New Delhi-110019 from Sh. Aditya Bhutani S/o Sh. Hans Raj Bhutani R/o 140, Pocket A-8, Kalkaji Extn. South Delhi, Delhi-110019. If anybody has any kind of Legal Rights/Claim/Liend/Dispute or objection on above said property, They should send their objections in writing within **07 days** of publication, and any claim thereafter shall be treated as null and void.

PRAVEEN RASTOGI (Advocate)
Enrl No.D-244/06
RZ-97, Khushi Ram Park, Uttam Nagar, New Delhi-110059, Mob: 9810986643

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, Balwinder Singh S/o Sohan Singh R/o HN.980, Ward No.24, College Colony, Thanesar, Kurukshetra, Haryana-136118 have changed my name to Balwinder Singh Mutti

PD(718)A

I, Gurmeet Kaur W/o Balwinder Singh Mutti R/o HN.980, Ward No.24, College Colony, Thanesar, Kurukshetra, Haryana-136118 have changed my name to Gurmeet Kaur Mutti

PD(719)A

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,

सम्मान कैपिटल लिमिटेड (CIN:L65922DL2005PLC136029) (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते अधोहस्ताक्षरी ने सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **पीयूष कुमार गुप्ता प्रोप्राइटर नीलम बैंगल्स स्टोर, पूनम गुप्ता, नीरा गुप्ता और रमा कांत गुप्ता** को **27.05.2021** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLBHP00218443** की राशि **रू. 23,27,278.67 (रूपये तेईस लाख सत्ताईस हजार दो सौ अठहत्तर और सड़सठ पैसे मात्र)** और **21.05.2021** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी।

धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **28.08.2024**. को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है।

विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 23,27,278.67 (रूपये तेईस लाख सत्ताईस हजार दो सौ अठहत्तर और सड़सठ पैसे मात्र) 21.05.2021** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **सम्मान कैपिटल लिमिटेड (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)** के आधीन होगा।

उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

विला नं.32, ब्लॉक-एन में टाइप सिम्प्लेक्स, कवर्ड एरिया माप 54.26 स्क्वे. मीटर्स और जमीन एरिया 83.58 स्क्वे. मीटर्स, ", श्री राधा फ्लोरेंस" से पहचाने जानेवाले, वृंदावन, मथुरा- 281005, उत्तर प्रदेश, जो निम्नानुसार परिबध्द है :-

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 28.08.2024 **सम्मान कैपिटल लिमिटेड**
स्थान : मथुरा **(पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)**

केरल फिल्म उद्योग

हेमा कमेटी रिपोर्ट

हेमा कमेटी रिपोर्ट ने केरल फिल्म उद्योग में व्याप्त यौन उत्पीड़न का खुलासा किया है जिससे पूरे देश में गुस्से की लहर दौड़ गई है। यह केरल फिल्म उद्योग में 'मी टू' जैसा क्षण है। हेमा कमेटी रिपोर्ट आने के बाद केरल फिल्म उद्योग की छवि रसातल में पहुंच गई है। इसमें व्यापक यौन उत्पीड़न, महिलाओं के लिए मूलभूत सुविधाओं की कमी आदि की चर्चा की गई है। यह उस राज्य में आश्चर्यजनक है जिसने देश को सर्वाधिक प्रगतिशील फिल्में दी हैं। केरल भारत की आलोचकों द्वारा सर्वाधिक प्रशंसित और प्यारी फिल्मों का स्थान रहा है, पर वह अब गंभीर संकट का सामना कर रहा है। हेमा कमेटी की उल्लेखनीय रिपोर्ट ने इस जीवन्त फिल्म उद्योग में व्याप्त गहरे 'जेंडर मुद्दों' तथा यौन उत्पीड़न को उजागर किया है। इससे उद्योग की कलात्मक उपलब्धियों पर आश्चर्यजनक रूप से अंधेरा छा गया है। केरल उच्च न्यायालय की सेवानिवृत्त न्यायाधीश जस्टिस के. हेमा की अध्यक्षता में तीन सदस्यों द्वारा तैयार 290 पेज की रिपोर्ट में मलयालम-भाषा फिल्म उद्योग पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं। यह कार्यस्थल की निराशाजनक तस्वीर पेश करती है जहां यौन उत्पीड़न व्यापक और व्यवस्थित है तथा 'शक्तिशाली पुरुषों के माफिया' के नियंत्रण के चलते महिलायें शोषण के लिए अभिशप्त हैं। केरल सरकार ने 2017 में पूरे उद्योग को झकझोर देने वाला हाई-प्रोफाइल मामला सामने आने पर हेमा कमेटी का गठन किया था। हेमा कमेटी रिपोर्ट ने उन व्यवस्थागत समस्याओं को उजागर किया है जिनको लंबे समय से अनदेखा किया जा रहा था या कम महत्वपूर्ण समझा जाता था। इस रिपोर्ट में अनेक प्रकार के उत्पीड़नों का उल्लेख है जिनमें जूनियर कलाकारों के लिए शौचालय व 'चेंजिंग रूम' जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव तथा उद्योग में शक्तिशाली पुरुषों द्वारा बार-बार यौन संबंधों की मांग करना शामिल है। इसमें उन महिलाओं के भयानक अनुभवों का उल्लेख है जिनको बहुत लंबे समय तक बिना शौचालय सुविधा के काम करने पर मजबूर किया गया जिससे उनको स्वास्थ्य समस्यायें पैदा हुईं। समिति ने यह भी पाया कि यौन उत्पीड़न केवल व्यापक था, बल्कि अक्सर बदले की कार्रवाई के भय से इसकी शिकायत भी नहीं की जाती थी। जैसी कि उम्मीद थी, केरल फिल्म उद्योग के लोगों ने इन सभी आरोपों का खंडन किया है। चिन्ताजनक रिपोर्ट के बावजूद, प्रमुख उद्योग संस्था 'असोसियेशन आफ मलयालम मूवी आर्टिस्ट्स'-अम्मा ने आरोपों को खारिज किया है। संगठन के महासचिव सिद्दीकी ने इन आरोपों का खंडन करते हुए कहा है कि हालिया वर्षों में फिल्म सेटों पर महिलाओं की स्थिति सुधरी है और उद्योग पर शक्तिशाली पुरुषों के समूह का नियंत्रण नहीं है। लेकिन रिपोर्ट जारी होने के बाद गुस्सा फैल गया है।

एक्टिविस्टों और विपक्षी नेताओं ने तत्काल आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। केरल के मुख्यमंत्री पिनारई विजयन ने कमेटी के समक्ष बयान देने वाली किसी महिला द्वारा शिकायत दर्ज कराने पर कार्रवाई का वादा किया है। इन खुलासों के बाद उम्मीद है कि केरल फिल्म उद्योग अपने भीतर झांक कर देखेगा और स्थाई परिवर्तन करेगा। केरल फिल्म उद्योग लंबे समय से अपनी कलात्मक उपलब्धियों के लिए देश-दुनिया में प्रशंसा प्राप्त करता रहा है और उसने आलोचकों द्वारा बहु-प्रशंसित अनेक प्रगतिशील फिल्में दी हैं। अब उसे अपने साथ काम करने वाली महिलाओं समेत सभी लोगों के लिए सम्मान, सुरक्षा और गरिमा का प्रतीक बनना होगा।

पर्यटन और पर्यावरण में संतुलन

भारत में पर्यटन क्षेत्र का भविष्य परिस्थितिकी के प्रति निष्ठा व आर्थिक प्रगति के बीच संतुलन बनाए रखने पर निर्भर है। इसे बनाने का प्रयास फौरन शुरू करने की जरूरत है।

कोटा श्रीराज
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

भारत में पर्यटन क्षेत्र का भविष्य परिस्थितिकी के प्रति निष्ठा व आर्थिक प्रगति के बीच संतुलन बनाए रखने पर निर्भर है। इसे बनाने का प्रयास फौरन शुरू करने की जरूरत है। अति-पर्यटन के कारण दुनिया भर में पर्यावरण क्षरण को लेकर चिन्ता पैदा हो गई है। इसका एक उदाहरण यूनान का बहुत सुंदर दृश्यावलियों वाला सैंटोरिनी द्वीप है। यहां यूनान को आपातस्थिति घोषित करनी पड़ी है क्योंकि इस द्वीप पर एक ही दिन में 17,000 पर्यटक पहुंच गए। इसके कारण द्वीप के परेशान मूल निवासियों को अपने घरों के भीतर ही रहने की सलाह दी गई क्योंकि पर्यटकों की भारी भीड़ के कारण वहां की ढांचागत संरचनाओं पर भारी दबाव पड़ा। इसके साथ ही आवास संबंधी समस्या पैदा हुई तथा शानदार समुद्र तटों पर भारी भीड़ एकत्र हो गई। इसके कारण स्थानीय लोगों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए रैलियां निकालीं जहां उनके हाथों में तख्तियों पर लिखा था, 'व्यापक पर्यटन असहनशील है।'

अति-पर्यटन के कारण प्रदूषण बढ़ता है तथा जल व ऊर्जा जैसे संसाधनों पर भारी दबाव पड़ता है। यह पर्यटकों की भारी भीड़ वाले स्थानों पर साफ दिखाई देता है जिसका स्थानीय परिवेश, जैव-विविधता तथा ढांचागत संरचनाओं पर भारी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भारत में भी अति-पर्यटन के व्यापक प्रभाव दिखने लगे हैं। हर साल उत्तर भारत के लोकप्रिय पहाड़ी स्थानों, जैसे कुल्लू मनाली व मसूरी में पर्यटकों की भारी भीड़ के कारण ट्रैफिक जाम जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। पर्यटकों के वाहनों के कारण कई किलोमीटर तक लंबी कतारें लग जाती हैं और इन शहरों में प्रवेश करना तक कठिन हो जाता है।

बड़ी संख्या में लोगों के आने के कारण यहां का औसत तापमान भी बढ़ जाता है और हिमालय पर्वत के अनेक लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर तापमान बढ़ने की घटनायें बार-बार सामने आई हैं। इन स्थानों पर तापमान बढ़ने के कारण मौसम-चक्र भी बदल गया है। पिछले दो दशकों में भारतीय हिमालयी क्षेत्र में हिमपात वाले दिनों में लगातार कमी आई है। इसके कारण गुलमर्ग और औली जैसे पर्यटन स्थलों पर विपरीत प्रभाव पड़ा है जिससे राजस्व प्राप्ति घटी है तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ा है। यहां तक कि सुदूर तीर्थस्थल, जैसे जोशीमठ आदि स्थान भी भारी संख्या में आने वाले पर्यटकों का सामना कर रहे हैं। इस सम्मानित हिमालयी शहर में हर साल 10 करोड़ से अधिक लोग आते हैं जिसके परिणामस्वरूप परिस्थितिकी संबंधी मुद्दे गंभीर हो रहे हैं।

यहां जमीन की कमी पड़ रही है तथा जैव-विविधता का विनाश हो रहा है। दक्षिण भारत में केरल जैसे पर्यटन केन्द्र समझे जाने वाले राज्य भी अति-पर्यटन के विनाशकारी प्रभावों का सामना कर रहे हैं। पूरे केरल में सामान्य से अधिक बरसात, मानव गतिविधियों में असाधारण वृद्धि तथा पर्यटन बढ़ने के कारण भूमि उपयोग में परिवर्तन से वनस्पतियों और पेड़ पौधों के पैटर्न में भी बदलाव आया है। 'ईश्वर का अपना देश' कहा जाने वाला केरल मानवीय लालच का शिकार हो गया है। अति-पर्यटन के कारण होटलों, रेस्तराओं और संबंधित बिजनेसों की मांग बढ़ गई है।

इसके परिणामस्वरूप पहाड़ी ढलानों पर बेलगाम तरीके से इमारतें बनाई जा रही हैं, मिट्टी निकाली जा रही है तथा निर्वनीकरण के कारण पर्यावरण पर भयानक विपरीत प्रभाव पड़ा है। इसके साथ ही पहाड़ी ढलानों पर भूस्खलन जैसी समस्यायें भी सामने आ रही हैं। हालिया वायनाड त्रासदी इसका एक दुर्भाग्यपूर्ण उदाहरण है जहां 500 से अधिक लोगों की जानें गईं तथा 400 लोग घायल हुए। इसके साथ ही भूस्खलन के कारण संपत्ति का भारी नुकसान हुआ। पर्यटन के दुर्भाग्यपूर्ण प्रभाव को फ्रेंच स्टार्टअप 'मुरमुरेशन' ने दर्ज किया है जो उपग्रह से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभावों के आंकलन का विशेषज्ञ है। इस फर्म ने कहा है कि 80 प्रतिशत पर्यटक केवल 10 प्रतिशत विश्व पर्यटन स्थलों पर जाते हैं जिसके कारण कुछ स्थानों पर भारी भीड़ हो जाती है।

'युनाइटेड नेशन्स वर्ड टूरिस्ट आर्गेनाइजेशन'-यूएनडब्लूटीओ के अनुसार अगर यही प्रवृत्ति बनी रही तो 2030 तक दुनिया में पर्यटकों की संख्या 1.8 बिलियन हो जाएगी, जबकि 2019 में यह 1.5 बिलियन थी। इसके साथ ही पर्यटन के कारण परिवहन-संबंधी कार्बन उत्सर्जन में 2016 के स्तर की तुलना में 25 प्रतिशत वृद्धि की आशंका है। आस्ट्रेलिया जैसे कुछ देशों ने इस समस्या से निपटने के लिए व्यापक कदम उठाए हैं। उदाहरण के लिए, आस्ट्रेलिया का 'इको सर्टीफिकेशन प्रोग्राम' न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव वाले पर्यटन को प्रोत्साहित करता है। इससे पर्यटकों को जिम्मेदार यात्रा पसंद का अवसर मिलता है। दूसरी ओर दक्षिण अफ्रीका ने अपने 'फेयर ट्रेड टूरिज्म सर्टीफिकेशन' के माध्यम से 'नैतिक पर्यटन' का समर्थन किया है जिसमें पर्यटन उद्यमों के लिए उचित वेतन और कार्यस्थितियों को अनिवार्य किया गया है। हमारे पड़ोसी देश भूटान ने 'हाई वैल्यू, लो वाल्यूम' नीति अपनाई है जो दुहरा लाभ देती है। इसमें पर्यटकों को दैनिक फीस देनी होती है जिससे स्थानीय समुदायों की सेवायें प्राप्त करने में सहायता मिलती है तथा अति-पर्यटन से बचने के लिए पर्यटकों की संख्या सीमित रहती है।

भारत को विश्व स्तर पर चल रहे ऐसे प्रयोगों से उचित सबक लेना चाहिए। दुनिया में अब सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश भारत में सप्ताहांतों तथा अन्य छुट्टियों में स्थानीय पर्यटन स्थलों और तीर्थस्थलों पर भारी संख्या में पर्यटकों और श्रृद्धालुओं के पहुंचने की समस्या से भी निपटना पड़ रहा है। इसके लिए और अधिक पर्यटन स्थलों के विकास के साथ ही पुराने व नये तीर्थस्थलों को पर्यटकों व श्रद्धालुओं के लिए आकर्षक बनाने व उनके विस्तार की आवश्यकता है। भारत में धार्मिक पर्यटन का विशेष स्थान है, ऐसे में इसे भी पर्यावरण संरक्षण तथा प्रकृति प्रेम से जोड़ा जाना चाहिए।

लेकिन भारत की अपनी विशिष्ट समस्यायें हैं और हमारे देश में अति-पर्यटन से बचने के लिए ज्यादा विशिष्ट समाधानों की आवश्यकता है। इसके लिए शुरुआती बिंदु के रूप में एक पर्यटन सप्लाई श्रृंखला क्षेत्र का गठन करना जरूरी है जिसमें ट्रेवल कंपनियां, क्रूज़ कंपनियां, टिकट देने वाली फर्में और पैकेज टूर प्रोवाइडर्स को शामिल किया जाना चाहिए। उन उद्यमों को अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह निभाते हुए भारत के सभी पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों का संतुलित प्रवाह सुनिश्चित करना होगा। इसके लिए पर्यटन स्थलों के अति-प्रचार से बचते हुए पर्यटकों को अन्य स्थानों पर जाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इससे कुछ परंपरागत पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की भारी भीड़ से बचने के साथ ही पर्यावरण पर पड़ने वाले भारी दबाव से बचने में भी सहायता मिलेगी। पर्यटन मंत्रालय को पर्यावरण मंत्रालय से सहयोग कर ऐसी खोजी पहलों को जन्म देना चाहिए जिनसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर परिस्थितिकी तथा जैव-विविधता संरक्षण सुनिश्चित हो सके।

इस साझेदारी की शुरुआत सबसे पहले पर्यटन और टिकटिंग एजेंसियों पर नियंत्रण से होनी चाहिए। इसके लिए प्रत्येक टूरिस्ट आपरेटर का अनिवार्य पंजीकरण होना चाहिए ताकि पर्यटन क्षेत्र में घुसने वाले अवैध उद्यमों पर रोक लगाई जा सके। पर्यटन और पर्यावरण मंत्रालयों की परस्पर साझेदारी से भारत में पर्यावरण के प्रति संवेदनशली पर्यटन का नया युग शुरू हो सकता है। इसके लिए दोनों मंत्रालयों को विशिष्ट व गैर-हस्तांतरणीय पंजीकरण आईडी की व्यवस्था करनी होगा जिनके माध्यम से टूरिज्म कंपनियों पर लगाम लगाई जा सकती है। इसके साथ ही पर्यटन उद्योग से जुड़े जिम्मेदार उद्यमों व लोगों के लिए समय-समय पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए ताकि उनको परिस्थितिकी, जैव-विविधता और जलवायु परिवर्तन संबंधी मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सके।

इस साझेदारी के एक हिस्से के रूप में मंत्रालयों को एक विकसित एल्गोरिद्म-आधारित साफ्टवेयर विकसित करने की जरूरत हो सकती है। इसके प्रयोग से पर्यटन क्षेत्र से जुड़ी कंपनियां स्वत: ही लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर सीमित होटलों व परिवहन सुविधाओं को देखते हुए यह तय कर सकती हैं कि वहां कितने पर्यटकों को स्थान मिल सकता है। इससे भारत के लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों के भारी बोझ से बचने में सहायता मिलेगी। यह पर्यावरण व पर्यटन में संतुलन में सहायक होगी।

वैश्विक प्रतिरक्षा आपूर्तियों में भारत के लिए अवसर

पद्मलोचन दास
(लेखक राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन स्कूल से जुड़े हैं)

वैश्विक रक्षा परिदृश्य तेज़ी से विकसित हो रहा है, जिसमें भू-राजनीतिक संघर्षों में वृद्धि और महत्वपूर्ण सैन्य हार्डवेयर और प्रौद्योगिकी तक पहुंच को प्रतिबंधित करने के लिए इनकार की रणनीति का बढ़ता रणनीतिक उपयोग शामिल है। भारत के प्रमुख रणनीतिक साझेदारों सहित कई राष्ट्र अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहे हैं क्योंकि आवश्यक रक्षा भंडार समाप्त हो रहे हैं और परिष्कृत युद्ध मशीनें अप्रचलित हो रही हैं या नए प्रकार के विध्वंस के प्रति संवेदनशील हो रही हैं।

इसके जवाब में, प्रमुख रक्षा आपूर्तिकर्ता, विशेष रूप से प्रथम-विश्व देशों में, बाहरी बिक्री की तुलना में अपने भंडार के संरक्षण को प्राथमिकता दे रहे हैं। इन चुनौतियों के बीच, भारत के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर उभर रहा है। इन अंतरालों को भरने और अपने रणनीतिक प्रभाव और साझेदारी को बढ़ाने के लिए रणनीतिक रूप से डिज़ाइन किए गए दृष्टिकोण को अपनाकर, भारत वैश्विक रक्षा आपूर्ति श्रृंखला में उभरती हुई कमियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

वैश्विक रक्षा आपूर्ति श्रृंखला में कमज़ोरियां: कोविड-19 महामारी, यूक्रेन, मध्य पूर्व और इंडो-पैसिफिक जैसे क्षेत्रों में चल रहे संघर्षों के साथ, वैश्विक रक्षा आपूर्ति श्रृंखलाओं की कमज़ोरी को उजागर कर दिया है। चूंकि भारत खुद को रक्षा उपकरणों के एक विश्वसनीय और विविधतापूर्ण आपूर्तिकर्ता के रूप में स्थापित करना चाहता है, इसलिए तुरंत कार्रवाई करना अनिवार्य है। इन क्षमताओं को बढ़ाना और दीर्घकालिक रणनीतिक उद्देश्यों में निहित मजबूत, लचीली नीतियों को लागू करना भारत के लिए वैश्विक रक्षा बाज़ार में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभरने के लिए महत्वपूर्ण है। भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, फ्रांस और इज़राइल सहित प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ अपनी रक्षा साझेदारी को मज़बूत किया है। हालांकि, इन गठबंधनों को लेन-देन संबंधी व्यवस्थाओं से आगे बढ़कर स्थायी, पारस्परिक संबंधों में विकसित होना चाहिए। भारत के लिए, हर लेन-देन या साझेदारी का लाभ देश की अधिशेष उत्पादन करने की क्षमता को बढ़ाने और अन्य देशों की रक्षा

आवश्यकताओं के लिए एक प्रमुख प्रदाता के रूप में उभरने के लिए उठाया जाना चाहिए। इन रणनीतिक गठबंधनों से न केवल भारत की वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थिति में सुधार होगा, बल्कि वैश्विक रक्षा बाज़ार में इसे एक स्थायी प्रतिस्पर्धी बढ़त भी मिलेगी। भारत ने स्वदेशी रक्षा उत्पादन में काफी प्रगति की है, जिसका उदाहरण अर्जुन मुख्य युद्धक टैंक, ब्रह्मोस मिसाइल और तेजस लड़ाकू जेट जैसी उपलब्धियां हैं। हालांकि, वैश्विक रक्षा बाजार की बढ़ती माँगों को पूरा करने के लिए इन सफलताओं को विकसित किया जाना चाहिए। विश्व स्तरीय रक्षा उत्पादक के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए, भारत को सैन्य-श्रेणी के यूएवी, उन्नत मिसाइल रक्षा प्रणाली और अत्याधुनिक साइबर रक्षा प्रौद्योगिकियों जैसे क्षेत्रों में अपनी उत्पादन क्षमताओं का विस्तार करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, अपने उत्पादन पोर्टफोलियो में उन्नत समुद्री टोही विमान, पनडुब्बी रोधी युद्ध प्रणाली और व्यापक निगरानी बुनियादी ढांचे को एकीकृत करना आवश्यक है। भारत की स्वदेशी रक्षा उत्पादन क्षमता को अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों को पूरा करने के लिए बढ़ाया जाना चाहिए, जिससे देश वैश्विक रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित हो सके।

भारत की अग्रणी, आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादक बनने की महत्वाकांक्षाएं, मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी पहलों द्वारा रेखांकित की जाती हैं। हालांकि, सफलता का सही मापदंड यह होगा कि ये उत्पाद अंतर्राष्ट्रीय मांगों के साथ कितनी अच्छी तरह से संरेखित होते हैं और वैश्विक रक्षा आपूर्ति श्रृंखला में बढ़ते अंतराल को कैसे संबोधित करते हैं। भारत को वैश्विक आवश्यकताओं के लिए तेज़ी से अनुकूलन करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि उसके उत्पाद अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफ़ॉर्म और मानकों के अनुकूल हों।

इसे प्राप्त करने के लिए, देश की नीतियों को उन्नत विनिर्माण अवसंरचना में निवेश आकर्षित करने, रक्षा उत्पादन प्रणालियों का समर्थन करने और महत्वपूर्ण उत्पादन विशेषज्ञता को उन्नत करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, कठोर गुणवत्ता नियंत्रण लागू करना और नवाचार-संचालित, उच्च-गुणवत्ता वाले उत्पादन आधार को बढ़ावा देना वैश्विक रक्षा मांगों को पूरा करने के लिए आवश्यक है।ससस विविधीकरण और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता प्राप्त करने के लिए भारत के रक्षा क्षेत्र में विविधीकरण और परिवर्तन महत्वपूर्ण हैं। एक विविध विनिर्माण आधार जो रणनीतिक रूप से सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों को निजी उद्यमों के साथ जोड़ता है, को अधिक अनुकूलनीय और उत्तरदायी आपूर्ति श्रृंखला बनाने के लिए विकसित किया जाना चाहिए। चूंकि भारत एक प्रमुख रक्षा आपूर्तिकर्ता बनने का लक्ष्य रखता है, इसलिए सफलता एक स्थायी नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने पर निर्भर करेगी जो मूर्त परिणाम उत्पन्न करती है। एक अग्रणी रक्षा आपूर्तिकर्ता के रूप में भारतएक अग्रणी रक्षा आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरने की भारत की महत्वाकांक्षा निर्णायक कार्रवाई और रणनीतिक फोकस की मांग करती है। इस दृष्टि को साकार करने के लिए, भारत को अपनी निर्यात क्षमताओं को बढ़ाना होगा, प्रमुख बाजारों को लक्षित करना होगा और अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ संरेखित करना होगा। इस क्षेत्र में सफलता लगातार उच्च गुणवत्ता वाले, अनुकूलनीय और सटीक रक्षा उत्पादों को विविध देशों की जरूरतों के अनुरूप वितरित करने के लिए एक दृढ़ नीति प्रतिबद्धता स्थापित करने पर निर्भर करती है।

आप की बात

जयशंकर का बयान

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने साफ-साफ कह दिया कि पाक से अब लगातार बातचीत का युग समाप्त हो गया है। इसका मतलब है कि उसे जैसे को तैसा वाला जवाब मिलेगा। पाकिस्तान से देश की आजादी के बाद से बार-बार बातचीत होती रही है, लेकिन उसका कश्मीर राग बंद होने का नाम नहीं लेता है। भारत ने जम्मू कश्मीर में लागू अनुच्छेद 370 और 35 ए हटाकर समस्या समाप्त कर दी है। अब यदि पाकिस्तान कोई आतंकी या सैनिक दु:साहस करता है तो उसे माकूल जवाब भारत देगा। बांग्लादेश पर भी भारत की पैनी नजर लगी हुई है क्योंकि वहां पाकिस्तान-समर्थक व भारत-विरोधी तत्व शेख हसीना का तख्ता पलटने के बाद बांग्लादेश की जनता को भारत के खिलाफ भड़का रहे हैं तथा हिंदुओं का नरसंहार कर उनको भारत भागने के लिए मजबूर कर रहे हैं। पाकिस्तान भले ही बांग्लादेश में कट्टरपंथी व इस्लामवादी तत्वों को भारत के खिलाफ भड़काने के प्रयास कर रहा हो, पर उम्मीद है कि बांग्लादेशी जनता का वह हिस्सा फिर सक्रिय होगा जो 1971 में बांग्लादेश बनने के बाद लाभान्वित हुआ है तथा मुक्ति संग्राम की विरासत का पक्षधर है। ऐसे में पाकिस्तान के प्रति कठोर दृष्टिकोण अपना कर भारतीय विदेश मंत्री ने बिल्कुल सही काम किया है।

– **महेश नेनावा,** इंदौर

फिल्म उद्योगों की दशा

मलयालम फिल्म इंडस्ट्री पर हेमा कमेटी की रिपोर्ट ने न सिर्फ मलयालम फिल्म इंडस्ट्री की हालत उजाकर कर दी है, बल्कि इसने प्रकारान्तर से देश की सभी फिल्म इंडस्ट्रियों की अंदरुनी हालात का एक्सरे दिखा दिया है। पर्दे पर जो हीरो महिलाओं के लिए जान पर खेल जाते हैं, उनमें से अनेक इस इंडस्ट्री के छुपे हुए विलेन भी होते हैं। फिल्म इंडस्ट्री में प्रवेश के इच्छुक कलाकारों, खासकर महिला कलाकारों के भयानक शोषण का यह धिनौना खेल कोई आज ही शुरू नहीं हुआ है। कई वर्षों से यह पैटर्न बन चुका हैए कि फिल्में तो फिल्में टीवी सीरियल तक में रोल पाने के लिए सबसे पहली शर्त ही खुद की इज्जत को दांव पर लगाने की होती है। इस चक्रव्यूह में एक बार उलझने के बाद फिर महिला कलाकारों का बाहर निकलना मुश्किल जो जाता है। कास्टिंग काउच की अफवाहों के बाद 6 साल पहले बॉलीवुड में मी टू संबंधी खुलासों के बाद यह पूरा मामला भुला दिया गया। अब यही मी टू एक बार फिर मलयालम फिल्म उद्योग में उभरा है जिसकी हलचल तमिल फिल्म उद्योग में भी सुनाई दे रही है। हालांकि, अतीत की तुलना में फिल्म उद्योग में थोड़ी पारदर्शिता आई है, पर यहां मौजूद माफिया का पूर्णत: सफाया जरूरी है।

– **सुभाष बुडावन वाला,** रतलाम

जड़ी-बूटी व्यापार

वनों से जुड़ी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के दृष्टिकोण से सुदूर गांवों तक जड़ी-बूटियों का व्यापार एक सकारात्मक आयाम है। महिलाओं के जीवन में समृद्धि लाने के दृष्टिकोण से वनोपज एकत्र करने के बाद उसके उत्पाद बनाकर बेचने का काम वन के समीप बसे समुदायों के लिए आजीविका के साथ ही नारी सशक्तिकरण को एक नई दिशा देगा। आदिवासी महिलाओं द्धारा वनोपजों व खासकर जड़ी-बूटियों से बनाए उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने की दिशा में काम किया जाना चाहिए। अनेक वनवासी व वनों से निकट रहने वाले समाजों में महिलाएं जड़ी बूटियों को ढूंढ कर उनका कारोबार करती आ रही हैं। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों अपने पूर्वजों के ज्ञान से पीढ़ी दर पीढ़ी जड़ी बूटियों की पहचान कर छोटी-मोटी बीमारियों का इलाज करने में भी उनको काफी महारत प्राप्त है। जमीनी स्तर से लेकर देश-विदेश तक जड़ी-बूटी व्यापार व इससे आदिवासी महिलाओं को लाभ दिलाने के लिए व्यापक प्रयासों की जरूरत है। इनमें वनस्पति विज्ञानियों, संरक्षणवादियों, आयुर्वेद औषधि निर्माताओं, कृषि वैज्ञानिकों तथा सहकारी संघों के साथ आम जनता की व्यापक सहभागिता हो सकती है। इससे वे परंपरागत ज्ञान का संवर्धन करेंगे।

– **संजय वर्मा,** मनावर

पैरालिंपिक में तिरंगा

पेरिस पैरालिंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों के दमदार प्रदर्शन से हर भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। निशानेबाज अवनी लेखरा, मोना अग्रवाल, मनीष नरवाल एवम प्रीति पाल के पदक विजयी प्रदर्शन ने भारत में दिव्यांग खिलाड़ियों की क्षमता का शानदार पदर्शन किया है। पेरिस पैरालंपिक में अभी कई स्पर्धा होना है। उम्मीद है कि हमारे खिलाड़ी निश्चित रूप से पदकों की संख्या बढ़ाने में सफल होंगे। अवनी लेखरा पैरालंपिक खेलों में दो स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बन गई है। एथलीट प्रीति पाल ने भी महिलाओं की टी 35 वर्ग की 100 मीटर स्पर्धा में 14.21 सेकंड के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय से कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचा है। पैरालंपिक पदक विजेता देशवासियों के प्यार, सम्मान और पुरस्कार के हकदार है। भारत समेत दुनिया भर के पैरालिंपिक खिलाड़ियों ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि यदि कोई ठान ले तो दिव्यांगता उसकी प्रतिभा प्रदर्शन में बाधा नहीं बन सकती है।

– **रीतेश जोशी,** देवास

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

अगले दो साल में यूपी पुलिस में 1 लाख नौजवानों की होगी भर्ती

● सीएम योगी ने वाराणसी में भाजयुमो, उप्र की कार्य समिति की बैठक व सदस्ता कार्यशाला में युवाओं को दिया सार्थक राजनीति करने का मंत्र

लखनऊ/वाराणसी। उत्तर प्रदेश की संस्कार नगरी वाराणसी में रविवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बड़ी घोषणा की। उन्होंने कहा कि अगले दो साल में यूपी पुलिस में 1 लाख नौजवानों की भर्ती होगी। सीएम योगी ने आगे कहा कि यही नहीं आने वाले दो वर्षों में 2 लाख नौजवानों को सरकारी नौकरी से जोड़ा जाएगा। सीएम योगी ने कहा कि आज प्रदेश में युवाओं के साथ कोई भेदभाव नहीं होता। युवाओं को निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से सरकारी नौकरी से जोड़ा जा रहा है। विगत साढ़े सात वर्ष में हमने साढ़े छह लाख से ज्यादा युवाओं को नौकरी दी है। कल ही हमने प्रदेश में सबसे बड़ी पुलिस भर्ती प्रक्रिया की लिखित परीक्षा सकुशल संपन्न कराई, जिससे 60200 से ज्यादा युवाओं को पुलिस बल में सेवा देने का मौका मिलेगा।

सीएम योगी वाराणसी में भारतीय जनता युवा मोर्चा की प्रदेश कार्य समिति की बैठक व सदस्ता कार्यशाला में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने युवाओं को राजनीति का ककहारा सिखाते हुए सिद्धांतों के अनुरूप मूल्यों व आदर्शों की स्थापना के लिए राजनीति को चुनने का आह्वान किया। उन्होंने साफ कहा कि राजनीति सत्ता प्राप्ति या स्वार्थ सिद्धि नहीं बल्कि प्रदेश हित व राष्ट्रहित के मूल्यों के संवर्धन का माध्यम बनना चाहिए। रविवार को वाराणसी में भारतीय जनता युवा मोर्चा, उत्तर प्रदेश की कार्य समिति की बैठक व सदस्ता कार्यशाला में युवाओं को सार्थक राजनीति का मंत्र देते हुए अटल जी की सीख की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। हमेशा एक बात याद रखें, सिद्धांत विहीन राजनीति मौत का फंदा होती है। हमें प्रलोभन में फंसना नहीं है और चाहे कुछ भी हो जाए अपने मूल्यों से समझौता नहीं करना है। सीएम योगी ने उत्तर प्रदेश के बदलते परसेप्शन के बारे में कहा कि जब हमने युवाओं को रोजगार देने का कार्य किया तो आज परिणाम सबके सामने है। आज प्रदेश में युवाओं को उनके जनपद और गांवों में ही नौकरी मिल रही है, देश दुनिया का हर बड़ा निवेशक उत्तर प्रदेश में निवेश करना चाहता है और प्रदेश आज देश में दूसरे नंबर की इकॉनमी बन चुका है। यह सब युवा शक्ति पर फोकस करने के कारण हुआ है। हम अगले 3-4 साल में प्रदेश को देश की पहली नंबर की इकॉनमी बनाने जा रहे हैं। इतना ही नहीं, युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं को भी संगठन को हर मायने में नंबर वन बनाने का लक्ष्य दिया।

कार्यक्रम में सीएम योगी ने कहा कि आज सब बाबा विश्वनाथ की इस पावन धरा पर एकत्र होकर कार्यशाला में सहभागी बन रहे हैं। प्रदेश के अलग-लग जनपदों से युवा यहां सहभागी बन रहे हैं। आपका उत्साह नई ऊर्जा का वाहक बनता है। यही ऊर्जा प्रधानमंत्री के सुशासन के मिशन को धरातल पर उतारने का कारण बनता है। ये उम्र ही ऐसी है जहां ऊर्जा भी है और प्रतिभा भी है। सार्वजनिक जीवन में राजनीति को हम लोग सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं बल्कि मूल्यों व आदर्शों की स्थापना के लिए कार्य कर रहे हैं। अपने उद्देश्य से विचलित हुए बिना हम सब कार्य करते हैं और हम श्रेय लेने के लिए कार्य नहीं करते। हम अच्छे से जानते हैं हम तो निमित्त मात्र हैं। 60 साल पहले के उत्तर प्रदेश और आज के उत्तर प्रदेश में आप फर्क महसूस करते होंगे। हमारे युवाओं के सामने पहचान का संकट था, अराजकता थी। बेटी-व्यापारी का सम्मान नहीं था, भेदभाव अपने चरम पर था। प्रदेश से पलायन हो रहा था, किसान आत्महत्या कर रहा था। उन स्थितियों से उबरने में प्रधानमंत्री मोदी को जब जनादेश मिला तो उसके सकारात्मक परिणाम सामने आए। उन्होंने जोर देकर कहा कि इन साढ़े सात वर्षों में आपने बदलते हुए उत्तर प्रदेश को देखा है।

मुख्यमंत्री योगी ने बाबा काल भैरव व श्री काशी विश्वनाथ का लिया आशीर्वाद

लखनऊ/वाराणसी। भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा प्रदेश कार्यसमिति की बैठक एवं सदस्यता अभियान कार्यशाला में शामिल होने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को दोपहर में वाराणसी पहुंचे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने काशी पहुंचते ही बाबा काल भैरव और श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में मत्था टेका। पुलिस लाइन हेलीपैड पर उतरने के बाद मुख्यमंत्री बाबा के दरबार में पहुंचे और विधि विधान से पूजन किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में आदियोगी के दर्शन किए। बाबा के गर्भगृह में जाकर षोडशोपचार पूजन कर लोक कल्याण के लिए कामना की। उन्होंने काशी के कोतवाल बाबा काल भैरव की आरती किया और विधि विधान से पूजा कर आशीर्वाद लिए। मंदिर में मौजूद दर्शनार्थियों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को अपने

बीच देखकर हर हर महादेव के उद्घोष से उनका स्वागत किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी भक्तों का अभिवादन हाथ जोड़कर और हाथ उठाकर स्वीकार किया। काल भैरव से दर्शन करके निकलते समय बच्चों को देखकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रुक गए और उनको मिठाई खिलाई। वहां से मुख्यमंत्री योगी में संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय गए, जहां उन्होंने पांडुलिपियों का अवलोकन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी के साथ प्रदेश सरकार के मंत्री दयाशंकर सिंह, दयाशंकर मिश्र %दयालु%, रवींद्र जायसवाल, विधायक सौरभ श्रीवास्तव व अन्य लोग मौजूद थे।

भारतीय संस्कृति की धरोहर को संरक्षित करने का कार्य सराहनीय: योगी

● वैदिक वांग्मय पर आधारित ज्ञान से युक्त ऐतिहासिक मुख्य भवन में बनेगा वैदिक-3डी म्यूजियम ●पौराणिक पांडुलिपियों को देख भाव विभोर हुए सीएम

लखनऊ/वाराणसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को अपने एक दिवसीय दौरे पर काशी पहुंचने पर पहली बार सम्पूर्णानन्द संस्कृत विवि गए। इस दौरान उन्होंने विवि के ऐतिहासिक सरस्वती भवन में संरक्षित दुर्लभ पांडुलिपियों में 'रास पंचाध्यायी', श्रीमद्भगवद्गीता एवं विशेष कपड़े पर स्वर्ण अक्षरों एवं स्वर्ण कलाओं से युक्त दुर्गासप्तशती को देखकर भाव विभोर हो गए। सीएम योगी ने भारतीय संस्कृति के धरोहर को संरक्षित करने के अभियान को निरन्तर जारी रखने तथा विवि द्वारा किये जा रहे इस प्रयास की प्रशंसा भी की। सीएम योगी ने भारत सरकार के सहयोग से राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन द्वारा पांडुलिपियों के संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्य में प्रदेश सरकार के स्तर से हरसंभव सहयोग का आश्वासन भी दिया।

सीएम योगी ने 234 वर्षीय मुख्य भवन के अंदर का अवलोकन कर भारतीय नक्षत्र विद्या, भारतीय खगोल विद्या,भारतीय ऋषियों द्वारा किए गये कार्यों के ऊपर म्यूजियम बनाये जाने तथा शास्त्रार्थ की परम्परा को इसी भवन में कराये जाने का निर्देश दिया। भारतीय ज्ञान परम्परा के अति प्राचीन केंद्र संपूर्णानन्द संस्कृत विवि के ऐतिहासिक मुख्य भवन में वैदिक वांग्मय के क्रमिक विकास पर 3-डी म्यूजियम का निर्माण किया जाएगा, जिसमें 16 संस्कारों, 64 कलाओं, 18 विद्या स्थान को विस्तृत रूप दिखाया जायेगा। निरीक्षण के दौरान सीएम योगी ने राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय,चौकाघाट को पुन: इस संस्था के संकाय के रूप में परिवर्तित करने के प्रस्ताव को सैद्धांतिक रूप से स्वीकार किया।

सीएम योगी ने गंगानाथ झा छात्रावास का भी निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने छात्रावास में साइकिल एवं वाहन स्टैंड बनाये जाने का निर्देश देते हुये कहा कि स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें। साथ ही जर्जर तारों को बदलने सहित अन्य आवश्यक कार्यों को समय पर पूरा करें। सीएम योगी ने परिसर के सभी विभागों के साइन बोर्ड को संस्कृत भाषा में करने सहित सीवर, ड्रेनेज एवं जर्जर सड़कों को व्यवस्थित करने का भी संज्ञान लिया। उन्होंने सड़कों को दुरुस्त करने तथा निर्माण निगम द्वारा बनाए जा रहे बाउंड्री वाल के निर्माण को समय पर कराये जाने का निर्देश देते हुए अन्य कार्यों का प्रस्ताव देने को कहा। इस दौरान मुख्यमंत्री के साथ कुलपति प्रो बिहारी लाल शर्मा, उत्तर प्रदेश के स्टांप एवं न्यायालय पंजीयन शुल्क राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रविंद्र जायसवाल, आयुष एवं खाद्य सुरक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ दयाशंकर मिश्र %दयालु%, पूर्व मंत्री एवं विधायक डॉ नीलकंठ तिवारी, विधायक सौरभ श्रीवास्तव, विकास प्राधिकरण के मानद सदस्य अंबरीश सिंह भोला, जिलाधिकारी एस. राजलिंगम, अपर पुलिस कमिश्नर एस चिनप्पा सहित अन्य अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

कुम्भ नगरी प्रयागराज के गंगा और यमुना के घाटों का हो रहा कायाकल्प

● 11 करोड़ से अधिक की लागत से शहर के सात घाटों को दिया जा रहा है नव्य स्वरूप

●छतरी, प्रकाश व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था और पर्यटकों के बैठने की उचित व्यवस्था की जा रही

लखनऊ/प्रयागराज। योगी सरकार बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी की तर्ज पर कुंभ नगरी प्रयागराज के घाटों का पुनरुद्धार करा रही है। इसके तहत गंगा और यमुना नदी के सात घाटों को नव्य स्वरूप दिया जा रहा है। इसका लगभग पचास प्रतिशत काम पूरा हो गया है। जानकारों की मानें तो इन घाटों के सौंदर्यीकरण का काम महाकुंभ से पहले पूरा कर लिया जाएगा। घाटों पर पर्यटकों की सहूलियत की अन्य व्यवस्था पर भी फोकस किया जा रहा है ताकि वह यहां पर अपना समय व्यतीत कर सकें।

महाकुंभ आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों की गतिविधियों का प्रमुख केंद्र गंगा और यमुना के घाट होते हैं। वह इन घाटों पर गंगा और यमुना की पावन धारा में डुबकी लगाते हैं। ऐसे में योगी सरकार इन घाटों का कायाकल्प कर रही है। जल निगम के कंस्ट्रक्शन एंड डिजाइन डिवीजन की तरफ से गंगा और यमुना नदी के इन सात घाटों को नव्य स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। कार्यदायी संस्था के प्रोजेक्ट मैनेजर रोहित कुमार राणा ने बताया कि 11.01 करोड़ की लागत से घाटों का कायाकल्प किया जा रहा है। अब तक प्रोजेक्ट का लगभग पचास फीसदी कार्य पूरा हो चुका है। बाढ़ का पानी कम होने के बाद काम में और गति आएगी।

गंगा और यमुना नदी के जिन 7 घाटों का कायाकल्प किया जा रहा है, उनमें बलुआ घाट, कालीघाट, रसूलाबाद घाट, छतनाग घाट झूंसी, नागेश्वर घाट झूंसी, मौजगिरी घाट और पुराना अरैल घाट शामिल हैं। इन घाटों में मौजगिरी घाट का 40 फ़ीसदी, नागेश्वर घाट का 35 फ़ीसदी, छतनाग घाट का 30 फ़ीसदी, रसूलाबाद घाट का 35 फीसदी, बलुआ घाट का 35 फीसदी, पुराना अरैल घाट का 40 फ़ीसदी और कालीघाट का 50 फीसदी कार्य पूरा हो चुका है। बताया जा रहा है कि नवंबर के पहले सभी घाटों का सौंदर्यीकरण और सुविधा विस्तार का कार्य पूरा कर लिया जाएगा। बता दें कि कुंभ मेला प्रशासन की प्राथमिकता महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को उच्च दर्जे की सुविधा प्रदान करना है। ऐसे में घाटों का आधुनिकीकरण और सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। वहीं इन सुदंर और स्वच्छ बनाने के लिए हरित पट्टी को भी विकसित किया जा रहा है। इन घाटों पर छतरी, हाईमास्ट, पेयजल आदि की व्यवस्था की जा रही है। वहीं स्वच्छ पानी के लिए आरओ को लगाया गया है जबकि सचल टॉयलेट और चेंजिंग रूम की भी व्यवस्था की गयी है।

यूपीसीडा जल्द शुरू कर रहा आईएमसी परियोजना

● निवेश का नया केंद्र बनेगा आगरा

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप उप्र राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) जल्द ही आगरा में इंटीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर (आईएमसी) की शुरुआत करने जा रहा है। योगी सरकार की यह महत्वाकांक्षी परियोजना अपने उत्कृष्ट स्थान और आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ आगरा के औद्योगिक क्षेत्र को नई दिशा प्रदान करेगी। आईएमसी आगरा, चमड़े, जूते और कृषि आधारित उत्पादों जैसे क्षेत्रों में आगरा की समृद्ध धरोहर का लाभ उठाते हुए, गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों को बढ़ावा देकर, आगरा को एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित करेगी। यह क्लस्टर आर्थिक विकास को गति देगा, मजबूत उद्योगों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करेगा और क्षेत्र के कुशल कार्यबल और स्थानीय विशेषज्ञता को प्रोत्साहित करेगा।

यूपीसीडा के सीईओ मयूर माहेश्वरी के अनुसार आगरा की पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता, खासकर ताज ट्रैपेज़ियम जोन के तहत, इसे पर्यावरण-अनुकूल औद्योगिक संचालन के लिए एक आदर्श स्थान बनाती है। आईएमसी आगरा इन पर्यावरणीय लक्ष्यों के साथ पूरी तरह मेल खाता है, जो टिकाऊ औद्योगिक तकनीकों के लिए प्रदूषण मुक्त और अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। इस परियोजना का स्थान इसे निवेशकों के लिए और भी आकर्षक बनाता है। इनर रिंग रोड के किनारे स्थित यह क्लस्टर दो प्रमुख क्लोवरलीफ जंक्शनों एनएच-19, जो दिल्ली एनसीआर से जोड़ता है, और आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे से समान दूरी पर स्थित है। इस बेहतरीन स्थान की वजह से सड़क कनेक्टिविटी बेहद अच्छी है, जिससे साइट को दो हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है। आईएमसी को उत्तर प्रदेश के विस्तृत एक्सप्रेसवे नेटवर्क से भी फायदा मिलेगा, जिससे लॉजिस्टिक्स में सुधार होगा और यात्रा का समय कम होगा।

एनएच-19 और आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे की नजदीकी सड़क परिवहन को आसान बनाती है। न्यू टूंडला स्टेशन से 22 किमी दूर स्थित, आईएमसी आगरा ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (ईडीएफसी) से जुड़ने के लिए एकदम सही स्थान पर है।यह स्थान कुशल रेल माल ढुलाई और सड़क पर भीड़भाड़ कम करने में पूरा सहयोग करेगा। यह वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डब्ल्यूडीएफसी) के साथ बेहतर कनेक्टिविटी भी प्रदान करती है। इसके अलावा, प्रस्तावित जेवर हवाई अड्डा, जो यमुना एक्सप्रेसवे के माध्यम से 140 किमी दूर है, हवाई कनेक्टिविटी को बढ़ाएगा, उच्च मूल्य वाले कार्गो के परिवहन का समर्थन करेगा और व्यापारिक यात्रियों के लिए आसानी से पहुंच उपलब्ध कराएगा।

आईएमसी आगरा, प्रस्तावित राष्ट्रीय जलमार्ग-110 (एनडब्ल्यू-110) के पास स्थित है, जहां से समोगर मुस्तकिल में कार्गो टर्मिनल केवल 1 किमी की दूरी पर है। यह जलमार्ग माल परिवहन के लिए एक प्रभावी विकल्प प्रदान करेगा और रेल नेटवर्क से जुड़कर लॉजिस्टिक क्षमताओं को और मजबूत करेगा। यह परियोजना आगरा के बाहरी इलाके में लगभग 1,000 एकड़ में फैली हुई है, जिसे बड़े पैमाने पर औद्योगिक विकास के उद्देश्य से अधिग्रहित किया गया है।

भाजपा की सियासत शहीदों में भी भेदभाव करने लगी है: अखिलेश

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा अब शहीदों के स्मारक पर भी बुलडोज़र चलवा रही है। मैनपुरी में कारगिल के वीर शहीद मुनीश यादव के सन् 2000 में बने प्रतिमा स्मारक को मिट्टी में मिलाने का जो दुस्साहस प्रशासन ने शासन के इशारे पर किया है, उससे देश के सैनिकों और देशप्रेमियों के बीच मूक आक्रोश पनप रहा है। अखिलेश यादव ने कहा कि देश के मान-सम्मान के लिए जीवन न्योछावर करने वालों की शहादत का मोल भाजपाई कभी नहीं समझ सकते हैं क्योंकि इतिहास गवाह है कि आज़ादी के आंदोलन में जो लोग स्वतंत्रता सेनानियों का साथ देने के बजाय औपनिवेशिक शासकों के कान-आँख बनकर रहे, वो भला बलिदान की क़ीमत क्या जानें। श्री यादव ने कहा

कि भाजपा की सियासत शहीदों में भी भेदभाव करने लगी है। ये नकारात्मक राजनीति का निकृष्टतम रूप है। यदि भाजपा में जरा भी शर्म बची है तो मंडल से लेकर जिले स्तर के सभी बड़े अधिकारियों को तत्काल निलंबित करे और प्रतिमा-स्मारक की ससम्मान पुनर्स्थापना करे। नहीं तो समाजवादी मिलकर ये कार्य करेंगे। कारगिल शहीद के स्मारक पर बुलडोजर चलाने का भाजपा सरकार का कुकृत्य निंदनीय है।

पुलिस की लचर पैरवी से छूटे आईआईटी बीएचयू के दुष्कर्मी:कांग्रेस

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय ने कहा कि वाराणसी के आईआईटी बीएचयू में बीटेक की छात्रा से दरिंदगी के दो आरोपी कल जमानत पर रिहा हो गए। इंसानियत को शर्मसार करने वाली इस घटना में पुलिस की लचर कार्यवाही के चलते दुष्कर्मियों को जमानत मिल गई। उक्त प्रकरण पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, पूर्व मंत्री श्री अजय राय ने कहा कि इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को अंजाम देकर तीनों आरोपी मध्य प्रदेश चुनाव में प्रचार के लिए चले गए और दोनों वही शरण पर रहे। मैंने पहले ही दिन इस बात को उठाया था कि इस घटना में भाजपा के लोगों का हाथ है। कांग्रेस पार्टी और छात्रों के दबाव के चलते वाराणसी पुलिस ने इन्हें लगभग 60 दिन बाद गिरफ्तार किया।

श्री राय ने कहा कि सत्ता दल के पदाधिकारी होने के कारण इतनी जघन्य घटना को अंजाम देने के बावजूद भी सरकार इन्हें बचाने में लगी रही। महिलाओं के प्रति योगी सरकार की क्या सोच है वह इस घटना से स्पष्ट है। पहले तो सरकार ने आरोपियों को बचाने की कोशिश की और जब दबाव के कारण गिरफ्तार करना पड़ा तो अब कोर्ट में लचर पैरवी कर मुकदमे को कमजोर किया जा रहा है। एक तरफ सत्ता की ताकत और दूसरी तरफ अपराधिक प्रवृत्ति, इस बात की क्या गारंटी है कि यह बाहर निकलकर पीड़िता को धमकाएंगे या फिर दबाव बनाने की कोशिश नहीं करेंगे। इतना ही नहीं दोनों आरोपियों की जमानत के बाद उनका स्वागत फूल माला से किया जा रहा है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री अजय राय ने कहा कि अभी हाल ही में प्रधानमंत्री ने कहा था कि महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामलों में जल्द न्याय मिले। जबकि उनके ही संसदीय क्षेत्र वाराणसी में दुष्कर्मियों को लचर पैरवी के चलते फायदा पहुंचाया जा रहा है। महिलाओं के प्रति अपराध करने वाले अपराधियों का स्वागत जब फूल-माला से होगा तो ऐसे में उनका मनोबल बढ़ेगा और आधी आबादी का कानून व्यवस्था पर से भरोसा उठ जाएगा। सच तो यह है कि जिस तरह से उत्तर प्रदेश में आए दिन महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ़ रहे हैं वह इसी लचर और संवेदनहीन कानून व्यवस्था का परिणाम है। दुष्कर्मियों को फूल-माला और पीड़िताओं के हिस्से में मायूसी और डर यही इस योगी सरकार की पहचान बन चुकी है।

एक्सप्रेसवेज को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस कर रही योगी सरकार

● गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे को एटीएमएस समेत तमाम आधुनिक सुविधाओं से युक्त करने की प्रक्रिया हुई शुरू

लखनऊ। उप्र को उत्तम प्रदेश बनाने के लिए संकल्पित योगी सरकार प्रदेश के एक्सप्रेसवेज को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस करने की प्रक्रिया पर भी काम कर रही है। एक्सप्रेसवे को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस करने से यात्रियों को मिलने वाली सुविधाओं में इजाफा तो हो रहा है, वहीं प्रदेश में लॉजिस्टिक्स संबंधी मूवमेंट को भी सुरक्षित निगरानी उपलब्ध कराने की प्रक्रिया में सुधार हुआ है। इस क्रम में सीएम योगी आदित्यनाथ के विजन अनुसार विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई थी जिसे क्रियान्वित करते हुए अब गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे को एडवांस्ड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम

(एटीएमएस) से लैस करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। उप्र एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा) ने क्रियान्वित करते हुए एजेंसी निर्धारण व कार्यावंटन की प्रक्रिया शुरू कर दी है। यूपीडा द्वारा बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे को भी आईटीएमएस युक्त करने की प्रक्रिया को लेकर भी कार्य शुरू किया गया था जो कि निरंतर प्रगति पर है।

गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे को आईटीएमएस इनेबल्ड बनाने के लिए जो कार्ययोजना तैयार की गई है उसके अनुसार इस एक्सप्रेसवे पर ट्रैफिक मैनेजमेंट कमांड सेंटर की स्थापना होगी। इसके जरिए ट्रैफिक मॉनिटरिंग व मैनेजमेंट प्रक्रिया को बल मिलेगा। ट्रैफिक मैनेजमेंट कंट्रोल (टीएमसी) यूनिट को रिकॉर्डिंग सर्वर स्टोरेज व बैकअप रिकॉर्डिंग्स सर्वर युक्त किया जाएगा। टीएमसी यूनिट को फैसिलिटी मॉनिटरिंग सिस्टम कंट्रोलर, ग्राफिक डिस्पले, इंटरनेट व एसएमएस सर्वर तथा फाइबर चैनल होस्ट से युक्त किया जाएगा। इमर्जेंसी टेलिफोन हेल्पलाइन कंसोल, स्टाफ के लिए आधार इनेबल्ड बायोमीट्रिक फिंगरप्रिंट स्कैनर मशीन समेत विभिन्न प्रकार की सुविधाओं से टीएमसी यूनिट को युक्त किया जाएगा।

मोशन डिटेक्शन सर्विलांस कैमेरा व व्हीकल स्पीड डिटेक्शन सिस्टम को गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे के दोनों तरफ इंस्टॉल किया जाएगा। ओवरस्पीडिंग करने वाली गाड़ियों के विषय में अलर्ट जारी हो सकेगा और कंट्रोल रूम द्वारा इसे तुरंत ट्रैक किया जा सकेगा। वीडियो इंसिडेंट डिटेक्शन एनफोर्स्ड सिस्टम (वीआईडीएस) तथा इंसिडेंट डिटेक्शन एनफोर्स्ड सिस्टम (आईडीएस) को भी आईटीएमएस प्रक्रिया के अंतर्गत लागू किया जाएगा। चयनित एजेंसी को इन सभी इक्विप्मेंट्स की प्रोक्योरमेंट, इस्टॉलेशन, ऑपरेशन व मेंटिनेंस से संबंधित कार्यों को पूर्ण करना होगा। इसके अतिरिक्त यूपीडा स्टाफ को इसके संचालन के लिए ट्रेनिंग भी उपलब्ध करायी जाएगी। इस क्रम में, टेक्निकल स्टाफ व कंट्रोल रूम ऑपरेशन स्टाफ की नियुक्ति का कार्य भी एजेंसी द्वारा पूर्ण किया जाएगा।

नियुक्ति की जांच के विरोध में संघ 24 से देगा धरना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

वर्ष 1981 से लेकर 2020 तक नियुक्त प्रदेश के सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के 40 हजार शिक्षकों एवं कर्मचारियों की नियुक्तियों की सतर्कता अधिष्ठान से जांच कराये जाने के विरोध में तथा पुरानी पेन्शन की बहाली सहित अन्य मांगो को लेकर 24 सितम्बर से 7 अक्टूबर, 2024 तक प्रदेश के मण्डलीय संयुक्त शिक्षा निदेशक कार्यालय पर धरना होगा। साथ ही संयुक्त शिक्षा निदेशक के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया जाएगा। यह निर्णय रविवार को उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष सुरेश कुमार त्रिपाठी की अध्यक्षता में रिसालदार पार्क स्थित उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के कार्यालय के सभागार में प्रान्तीय कार्यकारिणी की बैठक मे लिया गया। बैठक का संचालन महामंत्री नरेन्द्र कुमार वर्मा ने किया।

संगठन के प्रादेशिक उपाध्यक्ष एवं प्रवक्ता डा आरपी मिश्र ने बताया कि मण्डलीय सम्मेलन की शुरुआत 24 सितम्बर को मेरठ एवं मुज्जफरनगर तथा समापन 7 अक्टूबर को लखनऊ में होगा। इसी के साथ मुरादाबाद एव आगरा मण्डल 25 सितम्बर, बरेली व अलीगढ़ मण्डल 26 सितम्बर, झाँसी, आजमगढ़ व चित्रकूटधाम मण्डल 27 सितम्बर, कानपुर, अयोध्या व देवीपाटन मण्डल 28 सितम्बर, गोरखपुर व प्रयागराज मण्डल 30 सितम्बर, विन्ध्याचलधाम मण्डल 3 अक्टूबर, वाराणसी

मण्डल 4 अक्टूबर, तथा बस्ती मण्डल में 5 अक्टूबर को मण्डलीय धरना होगा। प्रदेश अध्यक्ष सुरेश कुमार त्रिपाठी ने जांच कराये जाने को शिक्षकों के विरूद्ध एक षडयन्त्र बताया। उन्होने कहा कि इस अवधि के अनेक शिक्षकों की मृत्यु हो चुकी है। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष एवं शिक्षक महासंघ के अध्यक्ष डा दिनेश चन्द्र शर्मा ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि एनपीएस की तरह यूपीएस भी धोखा है। संगठन पुरानी पेन्शन की बहाली के लिए अपना संघर्ष जारी रखेगा। उन्होने कहा कि शिक्षकों एवं कर्मचारियों के संघर्ष के सामने केन्द्र सरकार द्वारा यूपीएस लागू किया जाना दबाव दर्शाता है हमें विश्वास है कि संघर्ष के बल पर हम पुरानी पेंशन लागू कराके रहेगे। बैठक में प्रमुख रूप से प्रदेष अध्यक्ष सुरेश कुमार त्रिपाठी, शिक्षक महासंघ के अध्यक्ष डा दिनेश चन्द्र शर्मा, महामंत्री नरेन्द्र कुमार वर्मा, संरक्षक जगवीर किशोर जैन, महेश चन्द्र शर्मा इन्दासन सिंह, सुभाष चन्द्र शर्मा, रामेश्वर उपाध्याय, उपाध्यक्ष डा प्रमोद कुमार मिश्र, डा आरपी मिश्र, हेम राज सिंह सहित विभिन्न मण्डलों के अध्यक्ष एवं मंत्री तथा कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं सदस्य सम्मिलित थे।

भाजपा कार्यालय में हुई बैठक को क्षेत्रीय अध्यक्ष ने किया संबोधित

●सदस्यता अभियान को लेकर दिए दिशा-निर्देश

संवाददाता। फतेहपुर

शहर के जेल रोड स्थित भारतीय जनता पार्टी कार्यालय में आज प्रकोष्ठ व सदर विधानसभा क्षेत्र के शक्ति केन्द्र सहयोगी बैठक आयोजित हुई, जिसमें क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। श्री पाल ने संबोधित करते हुए कहा कि दो सितंबर सोमवार को सांय पांच बजे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा द्वारा 8800002024 नंबर को डायल करा कर सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया जायेगा। इसी के साथ ही पार्टी के सभी बूथों पर एक साथ कार्यकर्ता भी स्वयं सदस्यता प्राप्त करते हुए आस-पास के लोगों को भी सदस्यता अभियान से जोड़ते हुए, जिले को सबसे आगे रखने में अपना योगदान दें।

कहा कि पार्टी द्वारा सभी 22 वां प्रकोष्ठ के संयोजक व सहसंयोजकों को भी सदस्यता अभियान में अपनी अपनी मजबूत सकारात्मक भूमिका निभानी है, पार्टी का मानना है कि प्रत्येक जिले में जिला, मंडलों, मोर्चा टीम के साथ ही सभी प्रकोष्ठों के सहयोग से सदस्यता अभियान को सफल बनाया जाना है। जिलाध्यक्ष मुखलाल पाल द्वारा उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल द्वारा जो भी पार्टी सदस्यता अभियान को लेकर दिशा-निर्देश दिए गए हैं। हम विश्वास दिलाते हैं कि उपस्थित पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं द्वारा मनोयोग से पूर्ण सफल प्रयास करेंगे इस अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष मनोज शुक्ला व प्रमोद द्विवेदी, अभियान सहप्रभारी जिला महामंत्री उदय लोधी, पुष्पराज पटेल, नीरज सिंह, उपाध्याय अपर्णा सिंह गौतम व अर्चना त्रिपाठी, जिला मंत्री कुलदीप भदौरिया, शिव प्रसाद त्रिपाठी, जिला मीडिया प्रभारी प्रवीण कुमार सिंह, आदि मौजूद रहे।

पशुपति नाथ मंदिर में मनी कान्हा की छटी, उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

गुरसहायगंज, कन्नौज। भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष में नगर के पशुपति नाथ मंदिर में छटी कार्यक्रम का आयोजन धूमधाम के साथ किया गया। जिसमें मंदिर सेवा समिति द्वारा विधि विधान से पूजन करनें के उपरान्त विशाल कढ़ी-चावल भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें सैकडों लोगों ने भंडारे में पहुंचकर परसाद ग्रहण किया। भगवान श्रीकृष्ण के जन्म की छटी पर चकोर रोड स्थित पशुपति नाथ मंदिर में महंत द्वारा विधि विधान से पूजन करवानें के उपरान्त समाजसेवी देवेन्द्र गुप्ता के साथ मदिर समिति के पदाधिकारियों नें कान्हा को भोग लगानें के बाद कन्याओं को फल, मिष्ठान, दक्षिणा आदि प्रदान कर एवं साधु-संतो को अंगवस्त्र भेंट कर विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। जिसमें सैकडों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर व्यापार मण्डल के नगर अध्यक्ष अतुल गुप्ता, मयंक गुप्ता, सीमंस वर्मा, शिवा गुप्ता, प्रेमचन्द, अशु, हिमांशु, अनन्त, रजत, राजीव, निहाल, राहुल, अमित कटियार, चन्दन गुप्ता सहित सैकडों महिला व पुरूष भक्तगण मौजूद रहे।

समतामूलक सिद्धांत पर कार्य करने वाली पार्टी है कांग्रेसः आरिफ़

●कांग्रेस शहर कमेटी के पदाधिकारियों को किया गया सम्मानित

संवाददाता। फतेहपुर

कांग्रेस पार्टी ने शहर कांग्रेस कार्यालय ज्वालागंज में एक समारोह का अयोजन कर नवनियुक्त शहर कमेटी के पदाधिकारियों का सम्मान कर उन्हे अपने दयित्वों का समुचित निर्वहन करने का संकल्प कराया गया। कार्यक्रम में अतिथिगणों के रूप में जिलाध्यक्ष बीरेंद्र सिंह चौहान, जिला उपाध्यक्ष सुधाकर अवस्थी, जिला प्रवक्ता देवी प्रकाश दुबे, राजेंद्र लोधी उर्फ राजू लोधी, संगठन प्रभारी राजन तिवारी एवं वरिष्ठ नेता महेश द्विवेदी ने सम्मानित पदाधिकारियों को कर्तव्य निष्ठा के साथ कांग्रेस के सिद्धांतो पर चलते हुए जनता के बीच जाकर अपनी बात रखने को कहा।

श्री द्विवेदी ने कहा कि देश की राष्ट्र पति बंगाल की घटना में पत्र लिखकर अपना दर्द बयां किया है परंतु मणिपुर में जब वहां का प्रशासन औरतों को नग्न कर आतताइयों के बीच छोड़ रहा व प्रधानमंत्री के क्षेत्र वाराणसी में मेडिकल छात्रा के साथ हुए कांड से उन्हें कोई दुख नहीं हुआ। न ही उन्हें डर महसूस हुआ।

इसका अर्थ है कि वह भारत की नहीं भाजपा की राष्ट्रपति हैं। शहर अध्यक्ष मो. आरिफ गुड्डू ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस एक सैद्धांतिक पार्टी है एवं समता मूलक सिद्धांत पर कार्य करने वाली कांग्रेस ने सदैव देश के सभी वर्गों का हित चाहा है परंतु भाजपा ने धर्म एवं जातिवाद की राजनीति को बढ़ावा देकर भारत को कई वर्षों पीछे धकेल दिया है। जिसकी भरपाई एक कठिन कार्य है। समारोह में मुख्य रूप से पं. रामनरेश महाराज, बृजेश मिश्रा, आदित्य श्रीवास्तव, आनंद सिंह गौतम, शहाब अली, अजय बच्चा, दीपक ज्योति श्रीवास्तव, फैसल अब्बास, रुद्र तिवारी, रोहित अवस्थी, हाजी वकील खान, अमित श्रीवास्तव, मौजूद रहे।

नि:शुल्क नेत्र शिविर में किया गया मरीजों का परीक्षण

पुखरायां, कानपुर देहात। श्री ओमर वैश्य सेवा समिति पुखरायां द्वारा आयोजित निशुल्क 112 वॉ नेत्र शिविर शंकरा आई हॉस्पिटल चौबेपुर कानपुर के द्वारा सम्पन्न हुआ। जिसमें 84 मरीजों के नेत्रों की जांच की गई। उपयुक्त पाये गए 19 मरीजों को मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए रेफर किया गया। शंकरा आई हास्पिटल चौबेपुर कानपुर से सुआबाबा मंदिर परिसर पहुंची डाक्टर टीम के सदस्य डॉ0 रोहन, सहायक गौरव सिंह, प्रिंसी पाण्डेय, सबीना, खुश्बू, गोविंद त्रिवेदी, इकलाख द्वारा मरीजों की जांच सम्पादित हुई। जिसमें कि टीम ने 84 मरीजों का परीक्षण किया। उन्होंने मरीजों का शुगर, ब्लड प्रेशर की जांच भी की। जांच के बाद 19 मरीजों को निजी बस द्वारा मोतियाबिंद आप्रेशन के लिए चौबेपुर कानपुर रेफर किया गया। सेवा समिति की ओर से सभी मरीजों के लिए स्वलपाहार एवं चिकित्सा टीम के सदस्यों को भोजन व चाय की व्यवस्था करायी गई। समाज सेवी अनीता ओमर, गौरी शंकर ओमर, शारदा ओमर, दिनेश ओमर, राम जी ओमर ने मुफ्त दवा वितरित कराई। टीम के सदस्यों ने बताया कि अगला नेत्र शिविर 6 अक्टूबर 2024 को प्रात: 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक सुआ बाबा मन्दिर परिसर पुखरायॉ कानपुर देहात में संपन्न होगा।

ठगी पीड़ित जमाकर्ता परिवार ने शुरू किया असहयोग आंदोलन

●डीएम के माध्यम से पीएम व सीएम को भेजा ज्ञापन

संवाददाता। फतेहपुर

ठगी पीड़ितों को न्याय दिलाए जाने के उद्देश्य से रविवार को ठगी पीड़ित जमाकर्ता परिवार के लोगों ने नहर कालोनी परिसर में अनिश्चितकालीन असहयोग आंदोलन शुरू कर दिया और मांगों का एक ज्ञापन जिलाधिकारी के माध्यम से प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को भेजकर ठगी पीड़ितों का पैसा वापस दिलाए जाने की मांग की गई।

असहयोग आंदोलन की अगुवई जिलाध्यक्ष अमृतलाल ने की। पीएम व सीएम को भेजे गए ज्ञापन में परिवार के सदस्यों ने बताया कि संसद ने सर्वसम्मति से वर्ष 2019 में अनियमित जमा योजनाएं पाबंदी क़ानून 2019 बनाकर ठग कम्पनीज एवं ठग सोसाइटीज में डूबी हुई जमाराशि को पीड़ित आवेदक को 180 दिन में जमाराशि के दो से तीन गुणा वापस दिलाने का कानूनी अधिकार दिया था। अनियमित जमा योजनाएं पाबन्दी अधिनियम 2019 के अंतर्गत देश के प्रत्येक जिले में में पीड़ित आवेदकों से आवेदन लेने और उनका भुगतान करने हेतु भुगतान पटल की स्थापना कागजों में कानून में हुई थी।

अनियमित जमा और नियमित जमा योजनाओं में जनता के जमाधन की वापसी हेतु संसद और सरकार ने देशभर में विशेष न्यायालय सक्षम अधिकारी सहायक सक्षम अधिकारी और अन्य नोडल एजेंसीज का चयन एवं नियुक्ति की थी और कानून बनाकर जनता को यह विश्वास दिलाया था कि सरकार उनका डूबा हुआ ठगा गया धन वापस करेंगी और दोषी संचालको को दण्डित करेंगी, समयबद्ध कानून के लागू होने के 5 वर्ष बीत जाने के बावजूद भी बहुत से राज्यों एवं जिलों में संघ या राज्यों ने बड्स एक्ट 2019 के अंतर्गत पीड़ितों से न आवेदन आमंत्रित किए न आवेदन लेने के बाद उनका धन विधिसम्मत रूप से वापस किया।

जो करोड़ों नागरिकों के साथ अन्याय है और इसका प्रतिकार करना हमारा धर्म है अधिकार है। कहा कि शासन प्रशासन ने कानून पर विधि पूर्वक कार्य आरंभ किया होता तो अब तक सभी पीड़ितों का भुगतान हो गया होता और लाखों निवेशक प्रताड़ित एजेंट्स मौत के मुंह में जाने और पलायन एवं उत्पीड़न से बचाये जा सकते थे।

मांग किया कि भुगतान की गारंटी के अधिकार कानून अनियमित जमा योजनाएं पाबंदी अधिनियम 2019 प्रत्येक ठगी पीड़ित निवेशक की जमाराशि का दो से तीन गुणा भुगतान तुरंत करें, बेरोजगार निर्दोष एजेंट्स को सुरक्षा सम्मान रोजगार और पुनर्वास का अधिकार दें व भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 111 के तहत प्रत्येक ठग बेईमान को मृत्युदंड देकर पावन पवित्र हिंदुस्तान को ठगमुक्त बेईमान रहित राष्ट्र राज्य के रूप में स्थापित करने में सहयोग प्रदान करें। इस मौके पर हरीओम प्रजापति, सतीश कुमार विश्वकर्मा, मदनलाल आजाद, राम औतार, योगेंद्र कुमार पाल, मातादीन पाल, प्रेम कुमार, चंद्रशेखर प्रजापति, राकेश कुमार साहू, विनोद कुमार मौर्य, दीपक कुमार सैनी, महेश कुमार, शिव मोहन भी मौजूद रहे।

क्विक न्यूज

टीएसआई द्वारा वाहनों पर लगाए गए रिफ्लेक्टर टेप

गुरसहायगंज, कन्नौज। शाम के समय सड़क पर हो रही दुर्घटनाओं को रोकने के लिए ऐसे वाहनों में जिसमे पीछे की तरफ कोई लाइट व्यवस्था न होने पर रात में एक्सीडेंट होनी की संभावना अधिक रहती है। उन वाहनों में टीएसआई अरशद अली द्वारा रिफ्लेक्टर टेप लगाए गए। टीएसआई अरशद अली द्वारा नगर के चौराहा, तिराहा पर अभियान चलाते हुये ट्रैक्टर ट्राली में सवारी बैठाकर चलने वाले चालकों को कडी हिदायत दी गई कि आगे से कभी ट्राली में सवारी बैठाकर न चलें। वाहन चालकों को हिदायत की गई कि ड्राइविंग लाइसेंस अवश्य बनवा लें। यदि चालक के पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस नहीं पाया जाएगा तो चालक के साथ-साथ वाहन मालिक पर भी जुर्माने की कार्रवाई की जाएगी।

नवीन दीक्षित को मिला उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान

कानपुर देहात। शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट शिक्षण शैली, हर दिन शून्य निवेश नवाचार एवं नन्हे मुन्ने बच्चों की अधिकतम उपस्थिति को लेकर सदैव तत्पर रहने वाले कर्मठ बेसिक शिक्षा विभाग के उच्च प्राथमिक विद्यालय सिठमरा डेरापुर कानपुर देहात के शिक्षक नवीन कुमार दीक्षित को चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी मेरठ के उर्दू विभागाध्यक्ष डाक्टर असलम जमशेदपुरी, आराध्या प्रकाशन के सम्पादक सुदेश यादव,परिवहन निगम के उगासेन ने माला, उत्तरी एवं मूमेंटो प्रदान करके उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया। बताते चलें नवीन दीक्षित सप्ताह में दो दिन विद्यादान,हर सप्ताह पौधा रोपण,नशा मुक्ति,जल संरक्षण, स्कूल चलो अभियान, कठपुतली से शिक्षण, कबाड़ से जुगाड़ करके शैक्षिक सामग्री निर्माण करके बच्चों को गीत और कहानियों के माध्यम से मनोरंजक ढंग से शिक्षण के लिए जाने जाते हैं। कार्यक्रम में को सफल बनाने में कम्पोजिट विद्यालय खाता मवाना मेरठ की शिक्षक ऊषा विदवरिया एवं पूनम देवी,माला देवी, सूरज आदि ने विशेष सहयोग किया।

अब 10 सितंबर तक होंगे इग्नू में प्रवेश

पुखरायां, कानपुर देहात। इग्नू में प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़कर 10 सितंबर 2024 हो गई है। कस्बे के रामस्वरूप ग्राम उद्योग परास्नातक महाविद्यालय में संचालित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय इग्नू के समन्वयक डॉ. पर्वत सिंह ने यह जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि प्रोग्राम में प्रवेश लेने के लिए पहले 31 जुलाई प्रवेश की अंतिम तिथि तय हुई थी। अब इसे बढ़ाकर 10 सितंबर कर दिया गया है। जिन विद्यार्थियों को इग्नू से बीए ,बीकॉम, एमए अर्थशास्त्र, एमए हिंदी, एमए समाजशास्त्र एम ए अंग्रेजी अथवा डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश लेना है वह इग्नू की वेबसाइट लिंक पर जाकर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कर प्रवेश ले सकते हैं। वहीं महाविद्यालय के अध्ययन केंद्र संख्या-27211 के कार्यालय में भी प्रवेश लेने की सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए अध्ययन केंद्र समन्वयक के मोबाइल नंबर 9415867582, 8858263350 पर संपर्क कर सकते हैं। स्नातक स्तर पर अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों को इग्नू द्वारा प्रवेश शुल्क में विशेष छूट प्रदान की जा रही है।

नेशनल उर्दू अवार्ड से सम्मानित होंगे डॉ. गौहर मसूद

फतेहपुर। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर भारत के सभी राज्यों से 50 उर्दू शिक्षकों को नेशनल अवार्ड से ग़ालिब अकादमी दिल्ली में पांच सितंबर को शिक्षक दिवस के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा। डॉ. गौहर मसूद ने उर्दू भाषा और साहित्य के लिए उत्कृष्ट कार्य किया है। उनकी पीएचडी की किताब मोहसिन काकोरवी हयात और कारनामे 2011 में और कहानी संग्रह टेसू के फूल 2009 में प्रकाशित हो चुकी है उनकी तीसरी किताब लफ़्ज़ों का मुसाफ़िर बहुत जल्द प्रकाशित होने वाली है। उनकी कहानियों की किताब टेसू के फूल का अनावरण ओम घाट में श्री विज्ञानानंद महाराज जी के माटी से माटी का मिलन कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री राकेश सचान ने किया था। श्री मसूद की ग़ज़लें, लेख, कहानियां व जापानी कविताएं हाइको, सीनरीव और पंजाबी कविता माहिये भारत, पाकिस्तान, ओमान, ओस्लो, अमरीका, जर्मनी, लंदन और स्पेन की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। इससे पहले भी उन्हें लगभग एक दर्जन अवार्ड मिल चुके हैं।

जनपद में 10 थानाध्यक्षों का स्थानांतरण

फर्रुखाबाद। जनपद में पुलिस अधीक्षक आलोक प्रियदर्शी नें थानाध्यक्षों की तैनाती में बड़ा फेरबदल किया है । जिसमे फतेहगढ़, फर्रुखाबाद, मऊदरवाजा आदि के थानाध्यक्ष भी शामिल हैं। पुलिस अधीक्षक नें बीती रात थाना नवाबगंज के प्रभारी निरीक्षक आमोद कुमार सिंह को कोतवाल फतेहगढ़ की जिम्मेदारी दी है। प्रभारी जनशिकायत प्रकोष्ट निरीक्षक राजीव पाण्डेय को शहर कोतवाल बनाया है। थाना जहानगंज के प्रभारी निरीक्षक भोलेंद्र चतुर्वेदी की थानाध्यक्ष मऊदरवाजा, थानाध्यक्ष शमसाबाद बलराज भाटी को थानाध्यक्ष नवाबगंज, प्रभारी निरीक्षक फतेहगढ़ हरिश्याम सिंह को थानाध्यक्ष जहानगंज, प्रभारी निरीक्षक मऊदरवाजा अमित गंगवार को प्रभारी निरीक्षक शमसाबाद, थाना कायमगंज की चौकी कुआं खेड़ा प्रभारी विश्व नाथ आर्य को थानाध्यक्ष कम्पिल, अपराध निरीक्षक नवाबगंज कामता प्रसाद को अपराध निरीक्षक जहानगंज, प्रभारी निरीक्षक मेरापुर नवीन सिंह को प्रभारी जनशिकायत प्रकोष्ठ, थानाध्यक्ष कम्पिल उपनिरीक्षक जितेन्द्र चौधरी को थानाध्यक्ष मेरापुर बनाया गया है।

संदिग्ध हालत में महिला ने फांसी लगाकर दी जान

फतेहपुर। ललौली थाना क्षेत्र के ग्राम पूतनाही डोली में शनिवार की रात संदिग्ध परिस्थितियों में 21 वर्षीय महिला ने घर के अंदर फांसी लगाकर जीवनलीला समाप्त कर ली। मृतका के पिता ने पति पर मारने-पीटने का आरोप लगाया है। जानकारी के अनुसार पूतनाही डोली गांव निवासी कैलाश की पत्नी ममता ने शनिवार की देर रात उस वक्त फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली जब घर के सभी लोग गहरी नींद में सो रहे थे। सुबह जब लोगों की नींद खुली तो फांसी के फंदे पर ममता का शव देख घर में कोहराम मच गया। सूचना पाकर घटनास्थल पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया। पोस्टमार्टम हाउस में मृतका के पति कैलाश ने बताया कि वह मुंबई में रहकर ट्रक चलाता है। जब वह कल मुम्बई जाने के लिए घर से निकला तभी पत्नी से विवाद हो गया। ललौली कस्बा तक वह पीछा करते हुए आई। इसके बाद वह पत्नी को वापस लेकर घर चला गया। रात में कब उसने घटना को अंजाम दे दिया इसकी जानकारी नहीं है। पिता राम बिहारी ने बताया कि उसका दामाद शराब पीने के बाद पुत्री को मारता-पीटता था।

सुशासन विभाग ने धर्मेंद्र सिंह जनसेवक को किया सम्मानित

फतेहपुर। सुशासन विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा प्रदेश में सामाजिक कार्यों को लेकर प्रदेश स्तर में कार्य कर रहे लोगो का सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें प्रदेश की तमाम विभूतियों के साथ ही जनपद निवासी धर्मेंद्र सिंह जनसेवक को भी सम्मानित किया गया। राजधानी लखनऊ में सुशासन विभाग के संयोजक एव पूर्व डीजीपी सूर्य कुमार शुक्ला की अगुवाई में प्रदेश में सुशासन बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले लोगों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के डिप्टी सीएम बृजेश पाठक रहे। कार्यक्रम के दौरान जनपद के बजरंग दल के जिला सहसंयोजक एवं सामाजिक कार्यो में बढ़चढ़कर हिस्सा लेने वाले जनपद निवासी धर्मेंद्र सिंह जनसेवक को डिप्टी सीएम बृजेश पाठक द्वारा अंग वस्त्र भेंटकर व सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

शैलेन्द्र सिंह की बढ़ सकती हैं मुश्किलें, फर्जी मुकदमें की फाइल हुई दाखिल दफ्तर

●गैंगेस्टर एक्ट में 14-01 की कार्रवाई के लिए सीएम से मिलेंगे पीड़ित

संवाददाता। फतेहपुर

तकरीबन दो वर्ष पूर्व सदर कोतवाली में दर्ज हुए हत्या का प्रयास आदि गंभीर धाराओं वाले प्रकरण में पुलिस द्वारा क्रायसिंग रिपोर्ट लगाने के बाद अंत्योगत्वा न्यायालय ने पत्रावली को दाखिल दफ़्तर करने का आदेश जारी कर दिया। अदालत ने अपनी टिप्पणी में स्पष्ट किया है कि एक पुराने मुकदमें में सुलह समझौता के लिए दबाव बनाने के उद्देश्य से यह फर्जी एफआईआर दर्ज कराई गई थी। अब इस सनसनीखेज मामले में पुलिस की भूमिका पर चौतरफा सवाल उठ रहे हैं। उधर शैलेंद्र सिंह के खिलाफ़ 14-01 की कार्यवाही के लिए वादीगण मुख्यमंत्री से मिलने का निर्णय लिया है। उल्लेखनीय है कि शहर के चित्रांश नगर निवासी अमित शुक्ला ने 03 जनवरी 2021 को शैलेन्द्र सिंह उर्फ़राजू यादव एवं उसके पिता राम नरेश सिंह यादव के खिलाफ़ (मु.अ.सं. 07/2021) धोखाधड़ी समेत विभिन्न धाराओं में एक मुक़दमा दर्ज कराया था, जिसमें बाद में मानव तस्करी की धारा भी जोड़ी गई। इस मुकदमें में सुलह समझौता हेतु दबाव बनाने के उद्देश्य से शैलेन्द्र सिंह उर्फ़ राजू यादव ने 12 सितंबर 2022 को एक फर्जी एफआईआर अमित शुक्ला एवं उसके पिता सुरेश शुक्ला के खिलाफ़ दर्ज़ कराया।

वैसे तो यह एफआईआर तत्कालीन एसपी राजेश कुमार सिंह के आदेश पर सदर कोतवाली में दर्ज हुई थी, किन्तु दर्ज़ होने के कुछ ही घंटे में स्थानीय पुलिस की संदिग्ध भूमिका को लेकर बवाल मच जाने से पुलिस ने पहला पर्चा काटने के साथ ही इसे स्पंज कर दिया। उधर इसके कुछ ही दिनों बाद शैलेन्द्र जेल चला गया। बाद में उस पर गैंगेस्टर एक्ट के तहत भी कार्यवाही कर दी गई, जो लगभग 9 माह बाद हाईकोर्ट से जमानत पर रिहा हुआ। गौरतलब है कि गैंगेस्टर एक्ट के विवेचक मुकेश सिंह थाना प्रभारी मलवां ने विगत 23 मई 2024 को गैंगेस्टर कोर्ट में शैलेन्द्र सिंह व सह अभियुक्त आशुतोष सिंह के खिलाफ़ चार्जशीट तो दाखिल कर दी किन्तु विवेचक द्वारा 14-01 (अवैध रूप से अर्जित संपत्ति) की कार्यवाही (सीजिंग) नहीं की गई जबकि वादी मुकदमा लगातार इसकी मांग करता रहा है। खबर है कि बहुत जल्द वादी मुकदमा अमित शुक्ला सहित आधा दर्जन अन्य मुकदमों के पीड़ित वादी शैलेंद्र सिंह के खिलाफ़ 14-01 की कार्यवाही की मांग हेतु सूबे के सीएम योगी आदित्यनाथ से मिलेंगे।

अधेड़ महिला का शव नहर की पटरी के किनारे मिला

संडीला, हरदोई। कछौना के ग्राम बहुरावल निवासी एक महिला घर से हरदोई जाने की बात कहके निकली थी और उसका शव दूसरे दिन कोतवाली संडीला के इमालियाबाग बायपास के पास नहरपटरी के पास मिला। प्राप्त जानकारी के अनुसार शिक्षामित्र के पद पर कछौना के एक प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत अशोक कुमार की पत्नी 40 वर्षीय विनोद कुमारी घर से हरदोई जाने की बात कहकर निकली थी लेकिन वह घर नही पहुंची। घरवालो ने उनकी तलाश शुरू की लेकिन उनका कोई सुराग नहीं लगा। इसी बीच शनिवार को सुबह सोशल मीडिया पर अशोक कुमार ने एक शव को देखा तो उन्होंने उसे पहचान लिया। वह शव उनकी पत्नी विनोद कुमारी का ही था। वह कोतवाली संडीला पहुंचे और उन्होंने शव की पहचान की। अशोक कुमार का आरोप है कि उनकी पत्नी की हत्या करके शव फेंका गया है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है।

सीएमओ ने तीन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का किया औचक निरीक्षण

लखीमपुर खीरी। शासन द्वारा संचालित मुख्यमंत्री जन आरोग्य मेले के दृष्टिगत सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सहित दो नगरीय स्वास्थ्य केंद्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र निर्मल नगर में निरीक्षण के दौरान पर सफाई व्यवस्था में कमी नजर आई, जिसे लेकर उन्होंने व्यवस्था को दुरुस्त करने के निर्देश चिकित्सा अधिकारी को दिए हैं। इसके बाद वह शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र गोट्टैयाबाग पहुंचे, जहां पर समस्त कर्मचारी उपस्थित थे, परंतु यहां के फार्मासिस्ट प्रशांत राज उपस्थिति लगाकर अपने कार्य से नदारत मिले। इसे लेकर उनका स्पष्टीकरण तलब किया गया है। इसके बाद वह प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कालाआम पहुंचे, जहां पर निरीक्षण के समय तक 108 मरीज देखे गए थे, 6 मलेरिया की व एक डेंगू की जांच भी की गई थी, जो सभी नेगेटिव थीं। यहां भर्ती मरीज से उन्होंने मिल रही है सुविधाओं की जानकारी भी करी। यहां पर सफाई कर्मी के अनुपस्थित मिलने पर उन्होंने गहरी नाराजगी जाहिर करते हुए प्रभारी चिकित्सा अधिकारी को कार्रवाई के निर्देश दिए।

राठौर साहू समाज ने मेधावियों को किया सम्मानित

फर्रुखाबाद। जिला राठौर साहू समाज का 33वा वार्षिक अधिवेशन एवम मेधावी छात्र छात्रा सम्मान समारोह ठंडी सड़क स्थित नवभारत सभा भवन में फतेहचंद राठौर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अशोक कुमार राठौर प्रबंधक एस आर ग्रुप उरई जालौन, विशिष्ट अतिथि अनिल कुमार राठौर चेयरमैन नगर पालिका बिलग्राम हरदोई, शिवमंगल राठौर प्रदेश प्रमुख शोध विभाग, ओ बी सी मोर्चा, बरेली, कंचन राठौर प्रदेश उपाध्यक्ष राठौर साहू समाज कलान शाहजहांपुर रहे। कार्यक्रम में हाईस्कूल के 89 मेधावियों, इंटरमिडियट के 50 मेधावियों, स्नातक के 26 मेधावियों,सरकारी सर्विस के 10 अधिकारियों, वयोवृद्ध में 7 वरिष्ठों को सम्मान पत्र, स्टेशनरी फाइल, गिफ्ट देकर लगभग दो सैकड़ा मेधावियों व अन्य को सम्मानित किया गया। इस मौके पर जिला अध्यक्ष राम सिंह राठौर, महामंत्री विजय राठौर सहित समाज के एक सैकड़ा लोग मौजूद रहे। संचालन मनोज राठौर एड. मौजूद रहे।

गरीब नवाज फाउंडेशन ने रक्तदान शिविर का किया आयोजन

संडीला, हरदोई। एक सामाजिक संगठन गरीब नवाज रिलीफ फाउंडेशन ने रक्तदान शिविर का आयोजन कर मानवता की सेवा के लिए एक कदम बढ़ाया जिसमे बड़ी संख्या में लोगो की भागीदारी दिखी। एक मैरिज लॉन में आयोजित इस शिविर में लोगो ने लाइन में लगकर रक्तदान शुरू किया जिसमे सभी आयु के लोगों, फाउंडेशन के सदस्यों और समाजसेवियो ने रक्तदान किया। इस मौके पर फाउंडेशन के लखनऊ मंडल अध्यक्ष निजामुद्दीन अत्तरी ने बताया कि गरीब नवाज रिलीफ फाउंडेशन समय समय पर मानवता की सहायता के लिए तमाम तरह के आयोजन करता है। इसमें गरीबों को वस्त्र वितरण, अस्पतालों में भर्ती गरीब मरीजों को आर्थिक सहायता के अलावा समय समय पर रक्तदान शिविरो का अयोजन किया जाता है। इन शिविरो में संगठन के वॉलंटियर्स तथा जन सामान्य को प्रेरित कर उन्हे समाजसेवा के कार्यों में लगाया जाता है। उन्होंने सभी रक्तदाताओं, अन्य दानदाताओं की मुक्तकंठ से सराहना की। इस अवसर पर फाउंडेशन के जिलाप्रभारी जावेद अत्तारी, सरफराज अत्तरि, शहंशाह अंसारी, हाफिज तालिब आदि मौजूद रहे। इस अवसर पर रक्तदान करने वालो को प्रमाणपत्र भी प्राप्त किए गए।

शैलेन्द्र साहित्य सरोवर की 348 वीं रविवासरीय काव्य गोष्ठी संपन्न

फतेहपुर। शहर के मुराइन टोला स्थित हनुमान मंदिर में शैलेन्द्र साहित्य सरोवर के बैनर तले एक सरस काव्य गोष्ठी का आयोजन केपी सिंह कछवाह की अध्यक्षता एवं शैलेन्द्र कुमार द्विवेदी के संचालन में हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में मंदिर के महंत स्वामी रामदास उपस्थित रहे। काव्य गोष्ठी का शुभारंभ करते हुए केपी सिंह कछवाह ने वाणी वंदना मे अपने भाव प्रसून प्रस्तुत करते हुए कहा मातु शारदे, हे जगदम्बे, काली बनकर आओ। घात कर रहे राष्ट्र द्रोहियों, का अस्तित्व मिटाओ।। कार्यक्रम को गति देते हुए कविता पढ़ी-देश में अब जाति का, अवसान होना चाहिए। कर्म से हर व्यक्ति की, पहचान होना चाहिए।।

डा. सत्य नारायण मिश्र ने एक छंद के माध्यम से कुछ इस प्रकार अपने भाव व्यक्त किये निर्धन का कोऊ पूछत नाही, दुख ही दुख समुहाय। अजब-गजब या जग का मेला, अधरम ही पतियाय।। दिनेश कुमार श्रीवास्तव ने अपने भावों को मुक्तक में कुछ इस प्रकार पिरोया- इस पृथ्वी में सरल पुत्र हैं बहुत, किन्तु मैं एक चपल। शायद ही कोई विरला हो पुत्र जननि, मुझसा चंचल।। शिव सागर साहू ने काव्य पाठ किया आईएनएस अरिघात, बनी पनडुब्बी भारी। पंद्रह मिसाइलें लगीं, मार करिहैं भयकारी।। प्रदीप कुमार गौड़ ने अपने क्रम में काव्य पाठ में कुछ इस प्रकार भाव प्रस्तुत किये गर्वान्वित हों सभी पीढ़ियां, यदि हम नूतन वृक्ष लगाएं।

देव, पितृ, भारत की धरती, सबके सब हर्षित गुण गाएं।। काव्य गोष्ठी के आयोजक एवं संचालक शैलेन्द्र कुमार द्विवेदी ने अपने भाव एक गीत के माध्यम से कुछ यों व्यक्त किये जिसका अन्न, वायु,जल पाकर,पला शरीर तुम्हारा। उसके साथ दगा मत करना, रहे सदा ही प्यारा।। कार्यक्रम के अंत में स्वामी जी ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया। आयोजक ने सबका आभार व्यक्त किया।

महाकुंभ में आयोजित होगा हिंदू आध्यात्मिक सेवा कुंभ

देश के बड़े बड़े आश्रम और मठों द्वारा किए गए जा रहे सेवा कार्यों की लगाई जाएगी झांकी- हिंदू आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के जागरण के लिए संपूर्ण प्रांत में एक हजार संगोष्ठियों का होगा आयोजन

प्रयागराज। हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा फाउंडेशन पूर्वी उत्तर प्रदेश की बैठक रविवार को टैगोर टाउन में आयोजित हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि प्रयागराज में आगामी वर्ष 2025 में आयोजित होने वाले महाकुंभ मेला के दौरान फाउंडेशन की ओर से हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा कुंभ का आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर विशाल हिंदू आध्यात्मिक सेवा कार्यों की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। बैठक में सभी ने एक मत से निर्णय लिया कि समाज में हिंदू आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के जागरण के लिए संपूर्ण प्रांत में एक हजार संगोष्ठियों का आयोजन किया जाएगा। गोष्ठियों में समाज को पर्यावरण संरक्षण देशभक्ति का सम्मान करने नारी सम्मान स्वदेशी को अपने जीवन में अपनाने पारिवारिक एवं मानव मूल्यों को बढ़ावा देने तथा श्रेष्ठ नागरिक बनने का संकल्प दिलाया जाएगा। हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा कुंभ की तैयारी के बारे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ काशी प्रांत कार्यकारिणी के सदस्य नागेंद्र ने बताया कि हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा फाउंडेशन संपूर्ण देश में प्रकृति वंदन वृक्ष पूजन गंगा वंदन गो वंदन आचार्य वंदन मातृ पितृ वंदन अतिथि वंदन कन्या वंदन एवं परमवीर चक्र विजेता वंदन आदि कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदू धर्म एवं आध्यात्मिक की पताका को फहराने का कार्य कर रहा है। इसके लिए देश के सभी बड़ी शहरों में हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा मेलों का आयोजन किया जा रहा है। अब तक चेन्नई तिरुवंतपुरम हैदराबाद मुंबई दिल्ली नागपुर इंदौर जयपुर गाजियाबाद अहमदाबाद गौहटी आदि शहरों में हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा मेलों का आयोजन किया जा चुका है। इसी श्रृंखला में प्रयागराज महाकुंभ 2025 में एक विशाल हिंदू आध्यात्मिक सेवा कार्यों की प्रदर्शनी तथा आध्यात्मिक मेले का आयोजन किए जाने की योजना बनाई गई है। जिसमें देश विदेश के अनेक प्रतिष्ठित संत महात्माओं का जमावड़ा होगा। हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा फाउंडेशन भारतीय नारी के सम्मान को बढ़ाने के लिए मेले में 51 हजार कन्याओं के वंदन का भी कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प लिया गया है। हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा फाउंडेशन पूरी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्र संयोजक अमरनाथ ने कहा कि वास्तव में नारी का सम्मान तो पुरुष की आंखों में है यदि समाज में नारी सम्मान को बढ़ावा देना है तो पुरुषों के मन में स्त्री के मातृत्व एवं शक्तियों के महत्व के बारे में संस्कार डालना पड़ेगा तभी नारी सुरक्षित रहेगी। उन्होंने कहा कि आज हिंदू समाज में स्त्री पुरुष अनुपात में स्त्री का अनुपात घाटा हुआ है तो उसका कारण है सामाजिक बुराइयां जिसके कारण पुरुष स्त्री को सम्मान की दृष्टि से नहीं देख पाता है।

दोषियों के लिए मृत्युदंड के आश्वासन के कारण भीड़तंत्र स्थापित हो रहा: न्यायमूर्ति ओका

पुणे (महाराष्ट्र)। उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति अभय ओका ने रविवार को कहा कि नेताओं द्वारा कुछ घटनाओं का फायदा उठाए जाने और दोषियों के लिए मृत्युदंड का आश्वासन दिए जाने के कारण भीड़तंत्र स्थापित हो रहा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि केवल न्यायपालिका ही कानूनी फैसले दे सकती है। पुणे में महाराष्ट्र और गोवा बार काउंसिल द्वारा आयोजित एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए न्यायमूर्ति ओका ने न्यायपालिका की स्वतंत्रता बनाए रखने और शीघ्र न्यायपूर्ण निर्णय देने के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ मामलों में जमानत देने को लेकर न्यायपालिका की अकारण आलोचना की जाती है। न्यायमूर्ति ओका ने संविधान के पालन को सुनिश्चित करने में वकीलों और न्यायपालिका की भूमिका को रेखांकित किया।

न्यायमूर्ति ओका ने कहा, यदि न्यायपालिका का सम्मान किया जाना है तो इसकी स्वतंत्रता बरकरार रहनी चाहिए। संविधान का पालन तभी होगा जब वकील और न्यायपालिका संवेदनशील रहेंगे। न्यायपालिका की गरिमा बनाए रखने में वकीलों की प्रमुख भूमिका होती है और उन्हें यह जिम्मेदारी निभानी चाहिए, अन्यथा लोकतंत्र नहीं बचेगा। उन्होंने सार्वजनिक विमर्श की मौजूदा दिशा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि एक भीड़तंत्र बनाया जा रहा है, जिसमें नेता कुछ घटनाओं का लाभ उठाते हैं और लोगों को दोषियों के लिए मृत्युदंड का आश्वासन देते हैं, जबकि कानूनी फैसले देने का अधिकार केवल न्यायपालिका के पास है। न्यायमूर्ति ओका ने कहा, हमने भीड़तंत्र बना दिया है। जब कोई घटना होती है, तो राजनीतिक लोग इसका फायदा उठाते हैं। नेता उस विशेष स्थान पर जाते हैं और लोगों को आश्वासन देते हैं कि आरोपी को मौत की सजा दी जाएगी, लेकिन निर्णय लेने का अधिकार न्यायपालिका के पास है। उन्होंने किसी विशेष घटना का जिक्र नहीं लिया, लेकिन उनकी टिप्पणी कोलकाता में बलात्कार और हत्या की घटना तथा महाराष्ट्र के बदलापुर में एक स्कूल में दो बच्चियों के कथित यौन शोषण की पृष्ठभूमि में आई, जहां दोषियों को सख्त सजा देने की मांग उठी है। न्यायमूर्ति ओका ने कहा कि कुछ मामलों में जमानत दिए जाने पर न्यायपालिका पर बिना किसी कारण के आलोचनाओं की बौछार हो जाती है। उन्होंने कहा कि न्यायाधीशों को कानून के अनुसार निर्णय देना चाहिए जो पारदर्शी होना चाहिए। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने शनिवार को कोलकाता में एक डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या में शामिल लोगों के लिए मृत्युदंड की मांग की।

नंद के आनंद भयो, जै कन्हैया लाल की, हाथी घोड़ा पालकी

लखनऊ। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर भगवान श्री कृष्ण की छठी महोत्सव और गुरु पूर्णिमा महोत्सव के दो दिवसीय कार्यक्रम का आज भव्य समापन हुआ । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता शिवपाल सिंह यादवएऔर श्रीमती कुसुम राय और फिल्म जगत से आए अभिनेता शेखर सुमनए प्रीती झंगियानीए प्रवीण डबासए भजन सम्राट अनूप जलोटा और प्रसिद्ध हास्य कवि पद्मश्री सुनील जोगी मौजूद रहे । सभी अतिथियों ने आयोजन की खूब सराहना की । सपा नेता शिवपाल सिंह यादव ने संबोधित करते हुए कहा कि लखनऊ में ऐसे धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन पूरे प्रदेश के लिए गौरव की बात है। ऐसे आयोजन हमें प्रेरणा देते हैं और हमारे बच्चों के अंदर संस्कार विकसित करते हैं शिवपाल जी ने आगे कहा कि ऐसे धार्मिक कार्यक्रम हम सभी को सकारात्मक ऊर्जा देते हैं और सही मार्ग प्रशस्त करते हैं। तो वहीं कुसुम राय ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए लखनऊवासियों और प्रदेशवासियों का आभार व्यक्त किया । तथा साथ ही प्रीति झंगियानी ने कहा कि लखनऊ से सम्मान पाकर अभिभूत हूं । और भजन सम्राट अनूप जलोटा के संबोधन के दौरान सभी श्रोता भक्तगण झूम उठे और राधे राधे की गूंज पूरे आकाश में सुनाई दी ।कार्यक्रम के दूसरे दिन आज समापन के अवसर पर मां तुलसी पीठाधीश्वर एवं कथा व्यास श्री तुलसी जी महाराज की कथा का आयोजन किया गया जिसमें श्री कृष्ण की जन्म लीला और नंद उत्सव लीला का रोमांचक मंचन हुआ । इसके दौरान श्री तुलसी जी महाराज ने कहा कि आज भगवान श्रीकृष्ण की छठी महोत्सव पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जिसके मंचन के दौरान बरसानाए नंदगांव और गोकुल सहित पूरे देश से आई बधाइयां कार्यक्रम के नाम रहीं ।

महिलाओं से पुरानी परंपराओं पर सवाल उठाने की अपील करता नाटक

मुंबई। कुछ साल पहले, जब इला अरुण को थिएटर विशेषज्ञ और लाइटिंग डिजाइनर निसार अल्लाना ने हेनरिक इब्सेन के नाटक को रूपांतरित करने के लिए आमंत्रित किया तो इला ने इस नॉर्वेजियन नाटककार की कहानियों में खुद को डुबो दिया। इला को उनकी रचनाएं इतनी प्रासंगिक लगीं कि वे उन्हें भारतीय संदर्भ में पुनः कल्पित करने लगीं। 2016 में पहली बार उनके द्वारा इब्सेन के लिखे गए नाटक घोस्ट्स का रूपांतरण पीछा करती परछाइयाँ मंच पर प्रदर्शित किया गया और अब इसका टेलीप्ले संस्करण ज़ी थियेटर के माध्यम से छोटे पर्दे पर उपलब्ध होगा। इस नाटक का निर्देशन अभिनेता और निर्देशक के के रैना ने किया है और भारत भर में पचास से अधिक सफल प्रस्तुतियों के बाद, इसका प्रीमियर 25 अगस्त को टाटा प्ले पर हुआ।

अदालतों में लंबित मामले हम सभी के लिए बड़ी चुनौती: मुर्मू

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रविवार को कहा कि त्वरित न्याय सुनिश्चित करने के लिए अदालतों में स्थगन की संस्कृति को बदलने के प्रयास किए जाने की जरूरत है। जिला न्यायपालिका के दो-दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अदालतों में लंबित मामलों का होना हम सभी के लिए एक बड़ी चुनौती है।राष्ट्रपति ने कहा, अदालतों में स्थगन की संस्कृति को बदलने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाने की जरूरत है। मुर्मू ने कहा कि न्याय की रक्षा करना देश के सभी न्यायाधीशों की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि अदालती माहौल में आम लोगों का तनाव का स्तर बढ़ जाता है। उन्होंने इस विषय पर अध्ययन का भी सुझाव दिया। उन्होंने महिला न्यायिक अधिकारियों की संख्या में वृद्धि पर भी प्रसन्नता व्यक्त की। इस कार्यक्रम में प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और केंद्रीय कानून एवं न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल भी शामिल हुए। राष्ट्रपति मुर्मू ने भारत मंडपम में आयोजित कार्यक्रम के दौरान उच्चतम न्यायालय का ध्वज और प्रतीक चिह्न भी जारी किया। कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने रविवार को भारत में न्याय वितरण प्रणाली के बारे में तारीख पे तारीख की आम धारणा को तोड़ने के लिए सामूहिक प्रयासों का आह्वान किया और कहा कि इस तरह के प्रयासों से नागरिकों के बीच न्यायपालिका के प्रति विश्वास मजबूत होगा। उन्होंने लंबे समय से लंबित मुकदमों के मामले में गहन विश्लेषण करने का भी प्रस्ताव किया। मंत्री ने कहा कि लंबित मुकदमों का विश्लेषण और समान मामलों को एक साथ जोड़ने से अदालतों में लंबित मामलों की संख्या कम करने में मदद मिल सकती है और उन्होंने ऐसी व्यवस्था लागू करने के लिए कुछ उच्च न्यायालयों की सराहना भी की। यहां जिला न्यायपालिका के राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन सत्र को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की उपस्थिति में संबोधित करते हुए मेघवाल ने कहा कि उनके मंत्रालय ने सभी के लिए न्याय का लक्ष्य प्रस्तावित किया है।

जिला स्तर पर केवल 6.7 प्रतिशत अदालतों का बुनियादी ढांचा महिलाओं के अनुकूल

नई दिल्ली। प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डी वाई चंद्रचूड़ ने रविवार को कहा कि जिला स्तर पर केवल 6.7 प्रतिशत अदालतों का बुनियादी ढांचा महिलाओं के अनुकूल है और इस स्थिति को बदलने की जरूरत है। जिला न्यायपालिका के राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि अदालतें समाज के सभी सदस्यों के लिए सुरक्षित और सहज वातावरण प्रदान करें। उन्होंने कहा, हमें बिना किसी सवाल के इस तथ्य को बदलना होगा कि जिला स्तर पर हमारी अदालतों के बुनियादी ढांचे का केवल 6.7 प्रतिशत ही महिलाओं के अनुकूल है। क्या यह आज ऐसे देश में स्वीकार्य है, जहां कुछ राज्यों में भर्ती के बुनियादी स्तर पर 60 या 70 प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं? हमारा ध्यान सुलभता उपायों को बढ़ाने पर है, जिसे बुनियादी ढांचे के ऑडिट के माध्यम से समझा जा सकता है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, अदालतों में चिकित्सा सुविधाएं, शिशुगृह (क्रेच), ई-सेवा केंद्र जैसी सुविधाओं के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस के उपकरण होने चाहिए। इन प्रयासों का उद्देश्य न्याय तक पहुंच बढ़ाना है। उन्होंने कहा, स्वाभाविक रूप से, हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि हमारी अदालतें हमारे समाज के सभी सदस्यों, विशेषकर महिलाओं और अन्य कमजोर समूहों जैसे विकलांग व्यक्तियों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के सदस्यों तथा सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य के सभी लोगों के लिए एक सुरक्षित और अनुकूल वातावरण प्रदान करें। उन्होंने यह भी कहा कि हाल में संपन्न पहली राष्ट्रीय लोक अदालत में लगभग 1,000 मामलों का निपटारा पांच कार्य दिवसों के भीतर सौहार्दपूर्ण ढंग से किया गया।

अतिक्रमण मामले में पूर्व विधायक आसिफ मोहम्मद खान की याचिका खारिज की गई

नई दिल्ली। दिल्ली की एक सत्र अदालत ने भूमि अतिक्रमण मामले मे मजिस्ट्रेट अदालत द्वारा 2018 मे छह महीने कैद की सजा सुनाए जाने के खिलाफ कांग्रेस के पूर्व विधायक आसिफ मोहम्मद खान की अपील खारिज कर दी। अदालत ने कहा कि जनप्रतिनिधि के रूप मे सत्ता का दुरुपयोग एक गंभीर अपराध है और यह जनता के विश्वास को तोड़ने वाला कृत्य है। अदालत जसोला मे दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) की भूमि पर अतिक्रमण के मामले मे सजा के आदेश के खिलाफ खान की अपील पर सुनवाई कर रही थी। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश विशाल सिंह ने कहा कि कोई भी कम सजा पूरी तरह से अनुचित और अपराध की गंभीरता के अनुरूप नही होगी और निर्देश दिया कि खान को सजा काटने के लिए न्यायिक हिरासत मे ले लिया जाए। हालांकि, अदालत ने छह महीने की सजा के आदेश को संशोधित कर दिया, ताकि उनके द्वारा बिताई गई हिरासत की अवधि को सजा मे समायोजित किया जा सके। जनवरी 2018 मे मजिस्ट्रेट अदालत ने खान को भारतीय दंड संहिता की धारा 427 (पचास रुपए या उससे ज्यादा की राशि का नुकसान पहुंचाने वाला कृत्य), 447 (अतिक्रमण के लिए सजा), 434 (सार्वजनिक प्राधिकार द्वारा निर्धारित किसी महत्वपूर्ण स्थल को नष्ट करने या स्थानांतरित करने का कृत्य) और सार्वजनिक संपत्ति क्षति निवारण अधिनियम के प्रावधानो के तहत अपराधो के लिए दोषी ठहराया था। अदालत ने फिर पांच फरवरी, 2018 को अपराधो के लिए उन्हे छह महीने के कारावास की सजा सुनाई थी। दोषसिद्धि और सजा के आदेश के खिलाफ खान ने अपील दायर की। अदालत ने 28 अगस्त को पारित आदेश मे खान की इस दलील को बेबुनियाद बताते हुए खारिज कर दिया कि जसोला गांव मे डीडीए की जमीन पर कोई अतिक्रमण नही हुआ था। अदालत ने कहा, अभियोजन पक्ष के गवाहो की गवाही और दस्तावेजी साक्ष्यो के मद्देनजर अभियोजन पक्ष अपीलकर्ता (खान) के खिलाफ अपराध को साबित करने मे सफल रहा। इस दलील मे कोई दम नही है कि जांच अधिकारी ने उखाड़े गए कंटीले तारो को जब्त नही किया और कथित अतिक्रमण की कोई तस्वीर नही ली गई। इसने कहा कि मजिस्ट्रेट अदालत ने उन्हे दोषी ठहराने के लिए सबूतो का सही मूल्यांकन किया और फैसला तर्कसंगत था, इसलिए दोषसिद्धि के फैसले को चुनौती देने वाली वर्तमान अपील खारिज की जाती है।

निरर्थक याचिका दायर करने के लिए उद्धव ठाकरे को दो लाख रुपए दे याचिकाकर्ता: उच्च न्यायालय

मुंबई। (भाषा) मुंबई उच्च न्यायालय की औरंगाबाद पीठ ने शिवसेना (यूबीटी) के प्रमुख उद्धव ठाकरे के खिलाफ निरर्थक याचिका दायर करने पर नांदेड़ के एक व्यक्ति पर दो लाख रुपए का जुर्माना लगाया है और उसे यह राशि डिमांड ड्राफ्ट के रूप में महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री को व्यक्तिगत रूप से सौंपने का निर्देश दिया है। दर्शनशास्त्र में डॉक्टरेट होने का दावा करने वाले और बंजारा समुदाय से संबंध रखने वाले मोहन चव्हाण ने दलील दी थी कि एक समारोह के दौरान उसके महंत द्वारा दी गई विभूति को न लगाकर ठाकरे ने उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत किया है। न्यायमूर्ति एस जी मेहरे की एकल पीठ ने 29 अगस्त के आदेश में कहा कि कानून की थोड़ी सी जानकारी रखने वाला व्यक्ति भी याचिका को पहली बार देखकर ही बता देगा कि यह कानून की प्रक्रिया का दुरुपयोग या प्रसिद्ध और सेलिब्रिटी बनने के लिए न्यायिक प्रणाली का इस्तेमाल करने के अलावा और कुछ नहीं है।अदालत ने कहा, ऐसी याचिकाएं समाज के सम्मानित सदस्यों की छवि को खराब करती हैं। अकसर ऐसी याचिकाएं गलत इरादे से दायर की जाती हैं। इसने कहा कि ठाकरे के खिलाफ लगाए गए आरोपों का मूल रूप से कोई आधार नहीं है।पीठ ने चव्हाण को याचिका वापस लेने की अनुमति देते हुए कहा कि यह कानूनी प्रक्रिया का दुरुपयोग करने पर जुर्माना लगाने के लिए एक उचित मामला है।अदालत ने चव्हाण पर दो लाख रुपए का जुर्माना लगाया जिसे याचिकाकर्ता को तीन सप्ताह के भीतर ठाकरे को देना होगा। अदालत ने चेतावनी दी कि यदि यह राशि नहीं दी गई तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

भाजपा के मुंबई से विधायकों ने आरएसएस नेताओं के साथ बंद कमरे में गहन मंत्रणा की

मुंबई। (भाषा) चालू साल के अंत में संभावित महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) के मुंबई के विधायकों ने रविवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के नेताओं के साथ बंद कमरे में बैठक की। मध्य मुंबई के लोअर परेल में यशवंत भवन में हुई बैठक छह घंटे से अधिक समय तक चली। बैठक से उनके बाहर आने के बाद, भाजपा विधायकों और पार्टी की मुंबई इकाई के पदाधिकारियों ने अपनी चर्चा के बारे में चुप्पी साधे रखी। आरएसएस के एक पदाधिकारी ने बैठक को एक नियमित बैठक बताया। भाजपा की मुंबई इकाई के प्रमुख एवं बांद्रा से विधायक आशीष शेलार ने 26 अगस्त को सिंधुदुर्ग जिले में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा गिरने पर प्रदर्शन करने को लेकर विपक्षी गठबंधन महा विकास आघाडी (एमवीए) की आलोचना की। दक्षिण मुंबई में रविवार को हुए एमवीए के प्रदर्शन का हवाला देते हुए उन्होंने इसे आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर राजनीतिक रूप से प्रेरित बताया। महाराष्ट्र की 288 सदस्यीय विधानसभा के लिए चुनाव अक्टूबर या नवंबर में होने की संभावना है। पिछले विधानसभा चुनाव में मुंबई की 36 सीट में से 16 सीट भाजपा ने जीती थी।

कोलकाता प्रदर्शन: छात्र समाज के नेता सायन लाहिड़ी की जमानत के खिलाफ याचिका पर सोमवार को सुनवाई

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय 27 अगस्त को राज्य सचिवालय मार्च के आयोजको मे शामिल एक व्यक्ति को जमानत देने संबंधी कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने वाली पश्चिम बंगाल सरकार की याचिका पर सोमवार को सुनवाई करेगा।पश्चिम बंगाल के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल मे इस महीने की शुरुआत मे एक प्रशिक्षु डॉक्टर से बलात्कार व उसकी हत्या की घटना के विरोध मे यह रैली आयोजित की गई थी। शीर्ष अदालत की मामला सूची के अनुसार, प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ द्वारा याचिका की सुनवाई किए जाने की संभावना है। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को पश्चिम बंग छात्र समाज के नेता सायन लाहिड़ी को जमानत दी थी। यह संगठन, एक अपंजीकृत छात्र समूह है। यह उन दो संगठनो मे एक है जिसने 27 अगस्त के नबान्न (राज्य सचिवालय) अभियान का आह्वान किया था। लाहिड़ी को 27 अगस्त की शाम रैली का नेतृत्व करने मे सक्रिय भूमिका निभाने के आरोप मे गिरफ्तार किया गया था। पुलिस ने कहा था कि रैली हिंसक हो गई, जिससे सार्वजनिक और निजी संपत्ति को नुकसान पहुंचा तथा और सुरक्षाकर्मियो पर हमले हुए।

पेज 1 का शेष

न्याय के...

विवेकानंद के चित्रों को लेकर गोल पार्क से नंदन सिनेमा परिसर तक न्याय की मांग करते हुए एक लंबी रैली निकाली। दक्षिण कोलकाता के 10 स्कूलों के पूर्व छात्रों द्वारा मिंटो पार्क से हाजरा क्रॉसिंग तक ऐसी ही रैलियां निकाली गईं डॉक्टरों के संयुक्त मंच की रैली में भाग लेने वाले डॉक्टर मृणाल बिस्वास ने कहा, अब समय आ गया है जब आपको अपने आचरण की व्याख्या करनी होगी, नागरिक समाज आपके हर काम के लिए स्पष्टीकरण मांगता है... आपने गुंडों को शिक्षा परिसरों पर नियंत्रण करने दिया है, जहां हर जगह उनका सिंडिकेट चल रहा है और जब भी कोई विरोध होता है तो आप उन्हें खत्म कर देते हैं... यह अनंत काल तक नहीं चल सकता। हालांकि उन्होंने इस बात पर ज्यादा विस्तार से नहीं बताया कि उन्होंने 'आप' किसे कहा। उत्तर 24 परगना के मध्यमग्राम में एक नौ वर्षीय लड़की के साथ उसके पड़ोसी ने छेड़छाड़ की, जिसके बाद स्थानीय लोगों ने एक स्थानीय पंचायत सदस्य के घर पर हमला कर दिया। भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा और आंसू गैस के गोले दागने पड़े। घटना शनिवार रात की है। पुलिस ने बताया कि एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। हावड़ा जनरल अस्पताल में एक और घटना हुई, जहां इलाज के लिए आई नाबालिग मरीज के साथ छेड़छाड़ करने के आरोप में अस्पताल के एक कर्मचारी को कथित तौर पर हिरासत में लिया गया। मां ने कहा, मेरी बेटी के होठों को काटा गया और इस आदमी ने उसके साथ छेड़छाड़ की... जब वह जोर-जोर से रोने लगी तो हम उस कमरे में पहुंचे और उसे पकड़ लिया। अस्पताल अधीक्षक ने कहा, हमने आरोपी व्यक्ति को कारण बताओ नोटिस जारी किया है और उचित कार्रवाई करेंगे। इसी तरह की घटना बीरभूम जिले के इलमबाजार में हुई, जहां एक मरीज के रिश्तेदार ने ड्यूटी पर मौजूद नर्स के साथ छेड़छाड़ की, जिसके बाद डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ को अस्थायी रूप से काम बंद करना पड़ा। नर्स ने कहा, जब मैं मरीज की देखभाल कर रही थी, तब वह मेरे साथ छेड़छाड़ कर रहा था... जब मैंने शोर मचाया तो वह मुझे धमकाने लगा... बाद में पुलिस ने बताया कि उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

जद (यू)...

कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा भाजपा के साथ संबंधों को मजबूत बनाने में भूमिका निभाएं।भाजपा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) में मतभेद को लेकर अक्सर होने वाली चर्चाओं को विराम देने के लिए सहयोगी दलों के बीच बेहतर समन्वय बनाए रखने के वास्ते घटक दलों के नेताओं से संपर्क कर रही है। जद (यू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार ने राजीव रंजन प्रसाद को पार्टी का नया राष्ट्रीय प्रवक्ता नियुक्त किया है। प्रसाद वर्तमान में पार्टी के राष्ट्रीय सचिव की भूमिका में थे।

मॉलीवुड...

कि अगर गलत काम करने वालों के खिलाफ सबूत हैं तो उन्हें दंडित किया जाना चाहिए। वर्ष 2017 में अभिनेत्री पर हमला मामले के बाद केरल सरकार ने जस्टिस के हेमा समिति का गठन किया था और इसकी रिपोर्ट में मलयालम सिनेमा उद्योग में महिलाओं के उत्पीड़न और शोषण के मामलों का खुलासा हुआ था।इस बीच, फिल्म कर्मचारी संघ केरल के महासचिव बी उन्नीकृष्णन ने रविवार को कहा कि सिनेमा उद्योग में मजबूत गठबंधन हैं, लेकिन उन्हें जस्टिस के हेमा समिति की रिपोर्ट में बताए गए किसी शक्ति समूह के बारे में जानकारी नहीं है।एक साक्षात्कार में उन्नीकृष्णन ने कहा कि यह एक निर्विवाद तथ्य है कि कुछ प्रोडक्शन हाउस ने बड़ी फिल्में बनाने के लिए कुछ निर्देशकों, लेखकों और अभिनेताओं के साथ मजबूत गठबंधन किया है। उन्होंने कहा, वह अक्सर कई परियोजनाओं पर एक साथ काम करते हैं और स्वाभाविक रूप से, हर कोई अवसर पाने के लिए खुद को उनके साथ जोड़ने की कोशिश करता है। हालांकि, ऐसे गठबंधन व्यावसायिक हितों पर आधारित होते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे गठबंधन केवल मलयालम सिनेमा तक ही सीमित नहीं हैं और हर जगह फिल्म उद्योग में मौजूद हैं। सिनेमा से जुड़े विभिन्न संगठनों की कोई गुप्त लॉबी नहीं हो सकती जो समय-समय पर बैठक करके यह तय करे कि फिल्मों से किसे अलग रखा जाए। फिल्म उद्योग में कोई पावर सेंटर है या नहीं, इस बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, उद्योग इस तरह से काम नहीं कर पाएगा। यह पूछे जाने पर कि क्या समिति की रिपोर्ट पर मलयालम मूवी आर्टिस्ट्स एसोसिएशन की प्रतिक्रिया में देरी हुई है।

भाजपा ने ...

बदल गया। बाद में, एक वीडियो संदेश में उन्होंने कहा कि कुछ लोग उन्हें भाजपा मुख्यालय ले गए थे। रामचंद्र ने वीडियो संदेश में कहा, वहां उन्होंने मुझे धमकी दी कि मुझे ईडी तथा सीबीआई द्वारा फंसा दिया जाएगा। मेरे बेटे आकाश ने पुलिस हेल्पलाइन पर फोन किया जबकि पार्टी के हमारे वरिष्ठ नेताओं ने पुलिस आयुक्त को फोन किया। जब उन्हें (भाजपा) इस बारे में पता चला तो उन्होंने मुझे वापस घर भेज दिया। उन्होंने आप द्वारा साझा की गई वीडियो में कहा, मैं भाजपा को बताना चाहता हूं कि मुझे ईडी और सीबीआई से डर नहीं लगता। मैंने कुछ गलत नहीं किया है। आप के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने रविवार को रामचंद्र के बेटे आकाश का एक वीडियो एक्स पर साझा किया, जिसमें उसने आरोप लगाया है कि उसके पिता को अगवा कर लिया गया है। वीडियो में आकाश ने कहा, मेरे पिता को भाजपा के एक पूर्व पार्षद का एक फोन आया जिसमें कहा गया, हम आपसे मिलने के लिए आपके घर के बाहर खड़े हैं। मेरे पिता अपने कार्यालय से नीचे उतरे। हमें जानकारी मिली है कि चार . पांच लोगों ने मेरे पिता को धमकी दी कि उन्हें ईडी-सीबीआई फंसा देगी और वे उन्हें ले गए। हम उनकी तलाश कर रहे हैं।

आंध्र में ...

जबकि 14 मंडलों में 20 सेंटीमीटर से ज्यादा बारिश दर्ज की गई। उन्होंने कहा कि 14 जिलों में 94 अन्य स्थानों पर सात से 12 सेंटीमीटर के बीच बारिश हुई। मुख्यमंत्री ने कहा कि कि बारिश से संबंधित घटनाओं में नौ लोगों की मौत होने और एक व्यक्ति के गुमशुदा होने का मामला दर्ज किया गया है। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने कहा कि बारिश से प्रभावित 17,000 लोगों को 107 राहत शिविरों में पहुंचाया गया है, जबकि 1.1 लाख हेक्टेयर से अधिक कृषि क्षेत्र और 7,360 हेक्टेयर बागवानी क्षेत्र को नुकसान हुआ है। नायडू ने कहा कि लोगों के लिए पुनर्वास केंद्रों पर भोजन की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने कहा कि राहत सामग्री के रूप में 25 किलोग्राम चावल, तथा एक-एक किलोग्राम दाल, चीनी, प्याज और तेल वितरित किया जा रहा है। विजयवाड़ा के नगर आयुक्त एच एम ध्यानचंद्र ने मीडिया से बातचीत में कहा, बुदमेरु (नहर) कई इलाकों में ओवरफ्लो हो रही है। 12 वार्ड जलमग्न हो गए हैं। पानी के बहाव को रोकने के लिए अपस्ट्रीम गेट बंद कर दिए गए हैं। करीब 3,000 लोगों को निकाला गया है। बुदमेरु की स्थिति को नियंत्रण में लाने का आश्वासन देते हुए नगर आयुक्त ने कहा कि राहत कार्यों के लिए एनडीआरएफ की दो और एसडीआरएफ की दो टीम तैनात की जाएंगी। इससे पहले, मौसम विभाग के एक अधिकारी ने देखा कि उत्तरी आंध्र प्रदेश और दक्षिणी ओडिशा के तटों पर बना अवदाब, जो पिछले दो दिनों से भारी बारिश का कारण बन रहा है, रविवार की सुबह कलिंगपट्टनम के पास दक्षिणी राज्य के तट को पार करने के लिए उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ गया।

भ्रामक विज्ञापन...

पाठ्यक्रम की प्रारंभ तिथि 09.10.2022 बताई गई है, लेकिन यूपीएससी सीएसई, 2022 परीक्षा की प्रारंभिक परीक्षा पहले ही 05.06.2022 को आयोजित की जा चुकी थी और परिणाम 22.06.2022 को घोषित किया गया था, जिसका केवल यह अर्थ हो सकता है कि इन उम्मीदवारों ने अगली यूपीएससी सीएसई प्रारंभिक परीक्षा यानी 2023 के लिए प्रारंभिक पाठ्यक्रम खरीदा था। शंकर आईएएस ने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2022 की अपनी कुल चयन सूची में इन उम्मीदवारों का दावा किया है।

सीसीपीए की अध्यक्ष मुख्य आयुक्त निधि खरे और आयुक्त अनुपम मिश्रा ने कहा कि यह निर्णय उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा और उन्हें बढ़ावा देने के लिए लिया गया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि किसी भी वस्तु या सेवा का कोई गलत या भ्रामक विज्ञापन न किया जाए जो उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 के प्रावधानों का उल्लंघन करता हो। उन्होंने उल्लेख किया कि शंकर आईएएस अकादमी का विज्ञापन हर साल यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए उपभोक्ताओं के एक वर्ग - यूपीएससी उम्मीदवारों के लिए लक्षित था। इसीलिए ऐसे विज्ञापनों में महत्वपूर्ण जानकारी का खुलासा करके तथ्यों का सच्चाई व ईमानदारी से प्रतिनिधित्व होना चाहिए ताकि वे स्पष्ट, प्रमुख हों और उपभोक्ताओं के लिए नज़रअंदाज़ करना बेहद मुश्किल हो।

धनखड़ ने कोलकाता दुष्कर्म, हत्या पर कुछ लोगों की चुप्पी पर सवाल उठाए

भाषा। देहरादून

उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कोलकाता के आर.जी. कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में एक महिला चिकित्सक से कथित दुष्कर्म एवं हत्या के मामले में कुछ गैर सरकारी संगठनों की चुप्पी पर सवाल उठाए और उस घटना को चरम सीमा पर व्यक्त की गई बर्बरता बताया। ऋषिकेश स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में छात्रों और शिक्षकों को संबोधित करते हुए धनखड़ ने यह भी कहा कि ऐसी बर्बर घटनाए पूरी सभ्यता को शर्मसार कर देती हैं और उस आदर्श को खंडित कर

देती हैं जिसके लिए भारत जाना जाता है। उन्होंने कहा कि इन घटनाओं को राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) के चयनात्मक मौन की आलोचना करते हुए धनखड़ ने कहा कि छोटी-छोटी घटनाओं पर शोर मचाने वाले कुछ गैर सरकारी संगठन आज शांत अवस्था में हैं।उप राष्ट्रपति ने कहा, उनकी चुप्पी नौ अगस्त 2024 को हुए इस जघन्य अपराध के अपराधियों के कृत्य से भी बदतर है। उन्होंने कहा, जो लोग राजनीति करना चाहते हैं और अच्छे अंक बनाना चाहते हैं, वे अपनी अंतरात्मा की आवाज का जवाब नहीं दे रहे हैं। उप राष्ट्रपति ने किसी का नाम लिए बिना कहा कि कुछ लोग इस घटना पर अपने बयानों से जख्मों पर नमक छिड़कने का काम भी कर रहे हैं एक सांसद और वरिष्ठ अधिवक्ता द्वारा घटना को सिम्पटोमेटिक मलाइस बताए जाने का जिक्र करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा, मैं ऐसी गुमराह आत्माओं से अपने विचारों पर दोबारा विचार करने और सार्वजनिक रूप से माफी मांगने का आह्वान करता हूं। धनखड़ ने कहा कि यह समय राजनीतिक चश्मे से देखने का नहीं है। उन्होंने कहा, राजनीतिक चश्मा खतरनाक होता है और आपकी निष्पक्षता को खत्म कर देता है। उन्होंने कहा, हमारी सभ्यता और लोकतांत्रिक मूल्य उस सम्मान से परिभाषित किए जाएंगे जो हम अपनी महिलाओं और लड़कियों को देते हैं। धनखड़ ने कहा कि जिसने भी यह किया है, उसे जवाबदेह ठहराया जाएगा, लेकिन समाज को भी इसके लिए जवाबदेह माना जाएगा। उन्होंने कहा कि समाज अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता।

रेवेंशा विश्वविद्यालय का नाम बदलने के प्रधान के सुझाव पर राजनीतिक विवाद छिड़ा

भुवनेश्वर। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के कटक स्थित 156 साल पुराने रेवेंशा विश्वविद्यालय का नाम बदलने के सुझाव से राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है और विपक्षी दलों बीजद तथा कांग्रेस ने उनसे माफी की मांग की है। प्रधान ने शनिवार को कटक में एक कार्यक्रम के दौरान सुझाव दिया था कि रेवेंशा विश्वविद्यालय का नाम बदल दिया जाना चाहिए। प्रधान ने कटक में स्वशासन दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में कहा था, नाम परिवर्तन की आवश्यकता है। रेवेंशा, जिनके नाम पर विश्वविद्यालय का नाम रखा गया है, उन्होंने अकाल के दौरान जो किया, उससे ओडिशा के लोगों को नुकसान हुआ। बीजू जनता दल (बीजद) के प्रवक्ता लेनिन मोहंती ने

यहां आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में प्रधान पर हमला बोला और कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री को राज्य के इतिहास और ओडिशा में उच्च शिक्षा के लिए रेवेंशा के योगदान के बारे में जानकारी नहीं है। मोहंती ने कहा, प्रधान द्वारा ओडिशा अस्मिता की आड़ में दिया गया यह एक बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बयान है। ऐसा करने से पहले उन्हें थोड़ा इतिहास पढ़ लेना चाहिए था। भाजपा ने तुरंत प्रतिक्रिया व्यक्त की और विपक्षी दल से इसे राजनीतिक मुद्दा न बनाने को कहा। उपमुख्यमंत्री के.वी. सिंह देव और ओडिशा के उच्च शिक्षा मंत्री सूर्यवंशी सूरज ने कहा, रेवेंशा पर टिप्पणी केंद्रीय मंत्री की निजी राय थी। वह मुद्दों पर अपनी राय देने के लिए स्वतंत्र हैं। बाराबती-कटक से कांग्रेस विधायक सोफिया फिरदौस ने कहा कि रेवेंशा एक भावना है और इसका नाम बदलने जैसी तुच्छ चीजों के बारे में परेशान होने के बजाय इसे विश्व स्तरीय विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए। कांग्रेस ने एक बयान में कहा कि भाजपा को अपनी मानसिकता बदलनी चाहिए और संस्थानों के नाम व रंग बदलने के अपने कृत्य से बचना चाहिए।

देवी अहिल्याबाई के जीवन के प्रेरक पहलुओं को प्रदर्शित किया जाएगा : मोहन यादव

इंदौर। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने रविवार को कहा कि उनकी सरकार पूर्ववर्ती होलकर राजवंश (मराठा मालवा राज्य) की महारानी देवी अहिल्याबाई के जीवन के प्रेरक पहलुओं को देशभर में प्रदर्शित करेगी। मुख्यमंत्री ने देवी अहिल्याबाई की 229वी पुण्यतिथि पर आयोजित एक समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने यह कार्यक्रम आयोजित करने और पूर्व महारानी के जीवन के प्रेरणादायक पहलुओं को देशभर मे लोकप्रिय बनाने के लिए एक समिति गठित की है। उन्होंने कहा कि इन कार्यक्रमों के माध्यम से मध्यप्रदेश सरकार अहिल्याबाई के जीवन के विभिन्न पहलुओं को लोगो के बीच रखेगी ताकि लोग उन पहलुओं से प्रेरणा ले सकें। यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने पहले ही अहिल्याबाई उत्सव समिति के सदस्यो के नामो पर अपनी मुहर लगा दी है और सोमवार को औपचारिक रूप से उनकी घोषणा की जाएगी।

अनुभवहीन मूर्तिकार को चुनना गलत फैसला था: आठवले

मुंबई। केंद्रीय मंत्री और राजग के सहयोगी रामदास आठवले ने रविवार को कहा कि शिवाजी महाराज की प्रतिमा के निर्माण का काम एक अनुभवहीन मूर्तिकार को सौपना गलत फैसला था। उन्होंने यह बात तटीय सिंधुदुर्ग जिले के राजकोट किले में बनी शिवाजी की प्रतिमा के गिरने की घटना के कुछ दिनों बाद कही है। मालवण तालुका में किले का दौरा करने के बाद केंद्रीय सामाजिक न्याय राज्य मंत्री ने घटना की विस्तृत जांच की मांग की। आठवले ने कहा, "अनुभवी मूर्तिकारों की कोई कमी नही है, फिर एक नौसिखिए को जिम्मेदारी क्यो दी गई? इस घटना को अक्षम्य बताते हुए उन्होंने कहा कि लोक निर्माण विभाग और नौसेना के संबंधित अधिकारियो की भी जांच होनी चाहिए। मुंबई से करीब 480 किलोमीटर दूर मालवण तहसील के राजकोट किले मे 17वी सदी के मराठा योद्धा छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा 26 अगस्त को ढह गई थी। इसका अनावरण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चार दिसंबर 2023 को नौसेना दिवस के अवसर पर किया था।

पुलिस चौकी की छत गिरने से प्रभारी सहित चार फरियादी घायल

आगरा। आगरा मे कुकथला पुलिस चौकी की छत ढहने से चौकी प्रभारी सहित चार लोग घायल हो गए। अधिकारियो ने रविवार को बताया कि शनिवार को हुए हादसे मे घायल हुए लोगो को उपचार के लिए अस्पताल मे भर्ती कराया गया है। उन्होने बताया कि चौकी प्रभारी अनूप मिश्र लोगो की शिकायत सुन रहे थे, तभी चौकी की छत अचानक ढह गई। थाना अछनेरा प्रभारी विनोद कुमार ने बताया कि मलबे के नीचे मिश्र और तीन अन्य फरियादी दब गए। छत गिरने की आवाज सुनकर ग्रामीण चौकी पहुंचे और मिश्र सहित चार लोगो को घायल अवस्था मे मलबे से निकाला और उन्हे एंबुलेंस की मदद से अस्पताल भेजा।

बिहार : एक व्यक्ति ने साली की हत्या करने के बाद खुद को गोली मारकर दी जान

पटना। बिहार की राजधानी पटना के बाहरी इलाके मे बिहारी बिगहा गांव मे एक व्यक्ति ने कथित तौर पर अपनी साली की गोली मारकर हत्या करने के बाद खुद को भी गोली मारकर जान दे दी। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, मृतको की पहचान दीपक कुमार (32) और उसकी साली गुड़िया देवी के रूप मे हुई है। पुलिस ने बताया कि दीपक ने अपनी पत्नी लक्ष्मी देवी पर भी गोली चलाई, जिसे अस्पताल मे भर्ती कराया गया है। बाढ़-। के उपमंडलीय पुलिस अधिकारी (एसडीपीओ) अपराजित ने कहा, पुलिस को सूचना मिली कि बिहारी बिगहा गांव मे कल रात एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी और साली को गोली मारने के बाद खुद को भी गोली मार ली।

मुसलमानों पर लगातार हो रहे हमलों के बीच सरकारी तंत्र मूकदर्शक बना है : राहुल

भाषा। नई दिल्ली

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुसलमानों पर लगातार हो रहे हमलों को लेकर भाजपा सरकार पर मूकदर्शक बने रहने का रविवार को आरोप लगाया और ऐसी घटनाओं में शामिल अराजक तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्वाई की मांग की। भाजपा शासित हरियाणा और महाराष्ट्र में भीड़ द्वारा की गई हिंसा की दो घटनाओं के मद्देनजर उन्होंने यह टिप्पणी की। हरियाणा के चरखी दादरी में, 27 अगस्त को कथित तौर पर गोरक्षकों ने पश्चिम बंगाल से आए एक मुस्लिम प्रवासी की पीटकर हत्या कर दी थी। उस पर यह संदेह जताते हुए हमला किया गया कि उसने बीफ खाया था। हमले में एक व्यक्ति घायल भी हुआ था। महाराष्ट्र में, ट्रेन में एक बुजुर्ग व्यक्ति

के पास बीफ होने के संदेह में उसके साथ बदसलूकी और पिटाई की गई। वह कल्याण जा रहा था। दोनों घटनाओं की स्क्रीनशॉट (तस्वीरें) साझा करते हुए, राहुल ने कहा कि नफरत को राजनीतिक हथियार बनाकर सत्ता की सीढ़ी चढ़ने वाले लोग देशभर में लगातार भय का राज स्थापित कर रहे हैं। घटनाओं के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए हैं। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भीड़ की शक्ल में छिपे नफरती तत्व कानून के राज को चुनौती देते हुए खुलेआम हिंसा फैला रहे हैं। भाजपा सरकार से इन उपद्रवियों को खुली छूट मिली हुई है, इसलिए उनमें ऐसा कर पाने का साहस पैदा हो गया है। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों, खासकर मुसलमानों पर लगातार हमले जारी हैं और सरकारी तंत्र मूकदर्शक बना देख रहा है। राहुल ने पोस्ट में कहा कि ऐसे अराजक तत्वों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्वाई कर कानून का इकबाल कायम किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, भारत की सांप्रदायिक एकता और भारतवासियों के अधिकारों पर किसी भी तरह का हमला संविधान पर हमला है, जो हम बिलकुल भी बर्दाश्त नहीं करेंगे। कांग्रेस नेता ने कहा, भाजपा कितनी भी कोशिश कर ले – नफरत के खिलाफ भारत जोड़ने की इस ऐतिहासिक लड़ाई को हम हर हाल में जीतेंगे।

शिमला: मस्जिद के अवैध निर्माण के खिलाफ सैकड़ों लोगों ने किया प्रदर्शन

भाषा। शिमला

हिमाचल प्रदेश में शिमला के उपनगर संजौली में रविवार को सैकड़ों लोग एकत्र हुए और एक मस्जिद के अवैध निर्माण तथा शहर के मलाणा इलाके में एक कारोबारी पर हुए हमले के खिलाफ प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने कारोबारी पर हमला करने वालों के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज करने की मांग की। उन्होंने अवैध ढांचे को ध्वस्त करने की भी मांग की। शुक्रवार को हुए हमले में कारोबारी गंभीर रूप से घायल हो गया था। हमले में उसके सिर में चोट लगी थी। शहर के विभिन्न हिस्सों से लगभग 500 लोगों ने प्रदर्शन में भाग लिया और शिमला में अल्पसंख्यक समुदाय के प्रवासियों की बढ़ती संख्या पर चिंता व्यक्त की तथा इन बाहरी लोगों का पुलिस सत्यापन और पंजीकरण कराने की भी मांग की। प्रदर्शनकारियों को शांत करने के लिए जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। अधिकारियों ने स्वीकार किया कि वक्फ बोर्ड की जमीन पर बने ढांचे का एक हिस्सा अवैध है और इस विषय की सुनवाई शनिवार को नगर निगम अदालत में होगी। उन्होंने कहा कि मामला संवेदनशील है और यह समुदायों की धार्मिक भावनाओं से जुड़ा है। शिमला के पुलिस अधीक्षक संजीव कुमार गांधी ने कहा कि कारोबारी पर हमले के मामले में हत्या के प्रयास की धारा के तहत कार्वाई की जाएगी और उन्होंने प्रदर्शनकारियों से शांति बनाए रखने की अपील की।

कांग्रेस फर्जी खबरों से निपटने पर ध्यान केंद्रित करते हुए त्वरित प्रतिक्रिया दल गठित करेगी

नई दिल्ली। कांग्रेस वकीलों की सहायता से त्वरित प्रतिक्रिया दल गठित करने पर विचार कर रही है, जिसका विशेष ध्यान ऑनलाइन फर्जी खबरों और गलत सूचनाओं की समस्या से निपटने पर होगा। अभिषेक सिंघवी की अध्यक्षता में कांग्रेस के विधि, मानवाधिकार एवं आरटीआई विभाग की रविवार को यहां अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी मुख्यालय में बैठक हुई और फर्जी खबरों की समस्या पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया गया।बैठक के बाद सिंघवी ने कहा, हम उत्साहित हैं और हमारी बैठक बहुत ही उपयोगी और व्यापक रही। पिछले पांच वर्षों में निर्वाचन आयोग (ईसी) से संबंधित और गैर संबंधित दोनों तरह की कई शिकायतों का निपटारा किया गया है। हम विशेष रूप से सोशल मीडिया में विभाग की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, जहां फर्जी खबरें बहुत अधिक होती हैं। उन्होंने कहा, हम त्वरित प्रतिक्रिया दल बनाने जा रहे हैं। हम कई अन्य संगठित संरचनात्मक सुधारों की बात कर रहे हैं। जिला स्तर तक विकेन्द्रीकरण एक बहुत बड़ा लक्ष्य है।

महाराष्ट्र में अगले दो महीने में सरकार बदलने तक शांत नही बैठेंगे : पवार

भाषा। मुंबई

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार ने रविवार को कहा कि विपक्ष तब तक शांत नहीं बैठेगा, जब तक महाराष्ट्र में अगले दो महीनों में महायुति सरकार को सत्ता से हटा नहीं दिया जाता और छत्रपति शिवाजी के आदर्शों पर नई सरकार नहीं बन जाती। मुंबई के घाटकोपर में पार्टी कार्यकर्ताओं को

संबोधित करते हुए पवार ने 26 अगस्त को सिंधुदुर्ग जिले में मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के गिरने की घटना को लेकर राज्य सरकार की आलोचना की। उन्होंने कहा कि राज्य में सत्ता में बैठे लोगों की शिवाजी महाराज में कोई आस्था नहीं है।पवार ने कहा, मैं आपको (पार्टी कार्यकर्ताओं को) आश्वासन देता हूं कि यदि आप अपनी एकता दिखाते हैं, तो हम तब तक चुप नहीं बैठेंगे, जब तक कि अगले दो महीनों में महाराष्ट्र में सरकार नहीं बदल जाती और शिवाजी महाराज के आदर्शों पर लोगों के हितों की रक्षा करने वाली एक नई सरकार नहीं बन जाती।

मणिपुर में उग्रवादियों की गोलीबारी में दो लोगों की मौत, नौ घायल

भाषा। इंफाल

मणिपुर के इंफाल पश्चिम जिले में रविवार को संदिग्ध उग्रवादियों द्वारा किए गए हमले में एक महिला समेत दो लोगों की मौत हो गई और नौ अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, उग्रवादियों ने पहाड़ी के ऊपरी इलाके से कोत्रुक और पड़ोसी कडांगबांड के घाटी के निचले इलाकों की ओर अंधाधुंध गोलीबारी करने के साथ बम से हमले किए। पुलिस ने बताया कि इस हमले में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि नौ अन्य लोग घायल हो गए। उन्होंने बताया कि उग्रवादियों की गोलाबारी के कारण कई मकान भी क्षतिग्रस्त हो गए। अस्पताल के अधिकारियों ने बताया कि नौ घायलों में से पांच को गोली लगी है, जबकि अन्य को छर्रे लगे हैं। पुलिस ने बताया कि गांव पर अचानक हुए हमले से लोगों में दहशत फैल गई, जिससे महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों सहित कई लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। मृत महिला की पहचान 31 वर्षीय नंगबाम सुरबाला देवी के रूप में हुई है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए क्षेत्रीय आयुर्विज्ञानसंस्थान (आरआईएमएस) ले जाया गया है। पुलिस ने बताया कि अन्य मृतक की पहचान अभी नहीं हो पाई है। हालात को स्थिर करने के लिए राज्य और केंद्रीय इकाइयों सहित सुरक्षाबलों को क्षेत्र में तैनात किया गया है। राज्य सरकार ने कोत्रुक के निहत्थे ग्रामीणों पर हमले की कड़ी निंदा की है। मणिपुर के गृह विभाग ने एक बयान में कहा, राज्य सरकार को निहत्थे कौत्रुक ग्रामीणों पर ड्रोन, बम और अत्याधुनिक हथियारों से हमला करने की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बारे में जानकारी मिली है, जिसमें कथित तौर पर कुकी उग्रवादियों ने एक महिला सहित दो लोगों की हत्या कर दी।

तेजस्वी यादव का आरोप, राजग जाति जनगणना और आरक्षण के खिलाफ

भाषा। पटना

राजद नेता तेजस्वी यादव ने रविवार को आरोप लगाया कि केंद्र और बिहार की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार जाति जनगणना और आरक्षण के खिलाफ हैं। यादव ने कहा कि इस तरह की गणना एक्स-रे की तरह है, जो विभिन्न जाति समूहों की आबादी और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का पता लगाती है। उन्होंने पटना में राजद कार्यालय में एक धरने का नेतृत्व करते हुए कार्यकर्ताओं से यह बात कही। पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए यादव ने जनता दल (यूनाइटेड) से बिहार में वंचित जातियों के लिए बढ़ाए गए आरक्षण को संविधान की नौवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग पर उसका रुख जानना चाहा। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता ने कहा, बिहार में महागठबंधन प्रशासन ने पिछले साल केंद्र से राज्य सरकार की नौकरियों एवं शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण को 50 से बढ़ाकर 65 प्रतिशत करने के फैसले को नौवीं अनुसूची में शामिल करने का आग्रह किया था। लेकिन, उन्होंने ऐसा नहीं किया। केंद्र और राज्य की राजग सरकारें समाज के वंचित वर्ग के लिए आरक्षण और जाति जनगणना के खिलाफ हैं। मैं यह कहना चाहूंगा कि जाति जनगणना एक एक्स-रे की तरह है।

शाह ने आंध्र प्रदेश, तेलंगाना के मुख्यमंत्रियों से बात की

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के मुख्यमंत्रियों से बात की और दोनों राज्यों में भारी बारिश एवं बाढ़ के मद्देनजर स्थिति का जायजा लिया। सूत्रों ने यह जानकारी दी। शाह ने दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों – आंध्र प्रदेश के एन. चंद्रबाबू नायडू और तेलंगाना के ए. रेवंत रेड्डी – को बारिश एवं बाढ़ से निपटने के लिए केंद्र सरकार की ओर से हरसंभव मदद का आश्वासन भी दिया। हैदराबाद समेत तेलंगाना के कई इलाकों में रविवार को भी भारी बारिश जारी रही। मुख्यमंत्री रेड्डी ने स्थिति की समीक्षा के लिए मंत्रियों,अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ आपात बैठक की। तेलंगाना के पड़ोसी राज्य आंध्र प्रदेश में, पिछले दो दिनों में हुई अभूतपूर्व बारिश के कारण कई स्थानों पर, विशेषकर विजयवाड़ा और उसके आसपास के क्षेत्रों में जनजीवन प्रभावित हुआ है, जबकि राज्यभर में 17,000 प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है।

तेलंगाना में बारिश से संबंधित घटनाओं में नौ की मौत

भाषा। हैदराबाद

तेलंगाना में बारिश से संबंधित अलग-अलग घटनाओं में नौ लोगों की मौत हो गई जबकि हैदराबाद सहित राज्य के कई हिस्सों में रविवार को भारी बारिश जारी रही। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया है कि मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने राज्य में लगातार हो रही बारिश के मद्देनजर हालात की समीक्षा के लिए आपातकालीन बैठक बुलाई। मुख्यमंत्री ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ टेलीकॉफ्रेंस के जरिए चर्चा की और नगर निगम प्रशासन, ऊर्जा, पंचायती राज और अन्य विभागों के अधिकारियों को अगले 24 घंटे के लिए सतर्क रहने को कहा। उन्होंने जिलाधिकारियों, एसपी, राजस्व, सिंचाई और नगर निगम के अधिकारियों को बाढ़ प्रभावित बस्तियों का दौरा करने का निर्देश

दिया। अधिकारियों को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल राहत उपाय करने के निर्देश दिए गए हैं। भारी बारिश के बाद राज्य में कई जगहों पर नाले उफान पर हैं और निचले इलाकों में पानी भर गया है। बाढ़ के पानी ने गांवों के बीच सड़क संपर्क को बाधित कर दिया है। भारी बारिश और हवाओं के प्रभाव से कई पेड़ उखड़ गए हैं, जबकि कई पेड़ों की शाखाएं टूटकर सड़कों पर गिर पड़ीं। राजस्व मंत्री पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी ने कहा कि समय पर उठाए गए एहतियाती कदमों से जान-माल की हानि कम हुई है। उन्होंने कहा कि इन उपायों के बावजूद राज्य के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग वर्षा जनित घटनाओं में नौ लोगों की जान चली गई। महबूबाबाद और खम्मम जिलों में तीन लोगों के बह जाने की भी आशंका है। मंत्री ने कहा कि सूर्यपेट, भद्राद्री कोठागुडेम, महबूबाबाद और खम्मम जैसे अन्य जिलों में अधिकारियों ने बाढ़ प्रभावित कई गांवों के निवासियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि एहतियात के तौर पर कुछ लोगों को ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम क्षेत्र में राहत शिविरों में स्थानांतरित कर दिया गया है, क्योंकि बारिश से पुराने मकानों के ढहने की आशंका है। उन्होंने कहा कि जिलाधिकारियों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार दो सितंबर को शैक्षणिक संस्थानों में अवकाश घोषित करने को कहा गया है। दक्षिण मध्य रेलवे (एससीआर) के एक अधिकारी ने बताया कि भारी बारिश और कई स्थानों पर पटरियों पर जलभराव के कारण 99 ट्रेन रद्द कर दी गईं और चार ट्रेन आंशिक रूप से रद्द कर दी गईं, जबकि 54 ट्रेन के मार्ग में परिवर्तन किया गया। राज्य में लगातार हो रही बारिश को देखते हुए रेड्डी ने वर्षा प्रभावित क्षेत्रों की स्थिति की समीक्षा की और मंत्रियों से फोन पर बात करने के साथ जलमग्न क्षेत्रों में राहत कार्यों के बारे में जानकारी ली।

क्विक न्यूज

नाबालिग से छेड़छाड़ के आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर चमोली में लोगों का विरोध प्रदर्शन

गोपेश्वर। उत्तराखंड के चमोली जिले की नंदानगर तहसील मे एक नाबालिग लड़की को कथित तौर पर अश्लील इशारे करने के आरोपी युवक के खिलाफ कार्वाई की मांग को लेकर रविवार को सैकड़ों लोगों ने धरना प्रदर्शन किया। इस बीच, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा है कि नारी अस्मिता और सम्मान हमारे लिए सदैव सर्वोपरि है और देवभूमि मे इस तरह की घटनाओ को बर्दाश्त नही किया जा सकता।सड़क पर उतरे व्यापारियों, ग्रामीणों और महिलाओं ने दूसरे समुदाय से संबंध रखने वाले आरोपी की दुकान में तोड़-फोड़ की कोशिश भी की। हालांकि, पुलिस ने हस्तक्षेप कर उग्र भीड़ को शांत कराया। मामले की संवेदनशीलता और क्षेत्र मे तनावपूर्ण स्थिति को देखते हुए चमोली के पुलिस अधीक्षक पुलिस बल के साथ मौके पर मौजूद है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, घटना 22 अगस्त की है। नाई की दुकान चलाने वाले 24 वर्षीय युवक पर आरोप है कि उसने पड़ोस मे रहने वाली एक नाबालिग लड़की को कथित तौर पर अश्लील इशारे किए। लड़की ने इसकी शिकायत अपनी मां से की तो वह युवक से पूछताछ करने गई। इसके बाद वह अपनी दुकान बंद कर फरार हो गया। लड़की के पिता इस दौरान कही बाहर गए हुए थे और लौटने पर जब उन्हें इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने शनिवार को पुलिस मे मामला दर्ज कराया। नंदानगर व्यापार संगठन के अध्यक्ष नंदन सिंह ने पीटीआई-भाषा को बताया कि इस घटना से लोग स्तब्ध हैं और सड़कों पर उतर आए हैं।उन्होंने कहा कि स्थानीय लोग आरोपी के खिलाफ कार्वाई की मांग को लेकर अनिश्चितकालीन धरने पर बैठ गए है और जब तक उनकी मांग नही मानी जाती, धरना जारी रहेगा।उधर, घटना का संज्ञान लेते हुए मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि नारी अस्मिता और सम्मान हमारे लिए सर्वोपरि है और किसी भी महिला या बेटी के साथ होने वाली अप्रिय घटना की हम भत्सर्ना करते है।

प्रशांत किशोर ने बिहार चुनाव में मुस्लिम समुदाय के लोगों को उचित प्रतिनिधित्व देने का वादा किया

पटना। जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने रविवार को कहा कि उनका संगठन बिहार मे अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव मे पर्याप्त संख्या मे मुस्लिम समुदाय के लोगो को उम्मीदवार बनाएगा। किशोर ने हालांकि, इस आरोप को खारिज कर दिया कि वह अल्पसंख्यक समुदाय के वोटो को"विभाजित" करने और राज्य मे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मुख्य प्रतिद्वंद्वी राष्ट्रीय जनता दल (राजद) को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहे है। किशोर ने यहां संवाददाताओ से कहा, हम 243 सदस्यीय विधानसभा के चुनाव मे कम से कम मुस्लिम समुदाय के 40 लोगो को टिकट देंगे। समुदाय को संगठन मे भी उचित प्रतिनिधित्व दिया जाएगा। वह जन सुराज द्वारा राजनीति मे मुसलमानो की भागीदारी विषय पर आयोजित एक संगोष्ठी के बाद पत्रकारो से बात कर रहे थे। दो अक्टूबर को जन सुराज को एक पूर्ण राजनीतिक दल का रूप दिया जाएगा। किशोर ने बताया कि फिलहाल विधानसभा मे केवल 19 मुस्लिम सदस्य है, जबकि राज्य मे मुस्लिमो की आबादी लगभग 20 प्रतिशत है। हालांकि, उन्होने राजद के इस आरोप पर नाराजगी व्यक्त की कि वह मुस्लिम समुदाय के वोटो को विभाजित करके परोक्ष रूप से भाजपा की मदद करना चाहते हैं। किशोर ने कहा, अगर यह राजद का डर है, तो मै उसे पर्याप्त संख्या मे मुसलमानो को टिकट देने की चुनौती देता हूं। वे समुदाय के रहनुमा होने का दावा करते है। उन्हें बात पर अमल करना चाहिए। मै वादा कर सकता हूं कि अगर वे ऐसा करते है, तो जन सुराज उन सीटो पर मुसलमानो को टिकट नही देगा, जहां उनका उम्मीदवार मुसलमान होगा, हम किसी हिंदू को टिकट देंगे।

गंजाम जिले में जहरीली शराब पीने से मरने वालों की संख्या चार हुई

बरहमपुर(ओडिशा)। गंजाम जिले मे कथित जहरीली शराब पीने के बाद बीमार 60 वर्षीय एक व्यक्ति की यहां के एमकेसीजी मेडिकल कॉलेज अस्पताल मे रविवार को इलाज के दौरान मौत हो गई। इसी के साथ इस त्रासदी मे जान गंवाने वालो की संख्या बढ़कर चार हो गई है। पुलिस ने यह जानकारी दी। बरहमपुर के पुलिस अधीक्षक सार्थक सारंगी ने बताया कि मृतक की पहचान चिकिटी के पास करबलुआ गांव निवासी बाया सेठी के रूप मे हुई है।पुलिस ने बताया कि शनिवार को एमकेसीजी मेडिकल कॉलेज अस्पताल मे भर्ती लक्ष्मण बेहरा की इलाज के दौरान मौत हो गई थी। अन्य दो मृतको की पहचान जुरू बेहरा और लोकनाथ बेहरा के तौर पर की गई है। पुलिस ने बताया कि जेनापुर और करबालुआ क्षेत्र के कम से कम 15 लोगो को 19 अगस्त को मेडिकल कॉलेज और अस्पताल मे भर्ती कराया गया था। उसने बताया कि इन लोगो ने मौदापुर गांव मे कथित तौर पर देशी शराब बेचने वाले एक विक्रेता से संदिग्ध नकली शराब पी थी। पुलिस और आबकारी विभाग के अधिकारियो ने जहरीली शराब से मौत मामले मे अबतक कम से कम 16 लोगो को गिरफ्तार किया है।

झारखंड : आबकारी कांस्टेबल भर्ती की शारीरिक भर्ती परीक्षा के दौरान 11 अभ्यर्थियों की मौत

रांची। झारखंड मे आबकारी कांस्टेबल की भर्ती के लिए आयोजित शारीरिक दक्षता परीक्षा के दौरान 11 अभ्यर्थियो की मौत हुई है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने एक बयान मे कहा कि झारखंड आबकारी कांस्टेबल प्रतियोगी परीक्षा के तहत शारीरिक दक्षता परीक्षा 22 अगस्त को रांची, गिरिडीह, हजारीबाग, पलामू, पूर्वी सिंहभूम और साहेबगंज जिलो के सात केंद्रो पर आयोजित किया गया। पुलिस महानिरीक्षक (अभियान) अमोल वी. होमकर ने बताया कि पलामू मे चार, गिरिडीह और हजारीबाग मे दो-दो, रांची के जगुआर केंद्र, पूर्वी सिंहभूम के मुसाबनी और साहेबगंज केंद्रो पर एक-एक अभ्यर्थी की मौत हुई है। उन्होने कहा कि अप्राकृतिक मौत के मामले दर्ज कर लिए गए है और जांच जारी है। होमकर के मुताबिक 30 अगस्त तक कुल।,27,772 अभ्यर्थी शारीरिक दक्षता परीक्षा मे शामिल हुए, जिनमे से 78,023 उत्तीर्ण हुए। उन्होंने बताया कि सभी केन्द्रो पर चिकित्सा दल, दवाइयां, एम्बुलेंस और पेयजल समेत पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित की गई थी।

शानदार रंग व बढ़िया स्टाइल फिर करेगा आकर्षित

मुंबई। रॉयल एनफील्ड क्लासिक 350 अपनी सदाबहार खूबसूरती पुराने जमाने के आकर्षण और मजबूत स्वभाव के साथए 2008 में लॉन्च होने के बाद से शानदार ऑटोमोटिव डिजाइन खूबसूरती और इंजीनियरिंग का प्रतीक रही है। आज इसी मोटरसाइकिल का नया रूप 2024 क्लासिक 350 लॉन्च किया गया है। 2024 क्लासिक 350 में रॉयल एनफील्ड के सभी खास गुण बरकरार हैं और यह अपनी खूबसूरती के साथ.साथ लोगों के लिए आसानी से उपलब्ध भी है। नए फीचर्स और शानदार रंगों के साथ नई 2024 क्लासिक 350 की शुरुआती कीमत 1,99,500' रुपये है। इसकी बुकिंग्स और टेस्ट राइड पूरे भारत में 1 सितंबर 2024 से शुरू हो गई है। क्लासिक 350 को पाँच नए वैरिएंट्स और सात शानदार रंगों में लॉन्च किया गया है । हेरिटेज मैड्रास रेड और जोधपुर ब्लू हेरिटेज प्रीमियम मेडलियन ब्रॉन्ज सिग्नल्सकमांडो सैंड डार्क गन ग्रे और स्टील्थ ब्लैकद्ध और क्रोम एमरैल्ड। 2024 रॉयल एनफील्ड क्लासिक 350 में एलईडी हेडलैंप्सए एलईडी पायलट लैंपए गियर पोजिशन इंडिकेटरए और टाइप सी यूएसबी चार्जिंग प्वाइंट जैसे बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें रॉयल एनफील्ड की खास पहचान और स्टाइल को बनाए रखा गया है। इसके अलावा, टॉप मॉडल्स . एमरैल्ड और डार्क सीरीज में अडजस्टेबल लीवरए एलईडी ट्रिपिकेटर्स और ट्रिपर पॉड जैसी सुविधाएं भी दी गई हैं। सालों बाद भी इसका आकर्षण और खासियत जस का तस बना हुआ हैए और यह लोगों के लिए आसानी से उपलब्ध है। साथ हीए इसमें कस्टमाइजेशन की भी कई संभावनाएं हैं। हम इन सभी खूबियों को बरकरार रखते हुए क्लासिक 350 को नए फीचर्स के साथ लॉन्च कर रहे हैं।

इजराइल ने गाजा में छह बंधकों के शव बरामद किए

नेतन्याहू ने दुख जताया

भाषा। यरूशलम

इजराइल ने रविवार को कहा कि उसने गाजा में एक युवा इजराइली-अमेरिकी समेत छह बंधकों के शव बरामद किए हैं। इजराइली-अमेरिकी युवक हेर्श गोल्डबर्ग-पोलिन के माता-पिता ने रविवार सुबह पुष्टि की कि गाजा पट्टी में उनके बेटे को बंधक बनाने वाले उग्रवादियों ने उसकी हत्या कर दी है। सेना ने कहा कि आतंकवादियों ने इजराइली सैनिकों द्वारा बंधकों को बचा पाने से कुछ देर पहले ही उनकी हत्या कर दी। उनके शव मिलने के बाद प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के खिलाफ व्यापक प्रदर्शन शुरू होने का खतरा पैदा हो गया, जिन पर बंधकों के कई परिवार और इजराइली जनता बंधकों को जीवित वापस लाने के लिए समझौता करने में नाकाम रहने का आरोप लगाती है। नेतन्याहू ने बंधकों की हत्या पर दुख जताया और कहा कि इजराइल बेरहमी से की गई उनकी हत्या के लिए हमास को बख्शेगा नहीं। उन्होंने कहा कि इन हत्याओं से साबित हो गया है कि आतंकवादी समूह संघर्षविराम समझौता नहीं चाहता है। उन्होंने कहा कि बंधकों की मौत की खबर सुनकर उनका दिल टूट गया है। नेतन्याहू ने कहा, जिन्होंने बंधकों की हत्या की है, वे कोई समझौता नहीं चाहते हैं। हमास के उग्रवादियों ने पिछले साल सात अक्टूबर को किए गए हमले के दौरान दक्षिण इजराइल में एक संगीत महोत्सव से हेर्श गोल्डबर्ग-पोलिन (23) तथा चार अन्य बंधकों को अगवा कर लिया था। कैलिफोर्निया के बर्कले के रहने वाले गोल्डबर्ग-पोलिन ने ग्रेनेड हमले में अपना बायां हाथ गंवा दिया था। अप्रैल में हमास द्वारा जारी एक वीडियो में उसका बायां हाथ गायब दिख रहा था और वह स्पष्ट रूप से काफी पीड़ा में बोलता नजर आ रहा था। इससे इजराइल में बंधकों की रिहाई सुनिश्चित करने की मांग को लेकर नए सिरे से विरोध-प्रदर्शन भड़क गए थे। सेना ने अन्य मृतक बंधकों की पहचान ओरी दानिनो (25), एडन यरूशालमी (24), अल्मोग सारूसी (27) और एलेक्जेंडर लोबानोव (33) के रूप में की है। इन सभी को सात अक्टूबर को हमास के हमले के दौरान एक संगीत महोत्सव से अगवा किया गया था।

वेस्ट बैंक में फलस्तीनी चरमपंथियों के हमले में इजराइल के तीन पुलिस अधिकारियों की मौत

यरूशलम। वेस्ट बैंक में रविवार को एक वाहन पर फलस्तीनी चरमपंथियों की गोलीबारी में इजराइली पुलिस के तीन अधिकारियों की मौत हो गई। इजराइल ने हाल के दिनों में वेस्ट बैंक में बड़े पैमाने पर हमले किए है। हमला दक्षिणी वेस्ट बैंक में एक सड़क पर हुआ। पुलिस ने मारे गए तीनों व्यक्तियों के अधिकारी होने की पुष्टि की और कहा कि हमलावर फरार हो गए। पुलिस ने कहा कि मारे गए अधिकारियों में से एक रॉनी शकुरी (61) गाजा सीमा के निकट स्देरोत कस्बे के निवासी थे। रॉनी की पुलिस अधिकारी बेटी मोर सात अक्टूबर को इजराइल पर हमास के हमले के दौरान पहले ही मार दी गई थी। खुद को खलील अल-रहमान ब्रिगेड कहने वाले एक अल्पज्ञात आतंकवादी समूह ने रविवार को हुई गोलीबारी की जिम्मेदारी ली है।

नेपाली कांग्रेस के महासचिव शर्मा ने पार्टी अध्यक्ष देउबा से दोबारा पीएम नही बनने को कहा

भाषा। काठमांडू

नेपाली कांग्रेस के महासचिव विश्व प्रकाश शर्मा ने रविवार को पार्टी अध्यक्ष शेर बहादुर देउबा से कहा कि वह दोबारा प्रधानमंत्री न बनें और यह पद नई पीढ़ी के किसी नेता के लिए छोड़ दें। हालांकि, पांच बार प्रधानमंत्री रह चुके 78 वर्षीय देउबा ने इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया। सीपीएन-यूएमएल के अध्यक्ष एवं निवर्तमान प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली और नेपाली कांग्रेस के अध्यक्ष देउबा ने कुछ महीने पहले एक नया गठबंधन बनाते हुए सात सूत्री समझौता किया था, जिसके तहत दोनों नेता बारी-बारी से प्रधानमंत्री बनेंगे। इस समझौते के तहत, ओली के बाद देउबा को प्रधानमंत्री बनना है। पार्टी की केंद्रीय समिति की बैठक के दौरान नेपाली कांग्रेस के महासचिव शर्मा ने देउबा से छठी बार प्रधानमंत्री न बनने और किसी नए चेहरे के लिए पद छोड़ने को कहा। पार्टी के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय समिति के सदस्य अर्जुन नरसिंह केसी के अनुसार, शर्मा ने पार्टी अध्यक्ष देउबा से प्रधानमंत्री पद का त्याग करने और नई पीढ़ी के नेताओं के लिए पद छोड़ने का अनुरोध करते हुए कहा कि पार्टी में कई योग्य लोग हैं। उन्होंने देउबा के समक्ष पार्टी के छह नेताओं - प्रकाश मान सिंह, अर्जुन नरसिंह केसी, बिमलेंद्र निधि, पूर्ण बहादुर खड़का, शशांक कोइराला और शेखर कोइराला में से किसी एक को पार्टी का प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार चुनने का प्रस्ताव रखा। हालांकि, देउबा ने यह प्रस्ताव खारिज करते हुए कहा, मैं प्रधानमंत्री पद के लिए अपना दावा नहीं छोड़ूंगा। जो भी प्रधानमंत्री बनना चाहता है, उसे नेपाली कांग्रेस के संसदीय दल के चुनाव में मुझे हराना चाहिए।

डोमिनिकन गणराज्य में ट्रक बार में जा घुसा,11 लोगों की मौत

सैन जुआन। कैरेबियाई देश डोमिनिकन गणराज्य में एक ट्रक के बार में घुस जाने पर कम से कम 11 लोगों की मौत हो गई और 30 अन्य घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। सरकारी अधिकारियों के हवाले से समाचार पत्र लिस्टिन डियारियो की एक खबर में कहा गया है कि दुर्घटना रविवार तड़के राजधानी सैंटो डोमिंगो के पश्चिम में स्थित अजुआ में हुई। यह अभी स्पष्ट नही हुआ है कि दुर्घटना किस वजह से हुई। घायलों में से ज्यादातर को पास के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हालांकि, उनकी हालत के बारे में अभी जानकारी नही मिल पाई है।

गायिका एडेल ने संगीत की दुनिया से अल्पविराम लेने की घोषणा की

लॉस एंजिलिस। गायिका-गीतकार एडेल ने म्यूनिख में अपने कार्यक्रम के दौरान संगीत की दुनिया से अल्पविराम लेने की घोषणा की। गायिका ने कहा कि उन्हें थोड़े समय आराम की जरूरत है और पिछले तीन वर्षों में उन्होंने जो भी शो किए है, उन्हें वह याद करेंगी। दो अगस्त से 31 अगस्त के बीच जर्मनी में 10 शो करने वाली ब्रिटिश गायिका दर्शकों को अपने आगामी अल्पविराम के बारे में बताते हुए भावुक हो गईं। एनएमई की खबर के मुताबिक, कल रात म्यूनिख रेजिडेंसी में उनका अंतिम प्रदर्शन हुआ।

श्रीलंका के राष्ट्रपति चुनाव में प्रेमदासा का समर्थन करेगा मुख्य तमिल दल

कोलंबो। श्रीलंका की मुख्य तमिल पार्टी तमिल नेशनल अलायंस (टीएनए) ने रविवार को कहा कि वह 21 सितंबर को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में विपक्ष के मुख्य नेता साजिथ प्रेमदासा का समर्थन करेगी। टीएनए के प्रवक्ता एम.ए. सुमंथिरन ने पत्रकारों को बताया कि यह निर्णय रविवार को टीएनए की मुख्य पार्टी इलंकाई तमिल अरासु कच्ची (आईटीएके) की केंद्रीय समिति की बैठक में किया गया।जानकारों के अनुसार, यह निर्णय कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि सुमंतिरन ने 2022 से विपक्ष के साथ मिलकर काम किया है।

दुबई में भारतीय मिशन ने नागरिकों के लिए कई उपायों की घोषाणा की

दुबई। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में रविवार से शुरू होने वाली दो महीने की माफी योजना का लाभ उठाने में भारतीयों की मदद करने के लिए यहां स्थित भारत के महावाणिज्य दूतावास ने कई उपायों की घोषणा की है। यह माफी योजना देश में अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों को अपनी निवास स्थिति को नियमित कराने या दंड के बिना यूएई को छोड़ने की अनुमति देती है। माफी कार्यक्रम कई तरह के वीजा पर लागू होता है जिसमें निवास की अवधि का समाप्त होना और पर्यटक वीजा शामिल है। इसके अलावा इसके दायरे में बिना दस्तावेज के रह रहे लोग भी आते है।

युद्ध प्रभावित गाजा में बड़े पैमाने पर पोलियो रोधी टीकाकरण शुरू

दीर अल-बलाह। इजराइल और हमास के बीच जारी युद्ध से सबसे अधिक तबाह हुई गाजा पट्टी में फलस्तीन के स्वास्थ्य प्राधिकारियों और संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों ने पोलियो रोधी टीकाकरण के लिए बड़े पैमाने पर रविवार को अभियान शुरू किया। अधिकारी मध्य गाजा में बुधवार तक बच्चों को टीका लगाएंगे और फिर वे उत्तरी तथा दक्षिणी हिस्सों में टीकाकरण अभियान संचालित करेंगे। स्वास्थ्यकर्मियों ने शनिवार को कुछ बच्चों को पोलियो रोधी टीका लगाकर यह अभियान शुरू किया था। उन्होंने लगभग 6,40,000 बच्चों को टीका लगाने का लक्ष्य रखा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, इजराइल ने सैन्य अभियान को सीमित समय के लिए रोकने पर सहमति जताई है।

रूस ने यूक्रेन के 150 से अधिक ड्रोन मार गिराए

भाषा। मॉस्को

रूस के रक्षा मंत्रालय ने रविवार को कहा कि उसकी वायु रक्षा प्रणालियों ने रात भर में यूक्रेन के 158 ड्रोन मार गिराए, जिनमें से दो ड्रोन मॉस्को शहर में और नौ मॉस्को के आसपास के क्षेत्र में नष्ट किए गए। यूक्रेन की ओर से बीती रात किए गए ड्रोन हमलों को उसकी ओर से अब तक का सबसे बड़ा ड्रोन हमला बताया जा रहा है। कुर्स्क क्षेत्र में 46 ड्रोन नष्ट किए गए, जहां यूक्रेन ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से रूसी सरजमीं पर सबसे बड़े आक्रमण के तहत हाल के सप्ताहों में अपने सैनिकों को भेजा है। ब्रायंस्क क्षेत्र में 34 ड्रोन नष्ट किए गए, 28 से अधिक ड्रोन वोरोनेझ क्षेत्र तथा 14 ड्रोन बेलगोरोद क्षेत्र में नष्ट किए गए, जिनकी सीमा यूक्रेन से लगती है। रूस के अंदरुनी क्षेत्र में भी ड्रोन नष्ट किए गए, जिनमें से एक-एक ड्रोन उत्तर-पश्चिमी मॉस्को के त्वेर क्षेत्र तथा उत्तर-पूर्वी मॉस्को के इवानोवो क्षेत्र में नष्ट किया गया। रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि 15 से अधिक क्षेत्रों में ड्रोन को गिरा दिया गया, जबकि एक अन्य गवर्नर ने कहा कि उनके क्षेत्र में भी एक ड्रोन को गिरा दिया गया। मॉस्को के मेयर सर्गेई सोब्यानिन ने कहा कि शहर के ऊपर मार गिराए गए दो ड्रोन में से एक के मलबे से एक तेल रिफाइनरी में आग लग गई। यूक्रेन के इन ड्रोन हमलों से अब लड़ाई अग्रिम मोर्चे से रूस की राजधानी तक भी पहुंच गई है। इस साल की शुरुआत से ही यूक्रेन ने रूसी जमीन पर हवाई हमले तेज कर दिए हैं और उसकी रिफाइनरी तथा तेल केंद्रों को निशाना बनाया है।

रूस में लापता हेलीकॉप्टर में सवार 17 लोगों के शव बरामद, मलबे का पता चला

मॉस्को। रूस के सुदूर पूर्व में लापता हेलीकॉप्टर पर सवार 22 लोगों में से 17 के शव बरामद कर लिए गए है। रूस के अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी देते हुए कहा कि हेलीकॉप्टर के मलबे का भी पता लगा लिया गया है। रूस के आपातकालीन मंत्रालय ने कहा कि 17 लोगों के शव पाए गए है और बचावकर्मी शेष लोगों की तलाश में जुटे है। रूस की सरकारी समाचार एजेंसी आरआईए नोवोस्ती ने आपातकालीन मंत्रालय के हवाले से कहा कि हेलीकॉप्टर में सवार सभी लोगों की मौत हो जाने की आशंका है। ऐसा माना जाता है कि खराब मौसम और खराब दृश्यता के कारण हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। रूस के आपातकालीन मंत्रालय ने टेलीग्राम पर लिखा, हवाई सर्वेक्षण करके लापता हेलीकॉप्टर के मलबे का पता लगाया गया है।

रूसी जासूस व्हेल नार्वे की जलसीमा में मृत मिली

हेलसिंकी। पहली बार रूसी जलक्षेत्र के पास नॉर्वे में उपकरण के साथ देखी गई ह्वाल्डिमिर नामक सफेद बेलुगा व्हेल मृत पाई गई है। उसके बारे में अफवाह थी कि वह रूस की जासूस हो सकती है। नॉर्वे के सरकारी प्रसारक एनआरके ने बताया कि व्हेल का शव शनिवार को दक्षिणी नॉर्वे के रिसाविका खाड़ी में मछली पकड़ रहे पिता और पुत्र को बहता दिखा। इस व्हेल का नाम नार्वेयाई भाषा के शब्द ह्वाल और रूस के राष्ट्रपति पुतिन के प्रथम नाम व्लादिमीर को मिलाकर रखा गया था। इस व्हेल के शव को क्रेन की मदद से पानी से बाहर निकाला गया और निकटवर्ती बंदरगाह पर ले जाया गया, जहां विशेषज्ञ इसका परीक्षण करेंगे। समुद्री जीवविज्ञानी सेबेस्टियन स्ट्रैंड ने एनआरके को कहा, दुर्भाग्य से, हमने ह्वाल्डिमिर के शव को समुद्र में बहते हुए पाया। उसकी मौत हो गई

बांग्लादेश पुलिस ने लूटे गए हथियारों को तीन सितंबर तक लौटाने का आदेश दिया

भाषा। ढाका

बांग्लादेश पुलिस ने रविवार को देश के लोगों को आदेश दिया कि वे हालिया हिंसा के दौरान पुलिस थानों से लूटे गए सभी हथियार और गोला-बारूद तीन सितंबर तक वापस कर दें। मीडिया में आई खबर में यह जानकारी दी गई। द डेली स्टार अखबार की खबर के मुताबिक, बांग्लादेश में हालिया आरक्षण विरोधी आंदोलन में भड़की हिंसा के दौरान देशभर के थानों से हथियार लूटे गए थे। पुलिस मुख्यालय ने एक निर्देश में कहा कि पुलिस के लूटे गए हथियार और गोला-बारूद मंगलवार तक लौटा दिए जाएं। खबर में कहा गया कि शनिवार तक कानून प्रवर्तन अधिकारियों ने हालिया हिंसा के दौरान पुलिस थानों और कार्यालयों से लूटे गए विभिन्न प्रकार के कुल 3,872 हथियार बरामद किए। इसके अलावा, 2,86,216 कारतूस, आंसू गैस के 22,201 गोले और 2,139 ग्रेनेड भी बरामद किए गए हैं। पुलिस का आदेश अंतरिम सरकार के उस निर्णय के बाद आया है जिसमें उसने शेख हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग सरकार के 15 साल से अधिक के कार्यकाल के दौरान लोगों को जारी किए गए सभी आग्नेयास्त्र लाइसेंस निलंबित करने को कहा था।

ढाका अस्पताल में हमले के विरोध में बांग्लादेश के चिकित्सक हड़ताल पर गए

ढाका। ढाका मेडिकल कॉलेज अस्पताल (डीएमसीएच) में चिकित्सकों की कथित लापरवाही के कारण एक छात्र की मौत के बाद चिकित्साकर्मियों पर हुए हमले के विरोध में बांग्लादेश में सार्वजनिक और निजी अस्पतालों में चिकित्सकों ने रविवार को राष्ट्रव्यापी हड़ताल की घोषणा की। प्रदर्शनकारी चिकित्सकों ने हमले के दोषियों के खिलाफ तत्काल कानूनी और दंडात्मक कार्वाई की मांग की, साथ ही काम पर लौटने की पूर्व शर्त के रूप में कार्यस्थलों पर सुरक्षा की भी मांग की। देश भर के चिकित्सकों ने चार सूत्री मांगो को लेकर एक सितंबर से सभी सार्वजनिक और निजी अस्पतालों को पूरी तरह बंद रखने की घोषणा की है। उनकी मांगों में शनिवार रात को ढाका मेडिकल कॉलेज अस्पताल (डीएमसीएच) में चिकित्सकों पर हमले में शामिल लोगों की गिरफ्तारी भी शामिल है।

गायिका एडेल ने संगीत की दुनिया से अल्पविराम लेने की घोषणा की

लॉस एंजिलिस। गायिका-गीतकार एडेल ने म्यूनिख में अपने कार्यक्रम के दौरान संगीत की दुनिया से अल्पविराम लेने की घोषणा की। गायिका ने कहा कि उन्हें थोड़े समय आराम की जरूरत है और पिछले तीन वर्षों में उन्होंने जो भी शो किए हैं, उन्हें वह याद करेंगी। दो अगस्त से 31 अगस्त के बीच जर्मनी में 10 शो करने वाली ब्रिटिश गायिका दर्शकों को अपने आगामी अल्पविराम के बारे में बताते हुए भावुक हो गईं। एनएमई की खबर के मुताबिक, कल रात म्यूनिख रेजिडेंसी में उनका अंतिम प्रदर्शन हुआ। कई पुरस्कार जीतने वाली एडेल ने कहा, मैंने पिछले सात साल अपने लिए एक नई जिंदगी बनाने में बिताए हैं, और अब मैं इसे जीना चाहती हूं। मैं इन शो को हमेशा याद रखूंगी, ए शानदार रहे हैं।

इजराइल के सबसे बड़े व्यापार संघ ने सोमवार को आम हड़ताल का आह्वान किया

यरूशलम। इजराइल के सबसे बड़े व्यापार संघ ने गाजा में छह बंधकों की मौत के बाद सोमवार को आम हड़ताल का आह्वान किया है। स्वास्थ्य, परिवहन और बैंकिंग जैसे क्षेत्रों के 8,00,000 कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यापार संघ हिस्ताद्रुत ने कहा कि हड़ताल सोमवार सुबह आरंभ होगी। इस हड़ताल का मकसद सरकार पर संघर्षविराम के लिए दबाव बढ़ाना है ताकि गाजा में हमास द्वारा बंधक बनाए गए शेष लोगों को वापस लाया जा सके। सात अक्टूबर को इजराइल पर हमास के हमले के बाद यह पहली आम हड़ताल होगी। पिछले साल भी एक आम हड़ताल हुई थी, जिसके बाद प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को न्यायिक सुधारों की अपनी विवादित योजना टालनी पड़ी थी।

क्विक न्यूज

बांग्लादेश के अंतरिम नेता जल्द ही सुधारों की रूपरेखा पेश करेंगे: यूनुस के विशेष सहायक

ढाका। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस सभी राजनीतिक दलों से परामर्श करने के बाद सत्ता हस्तांतरण सहित सुधारों को लेकर एक व्यापक रूपरेखा जल्द ही पेश करेंगे। यूनुस के विशेष सहायक ने यह जानकारी दी। नोबेल पुरस्कार विजेता यूनुस को पांच अगस्त को पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के नेतृत्व वाली सरकार के अपदस्थ होने के बाद बांग्लादेश का मुख्य सलाहकार नियुक्त किया गया था। उन्होंने राजधानी स्थित राजकीय अतिथि गृह जमुना में जातीय पार्टी, गोनो फोरम, इस्लामी आंदोलन बांग्लादेश, लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) सहित 35 राजनीतिक दलों के साथ शनिवार को कई बैठकें की। बांग्लादेश संगबाद संस्था (बीएसएस) समाचार एजेंसी ने यूनुस के विशेष सहायक महफूज आलम के हवाले से कहा, मुख्य सलाहकार ने राजनीतिक दलों के साथ विचारों का आदान-प्रदान किया और (अंतरिम सरकार द्वारा लाए जाने वाले) सुधारों एवं उनकी रूपरेखा पर बात की। महफूज आलम ने कहा कि बैठक में शामिल हुए नेताओं ने सुधारों को लेकर कई प्रस्ताव पेश किए और मुख्य सलाहकार सुधारों पर जल्द ही एक रूपरेखा पेश करेंगे। उन्होंने कहा, वह मुख्य रूप से सुधारों पर एक रूपरेखा पेश करेंगे। महफूज आलम ने कहा कि बैठकों के दौरान कुछ नेताओं ने देश के संविधान में सुधार लाने का सुझाव दिया।

आतंकवादियों ने अपहृत सैन्य अधिकारी, तीन अन्य लोगों को मुक्त किया: पाकिस्तानी सेना

डेरा इस्माइल खान (पाकिस्तान)। आतंकवादियों ने तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) का गढ़ रह चुके डेरा इस्माइल खान से तीन दिन पहले अपहृत एक सैन्य अधिकारी सहित चार लोगों को शनिवार को मुक्त कर दिया। पाकिस्तानी सेना ने यह जानकारी दी। सेना ने बताया कि आतंकवादियों ने लेफ्टिनेंट कर्नल खालिद अमीर को बुधवार को उस समय अगवा कर लिया था, जब वह अपने पिता के जनाजे में शामिल लोगों का मस्जिद में इंतजार कर रहे थे। सेना ने एक बयान में कहा कि लेफ्टिनेंट कर्नल खालिद और उनके तीन रिश्तेदारों की बिना शर्त रिहाई कबायली बुजुर्गों के दखल के कारण मुमकिन हो पाई और चारों अपहृत लोग सुरक्षित अपने घर लौट गए है। सेना ने घटना के संबंध में कोई अन्य जानकारी नही दी। उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान के खैबर-पख्तूनख्वा प्रांत के अशांत डेरा इस्माइल खान इलाके में एक सैन्य अधिकारी और उसके तीन रिश्तेदारों के अपहरण की घटना की किसी संगठन ने जिम्मेदारी नही ली थी। हालांकि, अपहरण के कुछ घंटों बाद जारी वीडियो बयान में दो अपहृत लोग यह कहते हुए नजर आए थे कि वे पाकिस्तानी तालिबान के कब्जे में है।

ओरेगन में छोटा विमान दुर्घटनाग्रस्त, तीन की मौत

पोर्टलैंड (अमेरिका)। पोर्टलैंड के पूर्वी इलाके में शनिवार सुबह एक छोटे विमान के कई मकानों से टकरा जाने से उनमें आग लग गई और तीन लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने इससे पहले बताया था कि विमान में दो लोग सवार थे और कम से कम एक निवासी लापता है। पोर्टलैंड में केजीडब्ल्यू-टीवी द्वारा प्रसारित तस्वीरों और वीडियो में एक मकान में आग लगी हुई दिखाई दे रही है, जबकि आसपास के घरों से काला धुआं निकलता नजर आ रहा है। ग्रेशम के दमकल विभाग के प्रमुख स्कॉट लुइस ने बताया कि आग कम से कम चार मकानों में फैल गई, जिसके कारण छह परिवार विस्थापित हो गए। उन्होंने बताया कि घटनास्थल पर दो लोगों का इलाज किया गया, लेकिन उन्होंने यह नही बताया कि ए लोग कैसे घायल हुए और उनकी चोटें कितनी गंभीर है। संघीय विमानन प्रशासन ने विमान की पहचान दोहरे इंजन वाले सेसना 421सी के रूप में की है। उसने बताया कि यह विमान पोर्टलैंड से पूर्व की ओर लगभग 30 मिनट की दूरी पर स्थित ट्राउटडेल हवाई अड्डे के पास सुबह करीब साढ़े दस बजे दुर्घटनाग्रस्त हुआ। मल्टनोमा काउंटी शेरिफ कार्यालय के अनुसार, विमान के नीचे गिरने से एक खंभा और बिजली के तार टूट गए, जिससे पास के एक खेत में आग लग गई। फेयरव्यू शहर के आवासीय क्षेत्र में मकानों से टकराने के बाद विमान के कई हिस्से हो गए। इस क्षेत्र में करीब 10,000 लोग रहते हैं।

जापान में तूफान के कारण कुछ स्थानों पर कई दिनों तक भारी बारिश हुई

टोक्यो। जापान की राजधानी टोक्यो के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र से 180 किलोमीटर दूर स्थित शिजुओका में शानशान तूफान के कारण रविवार को मूसलाधार बारिश हुई। मौसम अधिकारियों ने चेतावनी दी कि तूफान अभी कई दिनों तक बना रहेगा। शानशान तूफान के कारण 65 किलोमीटर प्रति घंटे (40 मील प्रति घंटे) की रफ्तार से हवाएं चली, जिससे बृहस्पतिवार को भूस्खलन हुआ, नदियां उफनने लगी, शाखाएं टूट गईं और चारों-ओर मलबा बिखर गया। स्थानीय सरकारों से आंकड़े संकलित करने वाले जापानी सरकारी प्रसारणकर्ता एनएचके ने बताया कि शानशान तूफान के कारण अब तक कम से कम छह लोगों की मौत हो चुकी है, जिसमें से तीन लोग भूस्खलन में दबने के कारण मारे गए। उसने बताय कि तूफान के कारण 127 लोग घायल हुए है और एक व्यक्ति लापता हो गया। जापान की मौसम विज्ञान एजेंसी ने बताया कि तूफान के कारण शिजुओका और इसके आसपास के क्षेत्रों में भारी बारिश हुई। शिजुओका प्रांत के हमामात्सू और इजु शहरों के कुछ हिस्सों तथा टोक्यो के योकोहामा सहित अन्य क्षेत्रों में भूस्खलन की चेतावनी जारी की गई है। टोक्यो में हाल के दिनों में आमतौर पर बादल छाए रहे तथा कुछ स्थानों पर अचानक भारी बारिश हुई।

पाकिस्तान में सत्तारूढ़ पीएमएल-एन ने इमरान खान की पार्टी के साथ वार्ता का विरोध किया

इस्लामाबाद। विपक्षी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के साथ अप्रत्यक्ष वार्ता की खबरों के बीच, सत्तारूढ़ पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज ने अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी के साथ बातचीत का कड़ा विरोध किया है।योजना मंत्री अहसान इकबाल ने शनिवार को पीटीआई के साथ किसी भी तरह की बातचीत के लिए शर्त रखी कि पार्टी के संस्थापक और पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पिछले साल नौ मई को कथित तौर पर हिंसा भड़काने के लिए माफी मांगे। डॉन न्यूज की खबर के अनुसार, भ्रष्टाचार के एक मामले में 71 वर्षीय खान की गिरफ्तारी के बाद हुए विरोध प्रदर्शनों में सैन्य प्रतिष्ठानों सहित सार्वजनिक संपत्तियों पर हमले हुए। रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने भी पूर्व सत्तारूढ़ पार्टी के साथ बातचीत का विरोध करते हुए कहा कि वह ऐसी किसी भी वार्ता के पक्ष में नही है। इससे पहले, सत्तारूढ़ दलों ने खान द्वारा स्थापित पार्टी को कई बार शांति प्रस्ताव दिया था, लेकिन इसका कोई फायदा नही हुआ, क्योंकि खान ने कहा था कि वह केवल उन लोगों के साथ बातचीत करेंगे, जिनके पास देश में वास्तविक शक्ति है। सत्तारूढ़ पार्टी के नेताओं का यह बयान ऐसी खबरों के बीच आया है कि पीएमएल-एन ने पीटीआई के साथ बातचीत के लिए पख्तूनख्वा मिल्ली अवामी पार्टी (पीकेएमएपी) के अध्यक्ष महमूद खान अचकजई से कथित तौर पर संपर्क किया है। अचकजई को जेल में बंद खान ने सत्तारूढ़ दलों के साथ बातचीत करने के लिए नामित किया था। वह विपक्षी गठबंधन तहरीक-ए-तहफ्फुज-ए-आइन-ए-पाकिस्तान के भी प्रमुख है। खबर पर प्रतिक्रिया देते हुए आसिफ ने पत्रकारों को बताया कि वह पीकेएमएपी अध्यक्ष से बात करने के लिए नियुक्त टीम का हिस्सा नही है।जब उनसे पूछा गया कि क्या पीटीआई के साथ बातचीत की जानी चाहिए, तो पीएमएल-एन के दिग्गज नेता ने कहा, मैं बातचीत के पक्ष में नही हूं। इकबाल ने पीटीआई के साथ तब तक बातचीत का भी विरोध किया, जब तक खान 9 मई को हुई हिंसा के लिए माफी नही मांगते। हालांकि, सरकार के साथ बातचीत के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में पीटीआई नेता असद कैसर ने प्रस्ताव की गंभीरता पर सवाल उठाया और कहा कि सरकार बातचीत को लेकर अनिश्चित है और विरोधाभासी बयान दे रही है।

पोप फ्रांसिस दो सितंबर से चार देशों का दौरा करेंगे

वेटिकन सिटी। पोप फ्रांसिस दो से 13 सितंबर तक इंडोनेशिया, पापुआ न्यू गिनी, ईस्ट तिमोर और सिंगापुर की यात्रा करेंगे। चार देशों की उनकी यह यात्रा मूल रूप से 2020 के लिए निर्धारित थी, लेकिन कोविड-19 के कारण इसे स्थगित कर दिया गया था। मुस्लिम आबादी वाले, दुनिया के सबसे बड़े देश इंडोनेशिया में फ्रांसिस के ईसाई-मुस्लिम संबंधों को बेहतर बनाने पर जोर देने की संभावना है। पापुआ न्यू गिनी में, फ्रांसिस पर्यावरणीय खतरों के साथ ही वहां के अनुमानित एक करोड़ लोगों की विविधता की ओर भी इशारा करेंगे, जो लगभग 800 भाषाएं बोलते हैं, लेकिन जनजातीय संघर्षों से प्रभावित हैं। फ्रांसिस की सिंगापुर यात्रा उन्हें चीन तक पहुंचने का एक और अवसर प्रदान करेगी।

ट्रंप का अर्लिंग्टन नेशनल सेमेट्री जाना राजनीतिक स्टंट : हैरिस

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अर्लिंग्टन नेशनल सेमेट्री की अपनी हालिया यात्रा के दौरान इस पवित्र भूमि का अपमान किया। ट्रंप ने अर्लिंग्टन नेशनल सेमेट्री में चुनाव प्रचार गतिविधियों पर संघीय प्रतिबंध लागू होने के बावजूद वहां तस्वीरें खिंचवाईं और उन्हें प्रकाशित करवाया। हैरिस ने शनिवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में उन खबरों का हवाला दिया, जिनमें दावा किया गया है कि ट्रंप के चुनाव प्रचार अभियान दल से जुड़े लोगों ने कब्रिस्तान के एक कर्मचारी के साथ झगड़ा किया और अगफान युद्ध में जान गंवाने वाले सैनिकों के स्मारक से जुड़े नियमों के बारे में याद दिलाए जाने के बावजूद कब्र के पास ट्रंप की तस्वीरें लीं तथा वीडियो रिकॉर्ड किए। उन्होंने अपने पोस्ट में कहा, मैं स्पष्ट कर दूं कि पूर्व राष्ट्रपति ने राजनीतिक लाभ के लिए पवित्र भूमि का अपमान किया है। हैरिस ने कहा कि आर्लिंगटन एक पवित्र स्थान है, जहां लोग वीर अमेरिकी सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करने आते हैं, यह राजनीतिक स्टंट करने का स्थान नहीं है। उन्होंने कहा, वह (ट्रंप) एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो अपना फायदा देखने के अलावा कुछ भी समझने में असमर्थ हैं...।

उज्बेकिस्तान में भारतीय धुनों ने किया दर्शकों को मंत्रमुग्ध

भाषा। समरकंद (उज्बेकिस्तान)

मध्य एशिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक महोत्सव, 13वें अंतरराष्ट्रीय संगीत महोत्सव शर्क तारोनलाराई में गायिका शिबानी कश्यप के गानों पर यहां ऐतिहासिक रेगिस्तान स्क्वायर पर संगीत प्रेमियों ने बॉलीवुड की धुनों पर नृत्य किया। कश्यप संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के तत्वावधान में आयोजित महोत्सव के समापन समारोह में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली पहली भारतीय कलाकार हैं। शर्क तारोनालारी , का अर्थ है पूर्व का मधुर संगीत। यह एक अंतरराष्ट्रीय महोत्सव है, जो विश्व की समृद्ध संगीत परंपराओं को प्रदर्शित करने और उनका उत्सव मनाने के लिए समर्पित है।वर्ष 1997 में शुरुआत के बाद से यह महोत्सव काफी समृद्ध हो चुका है। इस महोत्सव का पहली बार जब आयोजन हुआ था, तो 31 देशों के कलाकारों ने भाग लिया था। साल 2019 तक इसमें शामिल होने वाले देशों की संख्या बढ़कर 75 हो गई, जिससे इस आयोजन का वैश्विक महत्व रेखांकित हुआ।महोत्सव के 13वें संस्करण में 70 से अधिक देशों के 300 से अधिक प्रतिभागियों ने प्रतिष्ठित रेगिस्तान स्क्वायर पर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। रेगिस्तान स्क्वायर अपनी अद्भुत वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शौकत मिर्जियोएव ने कहा कि शर्क तारोनलारी उत्सव सार और सही अर्थ में वैश्विक मधुर संगीतों का उत्सव बन गया है। समरकंद के तारों भरे आसमान के नीचे कितनी ही मनमोहक, सुंदर धुनें गूंजी हैं।

सिंगापुर में रहमान के गानों पर झूमे हजारों प्रशंसक

सिंगापुर। ऑस्कर पुरस्कार विजेता ए.आर. रहमान ने सिंगापुर में एक संगीत समारोह में उपस्थित करीब 25,000 दर्शकों के बीच, अपने हिट गाने प्रस्तुत किए। पूर्व राष्ट्रपति हलीमा याकूब और उनके पति की मौजूदगी में संगीतकार ने 1990 और 2000 के दशक के अपने बेहद लोकप्रिय तमिल और हिंदी गाने प्रस्तुत किए, जिनमें मुक्काला मुकाबला और तेरे बिना शामिल थे। तालियों की गड़गड़ाहट और सीटियों के बीच हुए स्वागत के बाद संगीतकार ने शनिवार के कार्यक्रम की शुरुआत 2008 की फिल्म स्लमडॉग मिलिनेयर के अपने सर्वश्रेष्ठ मूल गीत व ऑस्कर विजेता रचना जय हो से की। रविवार को द स्ट्रेट्स टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, मंच पर उनके साथ गायकों, नृत्य कलाकारों और संगीतकारों का 31 सदस्ईय दल था, जिसमें उनके बेटे ए.आर. अमीन भी शामिल थे। तीन घंटे तक चले कार्यक्रम के दौरान, भारतीय पार्श्व गायक मोहित चौहान और रक्षिता सुरेश जैसे गायकों ने भी मंच पर प्रस्तुति दी और रॉकस्टार (2011) से नादान परिंदे और पद्मप्पा (1999) से मिनसारा पूवे जैसे लोकप्रिय गीत गाकर लोगों का मनोरंजन किया।

बांग्लादेश में बाढ़ से जुड़ी घटनाओं में मृतकों की संख्या बढ़कर 59 हुई

ढाका। बांग्लादेश में आई विनाशकारी बाढ़ से देश के 11 जिलों में करीब 54 लाख लोग प्रभावित हुए हैं। वहीं, बाढ़ से जुड़ी घटनाओं में छह महिलाओं और 12 बच्चों सहित कम से कम 59 लोगों की मौत हो गई है। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। आपदा प्रबंधन एवं राहत मंत्रालय ने बाढ़ की स्थिति पर अद्यतन जानकारी देते हुए बताया कि सबसे अधिक मौतें कुमिल्ला और फेनी जिलों में हुई हैं, जो कि भारत के पूर्वोत्तर भाग में त्रिपुरा की सीमा से सटे हैं। मंत्रालय के मुताबिक दोनों जिलों में क्रमश: 14 और 23 लोगों की मौत हुई है।बांग्लादेश के डेल्टा क्षेत्र और ऊपरी भारतीय क्षेत्रों में भारी बारिश की वजह से आई बाढ़ से बांग्लादेश करीब दो सप्ताह से प्रभावित है।

सुकांत को हराकर सुहास एल वाई फाइनल में

● मनीषा व तुलसीमति के बीच होगा सेमीफाइनल

● भारत का एक और पदक पक्का

भाषा। पेरिस

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी सुहास यथिराज ने हमवतन सुकांत कदम को 21-17, 21-12 से हराकर पेरिस पैरालंपिक पुरुष एकल एसएल4 वर्ग के फाइनल में प्रवेश किया। इससे पहले खिलाड़ी मनीषा रामदास ने रविवार को यहां पैरा ओलंपिक खेलों में एसयू5 वर्ग में महिलाओं के एकल सेमीफाइनल में जगह बनाई जहां उनका सामना हमवतन तुलसीमति मुरुगेसन से होगा जिससे भारत का इस स्पर्धा में पदक पक्का हो गया। मनीषा के दाहिने हाथ में जन्म से ही विकार था। इस 19 वर्षीय खिलाड़ी को क्वार्टर फाइनल में जापान की मामिको टोयोडा को 21-13 21-16 से हराने में कोई परेशानी नहीं हुई। दूसरी वरीयता प्राप्त भारतीय खिलाड़ी ने अपनी गैरवरीय प्रतिद्वंद्वी को केवल 30 मिनट में बाहर का रास्ता दिखाया।अंतिम चार में मनीषा का मुकाबला शीर्ष वरीयता प्राप्त तुलसीमति से होगा, जिन्होंने शनिवार को ग्रुप ए में पुर्तगाल की बीट्रिज़ मोंटेइरो को हराया था। एसएल4 वर्ग में पुरुष एकल सेमीफाइनल में दो भारतीय खिलाड़ी सुहास यतिराज और सुकांत कदम आमने-सामने होंगे। इस तरह से इन दोनों ने बैडमिंटन में भारत का पहला पदक पक्का किया था। इससे पहले मनदीप कौर और पलक कोहली क्वार्टर फाइनल से आगे बढ़ने में नाकाम रही। एसएल3 वर्ग में खेल रही मनदीप नाइजीरिया की तीसरी वरीयता प्राप्त बोलाजी मरियम एनियोला के सामने किसी तरह की चुनौती पेश नहीं कर पाई और 23 मिनट में 8-21, 9-21 से मुकाबला हार गई।

मोदी ने पैरालंपिक खेलों के पदक विजेताओं की सराहना की

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पैरालंपिक खेलों मे भारत के पदक विजेताओ से रविवार को फोन पर बात की और मौजूदा प्रतियोगिता मे उनके प्रयासो की सराहना की। अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने जिन एथलीटों से बात की उनमे मोना अग्रवाल, प्रीति पाल, मनीष नरवाल और रुबिना फ्रांसिस शामिल थे।प्रधानमंत्री ने प्रत्एक पदक विजेता को बधाई दी और कहा कि उन्होंने अपने प्रदर्शन से देश को गौरवान्वित किया है। अधिकारियों ने कहा कि मोदी ने अवनि लेखरा को भी शुभकामनाएं दी और इन खेलो की अन्य स्पर्धाओ मे उनकी सफलता की कामना की। अवनि निशानेबाजी की एक स्पर्धा मे भाग लेने के कारण इस बातचीत मे शामिल नही हो पाईं।

राकेश ने शूटऑफ में केन को हराया, क्वार्टर फाइनल में

पेरिस। दुनिया के नंबर एक पैरा तीरंदाज राकेश कुमार ने अपने अंतिम तीर की गलती से वापसी करते हुए रविवार को यहां कंपाउंड पुरुष ओपन श्रेणी मे इंडोनेशिया के केन स्वगुमिलांग को शूटऑफ मे हराकर लगातार दूसरी दफा पैरालंपिक खेलों के क्वार्टर फाइनल मे प्रवेश किया। दुनिया के शीर्ष दो तीरंदाजो के बीच मुकाबले मे राकेश ने एक अंक की मामूली बढ़त बनाए रखी और उन्हे जीतने के लिए नौ अंक के शॉट की जरूरत थी। लेकिन वह आठ अंक की रिंग मे शॉट लगा बैठे। इससे दोनों तीरंदाज 15 तीर के बाद 144-144 से बराबरी पर पहुंच गए। तोक्यो पैरालंपिक मे क्वार्टर फाइनल से बाहर होने वाले 39 वर्षीय अनुभवी राकेश ने इसके बाद हुए शूट-ऑफ मे परफेक्ट 10 शॉट लगाने के लिए संयम बनाए रखा जबकि केन आठ अंक का शॉट ही लगा सके। क्वार्टर फाइनल मे राकेश का सामना कनाडा के काइल ट्रेम्बले और ऑस्ट्रिया के मायर के विजेता से होगा। जम्मू के तीरंदाज राकेश ने पिछले साल एशियाई पैरा चैंपियनशिप की व्यक्तिगत और मिश्रित टीम स्पर्धाओ मे स्वर्ण पदक जीता था। उन्होंने विश्व पैरा चैंपियनशिप मे मिश्रित टीम का स्वर्ण पदक भी जीता था। राकेश की रीढ़ की हड्डी मे चोट लगी थी और 2009 मे ठीक होने के बाद उन्हे पता चला कि उन्हे जीवन भर व्हीलचेयर पर रहना पड़ेगा। इससे वे अवसाद मे चले गए। अपने तीरंदाजी कोच कुलदीप वेदवान से मिलने के बाद उनके जीवन ने एक नया मोड़ लिया क्योंकि दोनों ने कटरा मे श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड मे एक साथ अपना कार्यकाल शुरू किया।

अमित, पायल ने 35 किमी पैदल चाल में मीट रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीते

बेंगलुरू। हरियाणा के अमित और रेलवे की पायल ने रविवार को यहां 63वीं राष्ट्रीय ओपन एथलेटिक्स चैंपियनशिप के अंतिम दिन पुरुषों और महिलाओं की 35 किमी पैदल चाल स्पर्धा में मीट रिकॉर्ड बेहतर करते हुए स्वर्ण पदक जीते। अमित ने दो घंटे 38 मिनट का समय निकाला और 2022 में राम बाबू द्वारा बनाए गए दो घंटे 2:39:05 के पिछले मीट रिकॉर्ड को तोड़ दिया। पायल ने 3:02:24 के समय के साथ 2022 में कायम अपने मीट रिकॉर्ड 3:04.48 में सुधार किया। पैदल चाल के अलावा रविवार को थ्रो से जुड़ी स्पर्धाओं में खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया।

परवीन कुमार एफ57 भाला फेंक में आठवें स्थान पर रहे

पेरिस। भारत के परवीन कुमार शनिवार को यहां पेरिस पैरालंपिक में पुरुषों की एफ57 भाला फेंक स्पर्धा में आठवें स्थान पर रहे। हरियाणा के 32 वर्षीय खिलाड़ी ने अपने चौथे थ्रो में 42.12 मीटर का सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। उज्बेकिस्तान के यॉर्किनबेक ओडिलोव ने 50.32 मीटर के प्रयास के साथ स्वर्ण पदक जबकि तुर्किए के मुहम्मत खलवंडी (49.97 मीटर) ने रजत पदक जीता। ब्राज़ील के सिसेरो वाल्डिरन लिंस नोबरे ने 49.46 मीटर के प्रयास के साथ कांस्य पदक हासिल किया।

पेरिस पैरालम्पिक की पदक तालिका

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
चीन	24	19	8	51
ब्रिटेन	17	10	7	34
ब्राजील	8	4	12	24
अमेरिका	6	10	5	21
ऑस्ट्रेलिया	6	3	7	16
नीदरलैंड	6	2	2	10
फ्रांस	5	7	10	22
उज्बेकिस्तान	5	3	3	11
इटली	3	4	8	15
भारत	1	1	3	5

नौकायन पीआर3 मिश्रित युगल स्कल्स में नारायण और अनीता की भारतीय जोड़ी आठवें स्थान पर रही

पेरिस। एशियाई पैरा खेलों की रजत पदक विजेता नारायण कोंगनापल्ले और अनीता की जोड़ी रविवार को यहां पेरिस पैरालंपिक की पीआर3 मिश्रित युगल स्कल्स नौकायन में आठवें स्थान पर रही। पैरालंपिक मे पदार्पण कर रही यह भारतीय जोड़ी अपने रेपेचेज स्पर्धा के फाइनल बी में आठ मिनट 16.96 सेकेंड के समय के साथ दूसरे स्थान पर रही। फाइनल बी स्पर्धा का आयोजन स्थान निर्धारित करने के लिए था जिसमें सातवें से 12वें पायदान के लिए मुकाबला था। अमेरिका के सैज हैपर और टॉड वोग्ट की जोड़ी ने सात मिनट 48.38 सेकेंड के समय के साथ फाइनल बी रेस मे शीर्ष स्थान हासिल किया, जबकि मेक्सिको के मिगुएल एंजेल नीटो कार्पियो और एंजेल्स ब्रिटानी गुटिरेज विएरा की जोड़ी (आठ मिनट 28.23 सेकेंड) भारतीय खिलाड़ियों से पीछे रही। नीता ने 18 साल की उम्र में एक सड़क दुर्घटना मे अपना पैर खो दिया था। उन्होंने इस साल की शुरुआत मे वर्ल्ड रोइंग एशियाई और ओसनियाई पैरालंपिक क्वालीफायर मे स्वर्ण पदक जीता था।

जीव संयुक्त तीसरे स्थान व रंधावा इंडिया लीजेंड्स में नौवें स्थान पर रहे

ग्रेटर नोएडा। टूर्नामेंट के मेजबान गोल्फर जीव मिल्खा सिंह अंत मे निराशाजनक ट्रिपिल बोगी के कारण रविवार को यहां शुरूआती इंडिया लीजेंड्स चैम्पियनशिप में संयुक्त तीसरे स्थान पर रहे। हालांकि लीजेंड्स टूर पर यह उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा जिसमें वह पिछले तीन साल से खेल रहे है। जीव ने अंतिम दिन जेपी ग्रीन्स गोल्फ कोर्स पर चार ओवर 76 का कार्ड खेला जिससे वह 5,00,000 डॉलर पुरस्कार राशि के टूर्नामेंट को जीतने की दावेदारी से बाहर हो गए। जीव के चूकने के बावजूद मेजबान देश के लिए यह भारतीय सरजमी पर हुए पहले लीजेंड्स टूर टूर्नामेंट मे अच्छा प्रदर्शन रहा।

कॅरियर की जीत में वासु का आतिशी शतक

लखनऊ। मैन ऑफद मैच डा.वासु 111 के आतिशी शतक से कॅरियर ने आठवीं नीलम टी 20 क्रिकेट टूर्नामेंट में स्मैश को 51 रन से हराकर पूरे अंक हासिल किए।मात्र छाया ग्राउंड पर कॅरियर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 6 विकेट पर 201 रन का स्कोर बनाया। डा.वासु ने 59 गेंदों पर 14 चौके व 4 छक्के से रिटायर्ड अउट होने से 111 रन बनाए। डा. वरुण ने 38 एवं डा.मुस्तफा व पुनीत वाधवानी ने 13.13 रन जोड़े। स्मैश से राजेश वर्माए नितेंद्र व गौरव को 1-1 विकेट मिले। जवाब में स्मैश लक्ष्य का पीछा करते हुए 150 रन ही बना सका। टीम से आशीष बिंद्रा 31, नरेंद्र जीत सिंह 37, मुकेश 27 व गोल्डी सिंह 20 ही दहाई के आंकड़े में रन बना सके। कॅरियर से कलीम ने 3ए पुनीत वाधवानी ने 2 जबकि अजय द्विवेदी व डा.जीतू ने 1-1 विकेट चटकाए।

बोगी-रहित दौर के बाद दीक्षा संयुक्त 31वें स्थान पर पहुंची

डबलिन (आयरलैंड)। भारत की दीक्षा डागर ने केपीएमजी महिला आयरिश ओपन के तीसरे दौर में बोगी-रहित चार-अंडर 69 का स्कोर बनाया, जिससे वह संयुक्त 55वें से संयुक्त 31वे पायदान पर पहुंचने में सफल रही। शुरुआती दो दौर में 72 और 74 का कार्ड खेलने वाली दीक्षा ने छठे और 12वें होल के बीच बिना किसी बोगी के चार बर्डी लगाई और तीन दौर के बाद उनका कुल स्कोर चार अंडर है। पेरिस ओलंपिक में मामूली प्रदर्शन और एआईजी महिला ओपन में कट से चूकने के बाद दीक्षा का आत्मविश्वास इस प्रदर्शन से बढ़ेगा।

गंभीर जहां भी जाते हैं प्रभाव छोड़ते हैं: रोड्स

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज क्रिकेटर जोंटी रोड्स का मानना है कि भारत के नए मुख्य कोच गौतम गंभीर किसी भी टीम के साथ तुरंत प्रभाव छोड़ने की क्षमता रखते है और उनके रहते हुए भारतीय टीम और मजबूत होगी। रोड्स ने से कहा, गंभीर जहां भी जाते है अपना प्रभाव छोड़ते है। हमने देखा है कि जब वह लखनऊ सुपर जायंट्स को छोड़कर कोलकाता नाइट राइडर्स से जुड़े तो उन्होंने किस तरह से तुरंत प्रभाव छोड़ा। उन्होंने कहा, वह बेहद व्यवहार कुशल व्यक्ति है और जानते है कि उन्हे क्या करना है। वह हमेशा अपने मन की सुनते है।

श्रीलंका के खिलाफ अजेय बढ़त बनाने से इंग्लैंड तीन विकेट दूर

लंदन। इंग्लैड ने रविवार को लॉर्ड्स में दूसरे टेस्ट में चौथे दिन चाय के विश्राम तक श्रीलंका की दूसरी पारी में सात विकेट चटका कर तीन मैचों की श्रृंखला में 2-0 की बढ़त लेने की ओर मजबूत कदम बढ़ा दिया है। जीत के लिए विश्व-रिकॉर्ड 483 रन का पीछा करते हुए श्रीलंका ने चाय के विश्राम तक सात विकेट पर 260 रन बनाए है और वह अब भी इंग्लैड से 223 रन दूर है।

रवि रंगोली शॉटपुट में पांचवें स्थान पर रहे

● रक्षिता ने महिलाओं की 1500 मीटर टी11 रेस में किया निराश

पेरिस। भारत के रवि रोंगाली पेरिस पैरालंपिक में एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं के तीसरे दिन पुरुषों की एफ40 गोला फेंक फाइनल में पांचवें स्थान पर रहे, जबकि रक्षिता राजू महिलाओं की 1500 मीटर टी11 दौड़ के शुरुआती दौर में ही बाहर हो गईं। पिछले साल चीन में एशियाई पैरा खेलों में रजत पदक जीतने वाले रवि ने 10.63 मीटर का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। उनका यह प्रदर्शन हालांकि उन्हें पांचवां स्थान ही दिला पाया। विश्व रिकॉर्ड धारक पुर्तगाल के मिगुएल मोंटेरो ने 11.21 मीटर के साथ स्वर्ण पदक जीता जबकि मंगोलिया के बटुल्गा त्सेगमिड (11.09 मीटर) ने कांस्य पदक जीता। मौजूदा एशियाई पैरा खेलों के चैंपियन इराक के गाह तनैयाश ने 11.03 मीटर के थ्रो के साथ कांस्य पदक जीता, जबकि तोक्यो पैरालंपिक के स्वर्ण पदक विजेता और मौजूदा विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियन रूस डेनिस गनेजडिलोव 10.80 मीटर के साथ चौथे स्थान पर रहे। वह पेरिस पैरालंपिक में तटस्थ एथलीट के रूप में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।एफ40 वर्ग छोटे कद वाले खिलाड़ियों के लिए है। इससे पहले तेईस साल की रक्षिता हीट तीन में पांच मिनट 29.92 सेकेंड के समय के साथ चार धावकों में आखिरी स्थान पर रही। तीनों हीट से प्रत्एक में शीर्ष दो स्थान पर रहने वाले खिलाड़ियों ने फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। चीन की शानशान हे चार मिनट 44.66 सेकेंड के समय के साथ रक्षिता की हीट में शीर्ष स्थान पर रही, जबकि दक्षिण अफ्रीका की लौजेन कोएट्जी ने सत्र के अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास चार मिनट 45.25 सेकेंड के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। टी11 श्रेणी दृष्टिबाधित एथलीटों के लिए है।

अवनि , सिद्धार्थ बाबू और श्रीहर्ष देवरड्डी फाइनल के लिए क्वालीफाई नहीं कर पाए

शेटराउ। भारतीय निशानेबाज अवनि लेखरा पैरालंपिक खेलों की मिश्रित 10 मीटर एयर राइफल प्रोन (एसएच1) स्पर्धा मे रविवार को यहां 11वें जबकि सिद्धार्थ बाबू 28वे स्थान पर रहे और इस तरह से फाइनल के लिए क्वालीफाई नही कर पाए। मिश्रित 10 मीटर एयर राइफल प्रोन (एसएच2) क्वालीफिकेशन मे श्रीहर्ष देवरड्डी रामकृष्ण 630.2 के कुल स्कोर के साथ 26वे स्थान पर रहे। अवनि 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग एसएच। मे ऐतिहासिक स्वर्ण पदक जीतने के अपने प्रदर्शन को नही दोहरा पाई और अच्छी शुरुआत के बावजूद 628.8 अंक के कुल स्कोर के साथ फाइनल मे जगह बनाने मे नाकाम रही। सिद्धार्थ ने 628.3 का स्कोर किया। अवनि के छह सीरीज मे अंको का क्रम 105.7, 106.0, 104.1, 106.0, 104.8, 106.2, जबकि सिद्धार्थ का स्कोर 104.6, 103.8, 105.7, 104.9, 103.6, 105.7 रहा। अवनि ने शुक्रवार को महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल (एसएच1) स्पर्धा मे स्वर्ण पदक जीता था। वह लगातार दो पैरालंपिक मे स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनी थी। उन्होंने विश्व रिकॉर्ड के साथ अपने खिताब का बचाव किया था। एसएच। मे खिलाड़ी बिना किसी मुश्किल के बंदूक पकड़ सकते है तथा खड़े होकर या बैठकर निशाना लगा सकते है। सीरीज। मे 44 वर्षीय देवरड्डी ने 105.2 अंक के बाद अगली सीरीज मे 105.7 अंक हासिल किए।

बोपन्ना-सुत्जियादी की जोड़ी मिश्रित युगल क्वार्टर फाइनल में

न्यूयॉर्क। भारत के रोहन बोपन्ना और उनकी इंडोनेशियाई जोड़ीदार अल्दिला सुत्जियादी ने पहला सेट गंवाने के बाद शानदार वापसी करके अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के मिश्रित युगल के क्वार्टर फाइनल मे प्रवेश किया। बोपन्ना और सुत्जियादी की आठवी वरीयता प्राप्त जोड़ी ने एक घंटे 13 मिनट तक चले दूसरे दौर के मैच मे ऑस्ट्रेलिया के जॉन पीयर्स और चेक गणराज्य की क्तेरीना सिनियाकोवा को 0-6, 7-6(5) 10-7 से हराया। बोपन्ना ने पीटीआई से कहा, कभी कभार यह इस बारे मे नही होता कि आप किस तरह शुरूआत करते हो बल्कि आप किस तरह समापन करते हो। उन्होंने भी शानदार शुरुआत की और हमने गति मे बदलाव करके रणनीति मे थोड़ा बदलाव किया जिससे भी मदद मिली। बोपन्ना और सुत्जियादी का अगला मुकाबला मैथ्यू एबडेन और बारबोरा क्रेजिकोवा की चौथी वरीयता प्राप्त जोड़ी से होगा।

सिनर और स्वियातेक अमेरिकी ओपन के चौथे दौर में

भाषा। न्यूयॉर्क

विश्व के नंबर एक पुरुष खिलाड़ी यानिक सिनर ने क्रिस ओ कोनेल पर आसान जीत के साथ अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के चौथे दौर में प्रवेश किया। नोवाक जोकोविच और कार्लोस अल्कराज के बाहर होने के बाद सिनर को खिताब का प्रबल दावेदार माना जा रहा है और उन्होंने अपनी ख्याति के अनुरूप प्रदर्शन करते हुए दो घंटे से भी कम समय में ओ कोनेल पर 6-।, 6-4, 6-2 से जीत हासिल की।अमेरिकी ओपन में 2021 के चैंपियन दानिल मेदवेदेव भी अगले दौर में पहुंचने में सफल रहे। रूस के इस खिलाड़ी ने फ्लेवियो कोबोली को 6-3, 6-4, 6-3 से हराया। उनका अगला मुकाबला नूनो बोर्जेस से होगा, जिन्होंने जैकब मेन्सिक को 6-7 (5), 6-।, 3-6, 7-6 (6), 6-0 से पराजित किया। महिला वर्ग में विश्व की नंबर एक खिलाड़ी और यहां 2022 की चैंपियन इगा स्वियातेक ने 25वीं

वरीयता प्राप्त अनास्तासिया पाव्लुचेनकोवा को 6-4, 6-2 से हराकर लगातार चौथे वर्ष अमेरिकी ओपन के चौथे दौर में प्रवेश किया। पांचवीं वरीयता प्राप्त जैस्मीन पाओलिनी को भी यूलिया पुतिनत्सेवा को 6-3, 6-4 से हराने में किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। उनका अगला मुकाबला 2023 की फ्रेंच ओपन फाइनलिस्ट कैरोलिना मुचोवा से होगा।महिला वर्ग में जेसिका पेगुला, ल्यूडमिला सैमसोनोवा, डायना श्नाइडर और 2018 की ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन कैरोलिन वोज्नियाकी भी आगे बढ़ने में सफल रही।जनवरी में ऑस्ट्रेलियाई ओपन में अपने करियर का पहला खिताब हासिल करने वाले सिनर सोमवार को चौथे दौर में अमेरिका के टॉमी पॉल से भिड़ेंगे। पॉल ने कनाडाई क्वालीफायर गेब्रियल डायलो को 6-7 (5), 6-3, 6-।, 7-6 (3) से हराया। सिनर ने अपने अगले प्रतिद्वंदी के बारे में कहा, उसने हाल में अपने खेल में काफी सुधार किया है और वह कड़ी चुनौती पेश करता है। विशेषकर अमेरिका में उसने अच्छा प्रदर्शन किया है। यह कड़ा मैच होगा। अल्कराज को हराने वाले वैन डे ज़ैंडस्चुल्प अपना विजय अभियान आगे नहीं बढ़ा पाए और उन्हें जैक ड्रेपर से 6-3, 6-4, 6-2 से हार का सामना करना पड़ा। ब्रिटेन के 22 वर्षीय खिलाड़ी ड्रेपर कभी भी चौथे दौर से आगे नहीं बढ़ पाए। उनका अगला मुकाबला गैरवरीयता प्राप्त टॉमस मचाक से होगा जिन्होंने डेविड गोफिन पर 6-3, 6-।, 6-2 से जीत हासिल की।

हॉकी इंडिया ने खोला खिलाड़ियों के लिए पिटारा

● पुरुष व महिला कोर ग्रुप के बेरोजगारों को देगा दो लाख रुपए का अनुदान

● लखनऊ में रविवार को आयोजित हुई हॉकी इंडिया की 14वीं कांग्रेस

● एजीएम के दौरान संस्थापक सदस्य डा. आनन्देश्वर पाण्डेय को उनके योगदान के लिए किया गया सम्मानित

● हॉकी इंडिया लीग की फिर से होगी शुरुआत, पहली बार महिलाओं की भी होगी लीग

लखनऊ। खिलाड़ी बिना किसी दिक्कत के अपने खेल कॅरियर पर फोकस कर सके इसके लिए हॉकी इंडिया ने बड़ी पहल की है। इसके तहत भारतीय पुरुष और महिला संभावित कोर ग्रुप के खिलाड़ियों को 2 लाख रुपए की आर्थिक सहायता दी जाएगी जिनको अभी नौकरी नहीं मिली है। यह फैसला रविवार को लखनऊ में आयोजित 14वीं हॉकी इंडिया कांग्रेस में लिया गया। इस बैठक में यह भी फैसला लिया गया कि हॉकी इंडिया फिर से हॉकी इंडिया लीग की शुरुआत करेगा जिसमें पहली बार महिलाओं की भी लीग होगी। यह फैसला हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की, महासचिव भोलानाथ, कोषाध्यक्ष शेखर जे मनोहरन, कार्यकारी निदेशक कमांडर आरके श्रीवास्तव सहित भारतीय हॉकी टीम की चयन समिति के चेयरमैन डॉ. आरपी सिंह की मौजूदगी में हुई एजीएम में लिया गया। इसी के साथ वार्षिक साधारण सभा एजीएम में हॉकी इंडिया के संस्थापक सदस्य डा.आनन्देश्वर पाण्डेय महासचिव उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघद्ध को खेल के प्रसार में उनके योगदान के लिए सम्मानित भी किया गया। लखनऊ में पहली बार हुई हॉकी इंडिया की एजीएम में 31 राज्य सदस्य इकाई और हॉकी इंडिया कार्यकारी बोर्ड के सदस्यों ने प्रतिभाग किया। इस बैठक के बाद पदाधिकारियों ने लिए गए फैसलों की जानकारी दी। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने कहा कि दो लाख रुपए का आर्थिक अनुदान उन खिलाड़ियों को मिलेगा जिन्हें अभी तक सरकारी विभागों या सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों में नौकरी नहीं मिली है। उन्होंने कहा कि अधिकांश हॉकी खिलाड़ियों को सार्वजनिक उपक्रमों और सरकारी विभागों द्वारा घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उनके प्रदर्शन के लिए नौकरी दी जा रही है। इस अवसर पर महासचिव भोलानाथ सिंह ने बताया कि हॉकी इंडिया फिर से अपनी हॉकी लीग की शुरुआत कर रहा है जिसमें पहली बार महिलाओं की लीग भी होगी। इसकी शुरुआत 28 दिसंबर 2024 से प्रस्तावित है। हमारी योजना है कि पुरुष वर्ग की लीग राउरकेला ओडिशा व महिला वर्ग की रांची झारखंड में होगी। लीग के लिए खिलाड़ियों की नीलामी 16.17 अक्टूबर 2024 को नई दिल्ली में होना प्रस्तावित है। अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने बताया कि लीग में पुरुषों में आठ टीमों को व महिलाओं में 6 टीमों को जगह मिलेगी जिनके बीच राउंड रॉबिन लीग के आधार पर मुकाबले होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि हॉकी की बेहतरी के लिए हम जोनल ग्रास रुट प्रोग्राम को बेहतर रुप प्रदान करेंगे। महासचिव भोलानाथ सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश का हॉकी में काफी उल्लेखनीय योगदान है और हमारी योजना निकट भविष्य में लखनऊ में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के टूर्नामेंट कराने की योजना है। हम यूपी में हॉकी को बढ़ावा देने के लिए काम करेंगे।

गांधी स्मारक स्कूल 5 स्वर्ण के साथ ओवरऑल चैंपियन

लखनऊ। गांधी स्मारक स्कूल ने प्रथम शिवानी जिला ओपन तैराकी चैंपियनशिप में 5 स्वर्ण पदकों के साथ ओवरऑल चैंपियनशिप जीत ली। लखनऊ एमेच्योर तैराकी एसोसिएशन के तत्वावधान में शिवानी पब्लिक स्कूल द्वारा भारतीय खेल प्राधिकरणए क्षेत्रीय केंद्र ;साई लखनऊ सरोजनीनगर लखनऊ के तरणताल में आयोजित चैंपियनशिप में सेठ एमआर जयपुरिया स्कूल व मावेल ट्रेनर्स ने 4-4 स्वर्ण के साथ संयुक्त रुप से दूसरा स्थान साझा किया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि शिवानी स्कूल्स के निदेशक मार्कण्डेय दुबे और विशिष्ट अतिथि अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता गोताखोर कीर्ति प्रकाश मिश्रा ने पदक विजेताओं को पुरस्कार वितरित किया। अंत में लखनऊ एमेच्योर तैराकी संघ के अध्यक्ष रविन कपूर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। आज हुई स्पर्धाओं में बालक ;ग्रुप 1द्ध 100 मी.फ्री स्टाइल में मावेल ट्रेनर्स के दीपक प्रजापति पहले, एम आर जयपुरिया के काविश दुआ दूसरे व सुदेव नय्यर तीसरे स्थान पर रहे। बालिका 1 100 मी.फ्री स्टाइल में एलपीएस की विधि गुप्ता पहले,सीएमएस अर्शफाबाद की वान्या रस्तोगी दूसरे स्थान पर रही। बालक फ्री स्टाइल ग्रुप 2 100 मी् में एलेन हाउस के अंशुल मौर्या पहलेए एमआर जयपुरिया स्कूल के पार्थ अरोड़ा दूसरे व केवि सीआरपीएफ के अर्घोदीप विश्वास तीसरे स्थान पर रहे।

क्विक न्यूज

एशियाई संघ ने आईबीए के पक्ष में मतदान किया, मुक्केबाजी का भविष्य अधर में लटका

अल ऐन (यूएई)। मुक्केबाजी का ओलंपिक मे भविष्य पहले ही अधर मे लटका है और अब इस खेल की एशियाई संचालन संस्था ने निलंबित अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजी संघ (आईबीए) के पक्ष में मतदान करके उसकी मुश्किलें बढ़ा दी है। गुप्त मतदान के जरिए किए गए मतदान में 21 देशों ने आईबीए के साथ बने रहने के पक्ष मे जबकि 14 देशो ने इस खेल के संचालन के लिए गठित की गई नई संस्था वर्ल्ड बॉक्सिंग में शामिल होने के पक्ष में मतदान किया। भारत के अलावा जिन अन्य देशों ने मतदान में भाग लिया उनमें बहरीन, भूटान, ब्रुनेई, कंबोडिया, चीन, चीनी ताइपे, तिमोर लेस्ते, हांगकांग, इंडोनेशिया, ईरान, इराक, जापान, जॉर्डन, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, लाओस, लेबनान, मकाऊ, मलेशिया, म्यांमार, नेपाल, पाकिस्तान, फिलिस्तीन, फिलीपीस, कतर, सऊदी अरब, सिंगापुर, श्रीलंका, सीरिया, ताजिकिस्तान, थाईलैंड, तुर्कमेनिस्तान, संयुक्त अरब अमीरात, उज्बेकिस्तान, वियतनाम और यमन शामिल थे। भारत ने पर्यवेक्षक के रूप में भाग लिया।

पुणेरी पलटन टीटी ने जयपुर पैट्रियट्स को हराया

चेन्नई। पुनेरी पलटन टेबल टेनिस ने रविवार को यहां यूटीटी 2024 के रोमांचक मुकाबले में पहली बार जयपुर पैट्रियट्स पर 9-6 से जीत के साथ नॉकआउट में जगह बनाने की दौड़ में मजबूत वापसी की। पुणेरी पलटन टेबल टेनिस इस मुकाबले से पहले आठ टीमो की तालिका में सबसे नीचे थी लेकिन टीम जयपुर पैट्रियट्स पर जीत दर्ज करने के बाद 28 अंक के साथ चौथे पायदान पर पहुंच गई। लीग चरण के अंत में शीर्ष चार टीमें प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई करेंगी। इस मुकाबले के बाद जयपुर पैट्रियट्स भी एक पायदान ऊपर चढ़कर 25 अंको के साथ पांचवे स्थान पर पहुंच गया।

लिटन का शतक, बांग्लादेश ने पाक टेस्ट में की वापसी

रावलपिंडी। लिटन दास के शतक और मेहदी हसन मिराज के अर्धशतक से बांग्लादेश ने रविवार को यहां दूसरे टेस्ट में तेज गेंदबाज खुर्म शहजाद के पहली बार पांच विकेट के प्रदर्शन बावजूद पाकिस्तान के खिलाफ वापसी की। शहजाद (90 रन देकर छह विकेट) ने पहली बार पांच विकेट झटकने का कारनामा किया। लिटन ने 13 चौके और दो छक्कों की मदद से 138 रन की आक्रामक पारी खेली जबकि मेहदी ने 78 रन बनाए। इससे बांग्लादेश ने तीसरे दिन पहले घंटे में शहजाद के शुरुआती झटको के बाद छह विकेट पर 26 रन के स्कोर से उबरते हुए 262 रन बनाए। बाग्लादेश ने पिछले हफ्ते पाकिस्तान पर पहले टेस्ट में 10 विकेट से हराया था। दूसरी पारी में पाकिस्तान ने स्टंप तक दो विकेट गंवाकर नौ रन बना लिए थे और उसकी कुल बढ़त 21 रन की हो गई।

श्रीलंका से इंग्लैंड श्रृंखला जीतने के करीब

लंदन। श्रीलंका के बल्लेबाजो ने दूसरे टेस्ट मैच के चौथे दिन रविवार को यहां अपनी दूसरी पारी मे धैर्य और जज्बा दिखाया लेकिन इंग्लैड ने लंच के विश्राम से पहले सलामी बल्लेबाज दिमुथ करुणारत्ने की अर्धशतकीय पारी को खत्म कर मैच पर अपना दबदबा बनाए रखा। जीत के लिए रिकॉर्ड 483 रन का पीछा करते हुए श्रीलंका ने लंच के विश्राम तक चार विकेट पर 136 रन बना लिए। उसे जीत के लिए अब भी 347 रन की जरूरत है। श्रीलंका ने दिन की शुरुआत दो विकेट पर 53 रन पर करने के बाद रात्रि प्रहरी प्रभात जयसूर्या (चार) का विकेट जल्दी ही गवां दिया। वह क्रिस वोक्स की गेंद पर दूसरे स्लिप मे लपके गए। करुणारत्ने और एंजेलो मैथ्यूज ने इसके बाद 55 रन की साझेदारी कर पारी को संवारा। करुणारत्ने टेस्ट मे 54वी बार अर्धशतक लगाने के बाद ओली स्टोन की उछाल लेती गेंद को संभालने मे विफल रहे और गेंद उनके दस्तानो से टकराकर विकेटकीपर जैमी स्मिथ के हाथो मे चली गई। लंच के विश्राम के समय मैथ्यूज 34 रन पर बल्लेबाजी कर रहे थे जबकि दिनेश चांदीमल 15 रन बनाकर उनका साथ दे रहे थे। इंग्लैड ने पिछले सप्ताह मैनचेस्टर मे श्रृंखला का पहला मैच पांच विकेट से जीता था। श्रृंखला का तीसरा मैच शुक्रवार से द ओवल मैदान पर खेला जाएगा।

नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स ने साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स को हराया

नई दिल्ली। यश डबास और वैभव रावल ने अर्धशतक जमाए जबकि सिद्धार्थ सोलंकी ने पांच विकेट लेकर नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स को रविवार को यहां साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स पर 61 रन से जीत दिलाई। इस जीत के बाद नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स प्लेऑफ की दौड़ मे बनी हुई है जबकि साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स ने पहले ही अंतिम चार मे अपनी जगह पक्की कर ली है।डबास की 40 गेंदो में 68 रन और रावल की 34 गेंदो मे नाबाद 56 रन की बदौलत उत्तरी दिल्ली ने 20 ओवर मे चार विकेट पर 209 रन बनाए। इसके बाद सोलंकी ने 19 रन देकर 5 विकेट हासिल किए नॉर्थ दिल्ली ने साउथ दिल्ली को 148 रन पर आउट कर दिया। नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स ने इसके साथ ही एक दिन पहले इस टीम से मिली 112 रन की हार का बदला भी चुक्ता कर लिया।

रहाणे का शतक, लीसेस्टरशर की उम्मीद कायम

कार्डिफ। भारत के अनुभवी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे के 40वे प्रथम श्रेणी शतक (192 गेंद में 102 रन) की बदौलत लीसेस्टरशर रविवार को यहां काउंटी चैम्पियनशिप डिवीजन दो के मैच में ग्लेमोर्गन के खिलाफ अंतिम दिन हार से बचने के लिए कड़ा संघर्ष कर रही है। रहाणे ने अपनी पारी के दौरान 13 चौके और एक छक्का लगाया। उन्होंने साथ ही आस्ट्रेलिया के पीटर हैंड्सकॉम्ब के साथ चौथे विकेट के लिए 183 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी निभाई। हैंड्सकॉम्ब चार दिवसीय मैच के अंतिम दिन लंच तक 94 रन पर बल्लेबाजी कर रहे है। रहाणे और हैंड्सकॉम्ब की लीसेस्टरशर की अंतरराष्ट्रीय जोड़ी मैच बचाने के उद्देश्य से डटी रही। इससे पहले ग्लेमोर्गन के कोलिन इंग्राम ने नाबाद 257 रन की करियर की सर्वश्रेष्ठ पारी खेली जिससे उसने पहली पारी नौ विकेट पर 550 रन के स्कोर पर घोषित की। लंच तक लीसेस्टरशर ने चार विकेट पर 271 रन बना लिए थे। पहली पारी में लीसेस्टरशर की टीम 251 रन पर सिमट गई थी।

मंधाना और पांच अन्य डब्ल्यूबीबीएल का हिस्सा बनेंगी

मेलबर्न। उप-कप्तान स्मृति मंधाना सहित छह भारतीय क्रिकेटर अलग-अलग टीमो द्वारा चुने जाने के बाद 27 अक्टूबर से शुरू होने वाली आगामी महिला बिग बैश लीग (डब्ल्यूबीबीएल) का हिस्सा होंगी। एडिलेड स्ट्राइकर्स ने पहले ही मंधाना के साथ अनुबंध कर लिया था। दयालन हेमलता पर्थ स्कॉर्चर्स की टीम से जुड़ेंगी। शीर्ष क्रम की यह बल्लेबाज पहली बार इस लीग का हिस्सा बनेगी। विकेटकीपर-बल्लेबाज यास्तिका भाटिया भी डब्ल्यूबीबीएल में पदार्पण करेंगी। वह मेलबर्न स्टार्स टीम के साथ जुड़ेंगी। भारतीय हरफनमौला दीप्ति शर्मा भी इस टीम का हिस्सा है। तेज गेंदबाजी के साथ बल्ले से योगदान देने के लिए जानी जाने वाली शिखा पांडे को ब्रिसबेन हीट ने चुना है। वह पूरे सत्र के लिए उपलब्ध रहेंगी क्योंकि वह भारत की टी20 विश्व कप टीम का हिस्सा नहीं है।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाषः 011-40110455 से प्रकाशित तथा द इंडियन एक्सप्रेस लिमिटेड,ए-8, सेक्टर-7, जिला-गौतमबुद्ध नगर, नोएडा (उ.प्र.)-201301, दूरभाष-01202470700 से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5 ,बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-69342500।